SEERAT■E■RASOOL■E■AKRAM

Educational Use Only

फ़ेहरिस्त

नं० शुमार	उन्वानात	सफ़्हा
1.	मुक़द्दमा……मौलाना सय्यद राबेअ़ हसनी नदवी	9
2.	अ़र्ज़े हाल	15
3.	मुक़द्दमा तब्ए दोम	20
4.	वलादत बासआ़दत	22
5.	अय्यामे रज़ाअ़त	23
6.	वालिदा और दादा की वफ़ात और चचा अबू तालिब की किफ़ालत	24
7.	हर्बुल फ़ुज्जार और हलफ़ुल फ़ुजूल में शिर्कत	26
8.	हज़रत ख़दीजा रज़ि० से रिश्तए इज़्दिवाज	28
9.	कअ़बा की तअ़मीरे नौ और एक बड़े फ़ित्ने का सद्दे बाब	29
10.	आसमानी तरबियत	31
11.	इंसानियत की सुब्ह सादिक़ और बेअ़सत मुबारक	32
12.	इस्लाम की तबलीग़ व दावत	35
13.	तौहीद की बाज़ गश्त और मुश्रिकीन की ईज़ा रसानी	39
14.	उत्बा का आंहज़रत सल्ल० से मुकालमा	44
15.	सरदाराने कुरैश की आंहज़रत सल्ल० से बातचीत	47
16.	कुरैश के हाथों मुसलमानों पर मज़ालिम	53
17.	हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साथ कुफ़्फ़ारे कुरैश का मुआमला	59
18.	मुसलमानों की हब्शा की तरफ़ हिज्रत और नजाशी के सामने हज़रत जअ़फ़र रज़ि० की तक़रीर	60

19. हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 का क़बूले इस्लाम.....63
20. हज़रत उमर रज़ि0 का क़बूले इस्लाम.....64
21. हज़रत उस्मान रज़ि0 इब्ने मज़ऊन की हब्शा से वापसी और मुश्रिकीने मक्का की ईज़ा रसानी.....69
22. क़ुरैश की जानिब से बनी हाशिम का मुहासरा और मुक़ातआ़....71
23. अहद नामा की तंसीख़ और मुक़ातआ़ का ख़ातमा.....73
24. हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के साथ कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का मुआमला.....74
25. अबू तालिब और हज़रत ख़दीजा रज़ि0 की वफ़ात.....76
26. ताइफ़ का सफ़र और सख़्त अज़ीयतों का सामना.....77
27. क़बाइले अरब को दावते इस्लाम.....82
28. बैअ़ते उक़्बा और मदीना में इशाअते इस्लाम.....90
29. बैअ़ते उक़्बा सानिया.....95
30. हिज्रत करने की इजाज़त.....100
31. रसूलुल्लाह सल्ल0 के ख़िलाफ़ क़ुरैश की साज़िश और नाकामी और आप सल्ल0 की हिज्रते मदीना.....103
32. सुराक़ा का तआ़क़ुब.....110
33. मुबारक शख़्स.....111
34. नबीये अकरम सल्ल0 का मदीना में इस्तिक़बाल.....113
35. मस्जिदे क़ुबा की तअ़मीर.....114
36. मदीना का पहला जुमुआ़.....116
37. मदीना में हज़रत अय्यूब अंसारी रज़ि0 के घर में क़्याम..119
38. मस्जिदे नबवी सल्ल0 और मकानात की तअ़मीर.....121
39. अज़ान की मशरूइयत.....124

Maktab-e-Ashraf

40. मुहाजिरीन और अंसार में भाईचारा का मुआहदा.....125
41. सुफ़्फ़ए नबवी सल्ल0.....130
42. ग़ज़वए बद्र.....132
43. बद्र की तरफ़ कूच और लशकरे इस्लाम व लशकरे कुफ़्फ़ार में ज़बरदस्त तफ़ावुत.....135
44. जंग की तैयारी.....137
45. आग़ाज़े जंग.....142
46. नामवर सरदाराने कुफ़्फ़ार का क़त्ल.....145
47. फ़त्हे मुबीन.....148
48. असीराने जंग के साथ सुलूक.....149
49. हज़रत अबुल आ़स रज़ि0 का ईमान लाना.....152
50. उमैर बिन वहब रज़ि0 का क़बूले इस्लाम.....153
51. हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 का अक़्द.....155
52. जाहिली हमीयत और जज़्बए इंतिक़ामे बद्र.....157
53. उहुद के दामन में.....160
54. लड़ाई का आग़ाज़.....163
55. मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग का पांसा कैसे पलटा.....165
56. मुहब्बत व जांनिसारी के नमूने और मुसलमानों का दोबारा जमाव.168
57. चंद शुहदा का हाल.....175
58. ख़ातूनाने इस्लाम की ख़िदमत गुज़ारी व जां निसारी.....180
59. सरीयए हम्राउल असद.....182
60. अज़्ले वक़ारा और बीरे मऊना के वाक़िआत और ख़ुबैब रज़ि0 की जवांमर्दी.....184

61. बनू नज़ीर की जिला वतनी.....189
62. ग़ज़वए ख़ंदक़.....192
63. मुहासरा की शिद्दत और सहाबए किराम रज़ि0 की अज़ीमत....197
64. हज़रत सफ़ीया रज़ि0 का दिलेराना क़दम.....202
65. नुस्रते ग़ैबी और मुहासरा का ख़ातमा.....203
66. मां अपने जिगर के टुक्ड़े को जिहाद और शहादत पर आमादा करती है.....205
67. ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअ़.....206
68. ग़ज़वए बनू क़ुरैज़ा.....207
69. सरीयए नज्द और हज़रत समामा रज़ि0 का क़बूले इस्लाम..211
70. सुलह हुदैबिया.....214
71. बैअ़ते रिज़वान.....220
72. मुआहदा व सुलह नामा.....221
73. मुसलमानों की आज़माइश.....223
74. बसूरत नाकामी बहक़ीक़त कामियाबी.....226
75. सलातीन व उमराअ़ को दावते इस्लाम.....232
76. नामए मुबारक बनाम नजाशी शाहे हब्शा.....233
77. बनाम शाहे बहरैन.....235
78. बनाम शाहे उम्मान.....236
79. बनाम हाकिमे दमिश्क़ व हाकिमे यमामा.....241
80. बनाम शाहे इस्कंदरिया.....242
81. बनाम हिरक़्ल शाहे क़ुस्तुन्तुनिया.....244
82. बनाम किस्रा शाह ईरान.....248

MaktabeAshraf

83. ग़ज़वए ख़ैबर.....251
84. ग़ज़वए मौता.....262
85. फ़त्हे मक्का.....265
86. मुआ़फ़ी की सदाए आ़म.....270
87. नियाज़मंदाना न कि फ़ातिहाना दाख़िला.....272
88. मुआफ़ी और रहम का दिन है, ख़ूरेज़ी का नहीं.....273
89. मआ़मूली झड़पें.....275
90. हरम से बुतों की सफ़ाई.....275
91. ग़ज़वए हुनैन.....282
92. ग़ज़वए तबूक.....295
93. वफ़्दे दौस.....314
94. वफ़्दे सक़ीफ़.....316
95. वफ़्द अब्दुल क़ैस.....323
96. वफ़्द बनू हनीफ़ा.....326
97. क़बीलए तैय का वफ़्द.....326
98. वफ़्दे अ़ज़्द.....327
99. वफ़्दे हम्दान.....330
100. वफ़्दे नजीब.....332
101. वफ़्दे बनी सआ़द हज़ीम.....335
102. वफ़्दे बनी असद.....336
103. वफ़्दे बहराअ़.....337
104. वफ़्दे हौलान.....338
105. वफ़्दे मख़ारिब.....340

106. वफ़्दे बनी अ़बस.....341
107. वफ़्दे ग़ामिद.....342
108. वफ़्दे बनी फ़ुज़ारा.....342
109. वफ़्दे सुलामान.....344
110. वफ़्दे नजरान.....344
111. वफ़्दे नख़अ़.....354
112. हज्जतुल वदाअ़.....357
113. वफ़ात.....379
114. तज्हीज़ व तक्फ़ीन.....391

Maktab-e-Ashraf

मुक़द्दमा

अज़ः- हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी मद्दज़िल्लुहुल आली, नाज़िम दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमनिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَىٰ رَسُوْلِهٖ مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ،

रसूले करीम ख़ातिमुल मुर्सलीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 की ख़ुसूसियात को कहीं क़ुर्आन मजीद में "هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْأُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيَاتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلَالٍ مُّبِيْنٍ"[1] फ़रमाया गया "कि वह अल्लाह तआला की किताब यअ़नी उसकी फ़रमाई हुई बातों की तअ़लीम द्देते हैं, और दानाई की बातें बताते हैं, और! अख़्लाक़ की दुरुस्तगी सिखाते हैं" और कहीं फ़रमाया गया, "وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ"[2] "कि आप सल्ल0 अज़ीम अख़्लाक़ व किर्दार के हामिल हैं।" और कहीं फ़रमाया गया "لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا"[3] "कि तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल में अच्छा नमूना है यह उसके लिये है जो अल्लाह से उम्मीद करता हो, और आख़िरत के दिन

(1) सूरए जुमुआ़, आयत-2

(2) सूरए कलम, आयत-4

(3) सूरए अहज़ाब, आयत-21

Maktaba-e-Ashraf

से उम्मीद रखता हो, और जिसने अल्लाह को बहुत याद किया हो।" अलग़र्ज़ यह कि मोमिन के लिये अल्लाह के आख़िरी और बरगुज़ीदा रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 रौशनी का मीनार हैं, अपनी ज़िंदगी के लिये उनसे रौशनी हासिल करना, उनके नक़्शे क़दम पर चलना, और ज़िंदगी के किर्दार व अख़्लाक़ व सिफ़ात में उनको अपने लिये नमूना बनाना हर मुसलमान का फ़र्ज़ है, इसी में सलाह व फ़लाह है, और यही मर्दे मोमिन का वतीरा व तरीक़ा है, और जब और जिसने इस वतीरा और तरीक़ा से इंहिराफ़ किया या तग़ाफ़ुल बरता, वह सही रास्ता से दूर हुआ और उसकी ज़िंदगी जादए मुस्तक़ीम से हट गई।

हुज़ूर सल्ल0 के उस्वा को समझने और उनकी पैरवी करने के लिये दो अहम शर्तें हैं, एक तो यह कि आप सल्ल0 से वफ़ादाराना और मुहिब्बाना तअ़ल्लुक़ हो, और वह ऐसा हो कि उस ज़ाते अज़ीम पर सब कुछ कुर्बान किया जा सकता हो, सिर्फ़ ज़बान से मुहब्बत का इज़हार न हो, बल्कि वह हक़ीक़त हो, और उसमें इख़्लास हो, जैसा कि सहाबए किराम को था, कि इस्लाम की वफ़ादारी की सज़ा में क़त्ल किये जा रहे हैं, और उनसे पूछने वाला पूछता है कि बताओ कि क्या तुम इसको क़बूल करोगे कि तुम्हारी जगह इस वक़्त तुम्हारे नबी मुहम्मद सल्ल0 होते और तुम बच जाते? वह जवाब देते हैं कि मैं तो इसके लिये भी तैयार नहीं कि आप सल्ल0 के क़दम मुबारक में कांटा चुभे और मैं उसके

इवज़ में मौत से बच जाऊं। हज़रत हस्सान बिन साबित अंसारी रज़ि0 अपने एक मदहिया शेअ़र में कहते हैं-

فَإِنَّ أَبِيْ وَوَالِدَهُ وَعِرْضِيْ لِعِرْضِ مُحَمَّدٍ مِنْكُمْ وِقَاءُ

(कि मेरे बाप और दादा और खुद मेरी इ़ज़्ज़त व आबरू सब हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की इ़ज़्ज़त की हिफ़ाज़त के लिये निशाना और ढाल है)

बल्कि एक और जंग से वापस होने वालों से एक ख़ातून पूछती हैं कि हमारे हुजूर सल्ल0 ख़ैरियत से हैं? जवाब देने वाला कहता है, मगर तुम्हारे वालिद शहीद हो गए, वह पूछती हैं कि हमारे हुजूर सल्ल0 ख़ैरियत से हैं? वह जवाब देते हैं कि तुम्हारे शौहर भी काम आ गए, वह पूछती हैं कि यह बताओ कि हुजूर सल्ल0 ख़ैरियत से हैं? वह कहते हैं कि हां आप सल्ल0 ख़ैरियत से हैं, वह कहती हैं "हुजूर सल्ल0 रहें तो हर मुसीबत कमतर है।" अगर मोमिन में ऐसी या इसी से क़रीब तर मुहब्बत न हो तो हुजूर सल्ल0 की सच्ची और मुख़्लिसाना पैरवी, ताबेदारी और वफ़ादारी नहीं हो सकती।

दूसरी शर्त यह है कि हुजूर सल्ल0 की सीरते तय्यिबा यअ़नी अख़्लाक़ व सिफ़ात, बंदगाने खुदा से आप सल्ल0 की हमदर्दी, आप सल्ल0 का हुस्ने मुआमला, अपने से बुरा चाहने वालों के साथ आप सल्ल0 का हुस्ने सुलूक, रज़ाए इलाही की आप सल्ल0 की तलब, आख़िरत की फ़िक्र, हर एक के लिये हमदर्दी और ख़ैर तलबी, दुन्या व दीन में

उसकी कामियाबी की फ़िक्र, उसके सलाह व फ़लाह का ख़्याल, यह सब जानने की कोशिश की जाए, और मअ़लूम किया जाए कि आप सल्ल0 इंसानों के साथ अख़्लाक़ व मुहब्बत का क्या बरताव करते थे, अपने अह्ल व अयाल के साथ कैसी शफ़्क़त करते थे, ग़ैरों और दूसरों के साथ कैसी मुलातफ़त व हमदर्दी करते थे, लोगों की दीनी इस्लाह और उनमें ख़ुदा तलबी का जज़्बा किस तरह पैदा करने की कोशिश करते थे, आप सल्ल0 परवरदिगार की रज़ा के हुसूल और उसकी नाराज़गी के कामों से बचने के लिये कैसी तरबियत व तलक़ीन करते थे।

यह दो शर्तें हैं जिनके ज़रीआ़ एक मोमिन को अपनी ज़िंदगी संवारना, और अपने ईमान को सच्चा बनाना होता है, यह शर्तें पूरी हों तो यह मक़्सद हासिल होता है, और यह शर्तें पूरी न हों तो मक़्सद हासिल नहीं होता, हुज़ूर सल्ल0 की सीरते तय्यिबा मअ़लूम करके उसकी पैरवी न करना और यह दावा करना कि हम हुज़ूर सल्ल0 के ताबेदार हैं जोड़ नहीं खाता।

बअ़ज़ वक़्त आदमी यह दावा करता है कि उसको हुज़ूर सल्ल0 से बड़ी मुहब्बत है, लेकिन आप सल्ल0 की सीरते तय्यिबा को जानने की कोई फ़िक्र नहीं करता, और इस सीरते तय्यिबा के मुतालआ़ से हासिल होने वाले अख़्लाक़ व सिफ़ात को अपनाने की कोशिश नहीं करता, ऐसे आदमी का दावा कैसे सच्चा माना जाएगा।

लेकिन हुज़ूर सल्ल0 की सीरते तय्यिबा की बातें हर शख़्स को किताबों में तलाश करना मुश्किल होता है, इसके लिये उलमा की तक़रीरें और हुज़ूर सल्ल0 की सीरत पर लिखी गई किताबें सबसे बड़ा ज़रीआ़ हैं, हर मोमिन को इनकी तरफ़ रुजूअ़ करना चाहिये, लेकिन बअ़ज़ किताबें बड़ी आलिमाना हैं, बअ़ज़ बहुत सी ऐसी तफ़सीलात पर मुशतमल हैं जिनको जानने के लिये वक़्त चाहिये, इसलिये हर कस व ना कस के लिये आसानी नहीं पैदा होती है।

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन हसनी नदवी रह0 ने तबलीग़ी मराकिज़ के हफ़्तावारी इज्तिमाअ़ में पढ़ने के लिये सीरते तय्यिबा के वाक़िआत, अख़्लाक़ व सिफ़ात, दावती व इस्लाही तर्ज़ पर मुशतमल हिस्सों को आप सल्ल0 की सीरते तय्यिबा की बड़ी किताबों से निकाल कर एक मुस्तक़िल किताब तरतीब दी थी जो तबलीग़ी मराकिज़ में क़लमी मसौवदा से पढ़ी जाती थी, इससे हाज़िरीन को बहुत फ़ाएदा होता था, सीरते तय्यिबा के यह वाक़िआत ज़िंदगियों को सुधारने, उनमें ईमानी जज़्बा पैदा करने का बड़ा काम देते थे, यह सिलसिला चलता रहा, हत्ता कि अज़ीज़ी सय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी सल्लमहू ने जो हज़रत मौलाना के मुसव्वदात से वाक़िफ़ थे, वह मुसव्वदा निकाला, और उसको क़ाबिले तबाअ़त व इशाअ़त बनाने का ज़रूरी काम अंजाम दिया, अब यह किताब प्रेस से जल्द बाहर आने वाली है, किताब की ज़ख़ामत न ज़्यादा है न कम है,

वह न महज़ फ़ज़ाइल व मोजिज़ात की हामिल है, और न ही तारीख़ी वाक़िआत का दफ़्तर है, वह ईमानी तरबियत, अख़्लाक़ी दुरुस्तगी, खुदा तलबी, इंसानी हमदर्दी, खुदा की बंदगी और मख़्लूक़े खुदा की ख़िदमत के वाक़िआत पर मुशतमल है, और इस तरह वह एक मोमिन के किर्दार को संवारने और बानाने वाली है, ज़रूरत है कि इसको बहुत आम किया जाए, ताकि वसीअ़ फ़ाएदा हो। अज़ीज़ी मौलवी बिलाल हसनी सल्लमहू, ने मुझको भी इस सआ़दत में शरीक करने के लिये दीबाचा की फ़रमाइश की, जो मैं अपने कम क़ीमत अलफ़ाज़ और कमतर हैसियत की इबारत में इस शर्फ़ में शिर्कत की ग़र्ज़ से लिख रहा हूं, अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाए। (आमीन)

मुहम्मद राबेअ़ हसनी नदवी

नदवतुल उलमा लखनऊ।

11/ मुहर्रमुल हराम 1418 हि०

अ़र्ज़े हाल

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ، مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ، أَمَّا بَعْدُ:

राक़िम आसिम खुदा के सामने सर बसुजूद है और उसकी ज़बान हम्द व सना बयान करने से क़ासिर है कि आज सीरते नबवी सल्ल0 पर ऐसी किताब पेश करने की सआ़दत हासिल हो रही है जो तक़रीबन पचास साल क़ब्ल अल्लाह के एक मुख़्लिस व महबूब बंदे के हाथों मुरत्तब हुई थी और एक अर्सा तक दावती इज्तिमाआत में पढ़ के सुनाई जाती रही, लेकिन ज़ेवरे तब्अ़ से आरास्ता नहीं हो सकी।

दस साल क़ब्ल हमारे शैख़ व मुर्शिद हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 महफूज़ ख़ानदानी मख़्तूतात व नवादिरात मुलाहज़ा फ़रमा रहे थे कि अचानक यह किताब सामने आई जो मुसव्वदा की शक्ल में थी, इस सिलसिला में हज़रते वाला रह0 ने फ़रमाया कि जब हमारा क़्याम मस्जिद मर्कज़े तबलीग़ व दावत लखनऊ में था उस वक़्त यह एहसास पैदा हुआ कि सीरते नबवी सल्ल0 पर कोई मज्मूआ मुरत्तब होना चाहिये जो तबलीग़ी व दावती इज्तिमाआत में भी पढ़कर सुनाया जा सके, इसके लिये अल्लामा शिब्ली रह0 की "सीरतुन्नबी सल्ल0[1]" और

(1) यह मलहूज़ रहे कि बेशतर हिस्सा "सीरतुन्नबी सल्ल0" से माख़ूज़ है।

क़ाज़ी सुलैमान साहब मंसूर पूरी रह0 की "रहमतुल लिल आलमीन" को सामने रखकर मुअस्सिर वाक़िआत का इंतिख़ाब किया गया जो दावत का काम करने वालों के लिये रहनुमा हों, और साथ साथ दिल को हरारते ईमानी और जोशे इस्लामी से मअ़मूर करने वाले हों।

उस वक़्त नाकारा के दिल में यह दाइया पैदा हुआ कि इसकी तबाअ़त का इंतिज़ाम होना चाहिये, लेकिन इसके इज़हार की हिम्मत न हुई, "وَكَانَ أَمْرُ اللّٰهِ قَدَراً مَّقْدُوْرًا"

रमज़ानुल मुबारक में अर्सा से हज़रत का क़्याम दाइरए शाह इल्मुल्लाह तकिया कलां में रहता है, हज़रत से तअ़ल्लुक़ रखने वालों की एक तअ़दाद रमज़ानुल मुबारक यक्सूई से गुज़ारने के लिये मौजूद रहती है, जिनकी तअ़लीम व तरबियत की ख़ातिर दुरूस का एहतिमाम होता है, और मुख़्तलिफ़ दीनी व दावती किताबें भी पढ़कर सुनाई जाती हैं,[1] दो साल क़ब्ल अम्मे मख़्दूम व मुअ़ज़्ज़म मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ साहब नदवी मद्दज़िल्लुहुल आली ने फ़रमाया कि सीरत पर भी कोई मुख़्तसर किताब होनी चाहिये, इस आजिज़ का ज़ेह्न इसी किताब की तरफ़ गया जो अभी तक मख़्तूता थी, बिरादरे अक्बर, मुशफ़िक़ व मुकर्रम मौलाना अब्दुल्लाह हसनी साहब नदवी मद्दज़िल्लहुल आली ने भी किताब मुलाहज़ा फ़रमा कर इसकी ताईद फ़रमाई और

(1) हज़रते वाला नौवरल्लाहु मरक़दहू की वफ़ात के बाद भी हज़रत के जानशीन हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ साहब हसनी नदवी मद्दज़िल्लहुल आली की सरपरस्ती में अलहम्दु लिल्लाह यह सिलसिला जारी है।

किताब पढ़ी जाने लगी। इसका मज्मा पर ऐसा असर हुआ कि हर तरफ़ से इसकी तबाअ़त का तक़ाज़ा शुरू हो गया, हज़रते वाला रह0 से अ़र्ज़ किया गया तो हज़रत ने इजाज़त मरहमत फ़रमा दी, और इस नाकारा को इसकी मुराजअ़त का हुक्म फ़रमाया, दूसरी एक मुश्किल यह भी दरपेश थी कि दर्मियानी कई सफ़्हात ग़ाइब थे, ख़ास तौर पर वफ़ात का पूरा वाक़िआ उसमें मज़कूर न था। मगर महज़ अल्लाह का फ़ज़्ल था कि उसने मुराजअ़त की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, और यह एहतिमाम भी किया गया कि सिहाह की किताबों में अगर हवाला मिल सके तो दर्ज किया जाए, जो नक़्स रह गया था वह अल्लामा शिब्ली रह0 की "सीरतुन्नबी" और हज़रत रह0 की "नबीये रहमत सल्ल0" को सामने रखकर पूरा कर दिया गया, उन्वानात नबीये रहमत को सामने रखकर क़ाइम कर दिये गये, अब अलहम्दु लिल्लाह! यह मुकम्मल किताब नाज़िरीन के सामने है, अल्लाह तबारक व तआला इसको क़बूल फ़रमाए, इसके नफ़ा को आम करे, इसको नजात व मग़फ़िरत का वसीला बनाए।

यहां पर यह बात अ़र्ज़ कर देना भी ज़रूरी है कि यह सीरत की एक मुख़्तसर और मुअस्सिर किताब है और आम लोगों के लिये मुफ़ीद तर है, और इस क़ाबिल है कि मसाजिद व मजामेअ़ में पढ़कर सुनाई जाए, लेकिन मुहक़्क़ीन व बाहिसीन और सीरत का तफ़सील से मुतालआ़ करने वालों के लिये ख़ुद मुसन्निफ़े किताब ने "अस्सीरतुन्नबवीया"

के नाम से ज़ख़ीम किताब तसनीफ़ फ़रमाई, जिसमें हज़रत रह0 ने सीरत के बअूज़ ऐसे पहलू बयान किये हैं जिनकी तरफ़ आम सीरत निगारों की निगाह नहीं जाती, आलमी जाहिलीयत पर तफ़सील से मग़रिबी मआख़िज़ को सामने रखकर रौशनी डाली गई है, इसका उर्दू में तर्जुमा राक़िम के वालिद माजिद मौलाना सय्यद मुहम्मद अल हसनी साहब रह0 ने किया है और किताब "नबीये रहमत" के नाम से मक़बूले आम है और उसके कई एडीशन मुख़्तलिफ़ ज़बानों में शाए हो चुके हैं।

अख़ीर में उन तमाम हज़रात का शुक्रिया आदा किया जाता है जिन्होंने किसी भी शक्ल में इस सिलसिला में तआ़वुन फ़रमाया, अम्मे मख़्दूम व मुअ़ज़्ज़म मौलाना सय्यद मुहम्मद राबेअ़ साहब हसनी नदवी मद्दज़िल्लुहु ने किताब पर मुक़द्दमा तहरीर फ़रमा कर इस नाचीज़ की हिम्मत अफ़ज़ाई फ़रमाई।

अज़ीज़िलक़द्र मौलवी मुख़्तार अहमद नदवी ने तहरीर व किताबत और मुक़ाबला में बड़ा तआ़वुन किया और मोहतरम व मुअ़ज़्ज़म मौलाना मुहम्मद रिज़वान साहब नदवी रह0 ने तबाअ़त के मरहला पर बड़ी मदद फ़रमाई, अल्लाह तबारक व तआला इन हज़रात को जज़ाए ख़ैर मरहमत फ़रमाए और इस अमल को क़बूल फ़रमा कर ज़ख़ीरए हसनात बनाए।[1]

(1) मोहतरमी मौलवी सय्यद मुहम्मद सलमान नदवी साहब और मोहतरमी मास्टर खुरशीद अख़्तर साहब मुदर्रिसे मदरसा ज़ियाउल उलूम भी शुक्रिया के मुस्तहिक़ हैं कि किताबत जैसे दुशवार गुज़ार मरहला में इन दोनों ने तआ़वुन किया।

وَمَا تَوْفِيْقِيْ اِلَّا بِاللّٰهِ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ، وَلَهُ الْحَمْدُ وَالْمِنَّةُ، وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ.

बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

दारे अरफात, दाइरए शाह इल्मुल्लाह राए बरैली।

Maktabe-Ashraf

मुक़द्दमा तब्ए दोम

الحمد للّٰه وحدهٗ، والصلاة والسلام علی من لا نبی بعده، أما بعد:

उस करीम रब का शुक्र अदा नहीं हो सकता जिसकी तौफ़ीक़ से तीन चार साल क़ब्ल यह किताब ज़ेवरे तब्अ़ से आरास्ता हुई थी, यह उसी रब्बे करीम का इन्आ़म है कि किताब को क़बूलियत मिली और बहुत से अल्लाह के बंदों को इससे नफ़ा पहुंचा, यह भी महज़ उसका फ़ज़्ल था कि हज़रत मुसन्निफ़ नौवरल्लाहु मरक़दहू की हयाते मुबारका में यह किताब शाए हुई और हज़रत रह0 इसको देखकर मसरूर हुए।

किताब का दूसरा एडीशन नई उर्दू कम्पोज़िंग और तस्हीहात के साथा शाए किया गया था, अब इसको हिंदी कम्पोज़िंग कराकर नए तरीक़े से शाए किया जा रहा है, अल्लाह तआला इसकी क़बूलियत और इफ़ादियत को और ज़्यादा करे, और इस नाकारा की मग़फ़िरत व नजात का ज़रीआ़ फ़रमाए।

इस एडीशन के लिये ख़ास तौर पर अज़ीज़ान अज़ीजुल

क़दर मौलवी मुख़्तार अहमद नदवी सल्लमहुल्लाहु तआला (मुदर्रिस मदरसा ज़ियाउल उलूम), मौलवी मलिक अनवर कमाल नदवी और मौलवी रहमतुल्लाह नदवी (मुदर्रिस मदरसा फ़लाहुल मुस्लिमीन) का शुक्रिया अदा किया जाता है, जिन्होंने पुरूफ़ की तस्हीह की और किताब की इशाअत के लिये मेहनत की थी (उर्दू एडीशन के लिये), और साथ ही साथ जनाब मुहम्मद रैहान का भी शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने इस किताब की हिंदी कम्पोज़िंग को अपनी नज़रे सानी से नवाज़ा और पुरूफ़ की तस्हीह की, अल्लाह तआला इन सबको अज्र अता फ़रमाए।

बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

दारे अरफ़ात, दाइरए शाह इल्मुल्लाह राए बरैली।

Maktab-e-Ishraf

Maktab-e-Ashraf

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वलादत बा सआ़दत

हमारे नबी सल्ल0 मौसमे बहार में दो शंबा के दिन 9/ रबीउल अव्वल[1], सन्ने आमुल फ़ील[2], अप्रेल 571 ई0 बअ़द अज़ सुब्ह व क़ब्ल अज़ तुलूए आफ़ताब पैदा हुए, हुज़ूर सल्ल0 अपने वालिदैन के अक्लौते फ़रज़ंद थे[3], वालिद बुज़ुर्गवार का आंहज़रत सल्ल0 की पैदाइश से पहले इंतिक़ाल हो गया था।[4]

अब्दुल मुत्तलिब आंहज़रत सल्ल0 के दादा ने खुद भी यतीमी का ज़माना देखा था, अपने 24/ साला नौजवान प्यारे

---

(1) इब्ने इस्हाक़ ने 12 रबीउल अ़व्वल की तारीख़ नक़्ल की है, इब्ने हिशाम जि01, स0171, सहीह रिवायात में दो शंबा के दिन की सराहत मौजूद है सहीह मुस्लिम किताबुस सियाम, बाब इस्तिहबाब सियामि सलासति अय्यामिन कुल्लि शह्र।

(2) सीरत इब्ने हिशाम जि01, स0171, आमुल फ़ील की रिवायत तिर्मिज़ी ने सुनन की किताबुल मनाक़िब में नक़्ल की है और इसकी तहसीन भी फ़रमाई है।

(3) "रहमतुल लिलआलमीन" क़ाज़ी सुलैमान साहब मंसूरपूरी रह0।

(4) मुसन्नफ़ अब्दर्रज़्ज़ाक़ जि05, स0317, मुस्तदरक हाकिम2,5,6 हाकिम ने इस रिवायत को मुस्लिम की शर्त पर क़रार दिया है और इमाम ज़हबी ने तौसीक़ फ़रमाई है।

फरज़ंद अब्दुल्लाह की इस यादगार के पैदा होने की ख़बर सुनते ही घर में आए और बच्चा को ख़ानए कअ़बा में ले गए और दुआ मांग कर वापस लाए,(1) सातवें दिन क़ुर्बानी की और तमाम क़ुरैश की दावत की, दावत खाकर लोगों ने पूछा कि आपने बच्चे का नाम क्या रखा, अब्दुल मुत्तलिब ने कहा "مُحَمَّدٌ" लोगों ने तअ़ज्जुब से पूछा कि आपने अपने ख़ानदान के सब मुरव्वजा नामों को छोड़ कर यह नाम क्यों रखा? कहा मैं चाहता हूं कि मेरा बच्चा दुन्या भर की सताइश और तअ़रीफ़ का शायान क़रार पाए।(2)

अय्यामे रज़ाअ़त

सबसे पहले आंहज़रत सल्ल0 को आपकी वालिदा ने और दो तीन रोज़ के बाद सुवैबा ने दूध पिलाया, जो अबू लहब की लौंडी थी(3) उस ज़माना में दस्तूर था कि शहर के रुअसा और शुरफ़ा शीर ख़्वार बच्चों को अतराफ़ के क़स्बात और देहात में भेज देते थे, यह रिवाज इस ग़र्ज़ से था कि बच्चे बद्दुओं में पल कर फ़साहत का जौहर पैदा करते थे, और अरब की ख़ालिस ख़ुसूसीयात महफ़ूज़ रहती थीं आंहज़रत सल्ल0 की वलादत के चंद रोज़ बाद क़बीलए हवाज़िन की चंद औरतें बच्चों की तलाश में आईं, उनमें हज़रत हलीमा सअ़दिया भी थीं, इत्तिफ़ाक़ से उनको कोई

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-160, तबक़ाते इब्ने सअ़द 1-103, तहज़ीब तारीख़े दमिश्क़ 1-284

(2) तहज़ीब तारीख़े दमिश्क़ 1-282, अलबिदाया वन्निहाया 2-264

(3) सहीह बुख़ारी किताबुन निकाह, बाब ला यतज़व्वज अक्सर मिन अरबअ़ के बाद वाला बाब

बच्चा हाथ न आया, आंहज़रत सल्ल0 की वालिदा ने उनको मुक़र्रर करना चाहा, तो उनको ख़्याल आया कि यतीम बच्चा को लेकर क्या करूंगी, लेकिन ख़ाली हाथ भी न जा सकती थीं, इसलिये हज़रत आमिना की दरख़्वास्त क़बूल की और आंहज़रत सल्ल0 को लेकर गईं, दो बरस के बाद हलीमा आप सल्ल0 को मक्का में लाईं और आपकी वालिदा माजिदा के सिपुर्द किया, लेकिन चूंकि उस ज़माना में वबा फैली हुई थी, आपकी वालिदा ने फ़रमाया कि वापस ले जाओ, दोबारा घर में लाईं[1] हज़रत हलीमा के साथ आंहज़रत सल्ल0 को बेइंतिहा मुहब्बत थी, हज़रत हलीमा के शौहर यअ़नी आंहज़रत सल्ल0 के रज़ाई बाप का नाम हारिस बिन अब्दुल उज़्ज़ा है वह आंहज़रत सल्ल0 की बेअ़सत के बाद मक्का आए, आंहज़रत सल्ल0 से मुलाक़ात की और कहा यह तुम क्या कहते हो? आपने फ़रमाया हां वह दिन आएगा कि मैं आपको दिखाऊंगा कि मैं सच कहता था, हारिस मुसलमान हो गए।[2]

वालिदा और दादा की वफ़ात और चचा अबू तालिब की किफ़ालत

आंहज़रत सल्ल0 की उम्र जब छः बरस की हुई तो

(1) सीरतुन्नबी जि01, स0172-173, हज़रत हलीमा सअ़दिया की रज़ाअ़त का ज़िक्र मशहूरे आम है। अस्हाबे सियर ने इसका तज़किरा किया है, इसके अलावा हाकिम ने मुस्तदरक 2-216 में, इमाम अहमद ने मुस्नद 4-184 में, दारमी ने सुनन 1-8 में, तबरानी ने मोअ़जम में और इब्ने हब्बान ने मवारिदुज़्ज़म्आन में हज़रत हलीमा की रज़ाअ़त बयान फ़रमाई है। और शक़्क़े सद्र का मशहूर वाक़िआ जो तुफ़ूलत में पेश आया, बनू सअ़द में क़याम के दौरान पेश आया था। इस वाक़िआ को इमाम मुस्लिम रह0 ने अपनी सहीह में बयान फ़रमाया है। किताबुल ईमान बाबुल इस्रा बेरसूलिल्लाह सल्ल0। (2) अल इसाबा इब्ने हजर असक़लानी जि01, स0 283

आपकी वालिदा आपको लेकर मदीना गईं, चूंकि आंहज़रत सल्ल0 के दादा का ननिहाल ख़ानदाने नज्जार में था, वहीं ठहरीं, इस सफ़र में उम्मे ऐमन भी साथ थीं, जो आंहज़रत सल्ल0 की दाया थीं, एक महीना तक मदीना में मुक़ीम रहीं, वापस आते वक़्त जब मक़ामे अबवा पहुंचीं तो उनका इंतिक़ाल हो गया और यहीं मदफ़ून हुई, उम्मे ऐमन आंहज़रत सल्ल0 को लेकर मक्का आईं।(1)

वालिदा माजिदा के इंतिक़ाल के बाद अब्दुल मुत्तलिब ने आंहज़रत सल्ल0 को अपने दामने तरबियत में लिया हमेशा आपको साथ रखते थे।(2) अब्दुल मुत्तलिब ने 82/ बरस की उम्र में वफ़ात पाई, उस वक़्त आंहज़रत सल्ल0 की उम्र आठ बरस की थी।(3) अब्दुल मुत्तलिब का जनाज़ा उठा तो आंहज़रत सल्ल0 भी साथ थे, और फ़र्ते मुहब्बत से रोते थे, अब्दुल मुत्तलिब ने मरने के वक़्त अपने बेटे अबू तालिब को आंहज़रत सल्ल0 की तरबियत सिपुर्द की, अबू तालिब आंहज़रत सल्ल0 से इस क़दर मुहब्बत रखते थे कि आप के मुक़ाबला में अपने बच्चों की परवाह नहीं करते थे, सोते तो आंहज़रत सल्ल0 को साथ लेकर सोते और बाहर जाते तो साथ लेकर जाते।(4)

---

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-155, तबक़ाते इब्ने सअ़द 1-116, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 1-188

(2) मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ 5-318

(3) दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहक़ी जि02, स022-अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स025

(4) सीरतुन्नबी जि01, स0177

ग़ालिबन जब आपकी उम्र दस बारह बरस की हुई तो आप सल्ल0 ने बकरियां चराईं।(1) यह आलम की गल्ला बानी का दीबाचा था, ज़मानए रिसालत में आप सल्ल0 इस सादा और पुर लुत्फ़ मशग़ला का ज़िक्र फ़रमाया करते थे, एक दफ़ा आप सल्ल0 सहाबा रज़ि0 के साथ जंगल में तशरीफ़ ले गए, सहाबा बेरियां तोड़कर खाने लगे, आपने फ़रमाया जो ज्यादा सियाह हो जाती हैं ज़्यादा मज़े की होती हैं। यह मेरा उस ज़माना का तजर्बा है जब मैं बचपन में यहां बकरियां चराया करता था।(2)

अबू तालिब तिजारत का कारोगार करते थे, कुरैश का दस्तूर था, साल में एक दफ़ा तिजारत की ग़र्ज़ से शाम जाया करते थे, आंहज़रत सल्ल0 की उम्र तक़रीबन बारह बरस की होगी कि अबू तालिब ने हसबे दस्तूर शाम का इरादा किया, सफ़र की तकलीफ़ या किसी और वजह से वह आंहज़रत सल्ल0 को साथ नहीं ले जाना चाहते थे, लेकिन आंहज़रत सल्ल0 को अबू तालिब से इस क़दर मुहब्बत थी कि जब अबू तालिब चले तो आप सल्ल0 उनसे लिपट गए और अबू तालिब ने आप सल्ल0 की दिल शिकनी गवारा न की और साथ ले लिया।(3)

हरबुल फ़ुज्जार और हलफ़ुल फ़ुज़ूल में शिर्कत

अरब में इस्लाम के आग़ाज़ तक लड़ाइयों का जो

(1) सहीहुल बुख़ारी किताबुल इजारा, बाब रअ्युल ग़नम अला करारीत।
(2) तबक़ाते इब्ने सअ़द जि01, स080
(3) सुनन तिर्मिज़ी बाबुल मनाक़िब, बाब मा जाअ् फी बदइन्नुबूव्वा सल्ल0।

मुतवातिर सिलसिला चला आता है, उनमें जंगे फुज्जार सबसे ज़्यादार मशहूर और ख़तरनाक थी, यह लड़ाई कुरैश और क़ैस के क़बीला में हुई थी। चूंकि कुरैश इस जंग में बरसरे जंग थे इसलिये रसूलुल्लाह सल्ल0 ने भी शिर्कत फ़रमाई लेकिन आप सल्ल0 ने किसी पर हाथ नहीं उठाया।(1)

लड़ाइयों के मुतवातिर सिलसिला ने सैकड़ों घराने बर्बाद कर दिये थे और क़त्ल व सफ़्फ़ाकी मौरूसी अख़्लाक़ बन गए थे, यह देखकर बअ़ज़ तबीअ़तों में इस्लाह की तहरीक पैदा हुई, जंगे फुज्जार से लोग वापस फिरे तो जुबैर बिन अब्दुल मुत्तलिब ने जो रसूलुल्लाह सल्ल0 के चचा और ख़ानदान के सरकर्दा थे, यह तज्वीज़ पेश की, चुनांचे ख़ानदाने हाशिम, ज़हरा और तीम, अब्दुल्लाह बिन जदआ़न के घर में जमा हुए और मुआहदा हुआ कि हम में से हर शख़्स मज़लूम की हिमायत करेगा और कोई ज़ालिम मक्का में न रहने पाएगा।(2) आँहज़रत सल्ल0 इस मुआहदा में शरीक थे, और अहदे नुबूव्वत में फ़रमाया करते थे कि मुआहदा के मुक़ाबला में अगर मुझको सुर्ख़ रंग के ऊंट भी दिये जाते तो मैं न बदलता और आज भी ऐसे मुआहदा के लिये कोई बुलाए तो मैं हाज़िर हूं।(3)

अबू तालिब के साथ आप सल्ल0 बचपन में भी बअ़ज़

(1) सीरत इब्न हिशाम 1-195 - अर्रौजुल अन्फ सुहैली1,120

(2) तबक़ाते इब्ने सअ़द जि01, स082

(3) मुस्तदरक हाकिम 2,219-220 - इमाम ज़हबी ने इस रिवायत की तस्हीह की है। इमाम बुख़ारी ने अल अदबुल मुफ़्रिद और बैहक़ी ने सुनन में इसकी तख़रीज की है।

तिजारती सफ़र कर चुके थे हर क़िस्म का तजर्बा हासिल हो चुका था और आप के हुस्ने मुआमला की शोहरत हर तरफ़ फैल चुकी थी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबिल हम्साअ् एक सहाबी रज़ि0 बयान करते हैं कि बेअ़सत से पहले मैंने आंहज़रत सल्ल0 से ख़रीद फ़रोख़्त का कोई मुआमला किया था कुछ मुआमला हो चुका था कुछ बाक़ी था, मैंने वादा किया कि फिर आऊंगा, इत्तिफ़ाक़ से तीन दिन तक मुझको अपना वादा याद न आया, तीसरे दिन जब वादा गाह पर पहुंचा तो आंहज़रत सल्ल0 को उसी जगह मुंतज़िर पाया, लेकिन इस वादा ख़िलाफ़ी से आपकी पेशानी पर बल तक न आया, सिर्फ़ इस क़दर फ़रमाया कि तुमने मुझे ज़हमत दी, मैं इसी मक़ाम पर तीन दिन से मौजूद हूं।[1]

हज़रत ख़दीजा रज़ि0 से रिश्तए इज़्दिवाज

मक्का में निहायत शरीफ़ ख़ानदान की एक बेवा औरत ख़दीजा थीं, वह बहुत मालदार थीं, अपना रूपया तिजारत में लगाए रखती थीं, उन्होंने आंहज़रत सल्ल0 की ख़ूबियां और औसाफ़ सुनकर और आप सल्ल0 की सच्चाई, दियानतदारी, सलीक़ा शिआ़री का हाल मअ़लूम करके ख़ुद दरख़्वास्त कर दी कि उनके रूपया से तिजारत करें, आंहज़रत सल्ल0 उनका माल लेकर तिजारत को गए, इस तिजारत में बड़ा नफ़ा हुआ, इस सफ़र में हज़रत ख़दीजा रज़ि0 का ग़ुलाम मैसरा भी था, उसने आंहज़रत सल्ल0 की उन तमाम ख़ूबियों

(1) सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल वअ्द,

और बुज़ुर्गियों का ज़िक्र ख़दीजा रज़ि0 को सुनाया जो सफ़र में ख़ुद देखी थीं, इन औसाफ़ को सुन कर ख़दीजा रज़ि0 ने दरख़्वास्त करके आंहज़रत सल्ल0 से निकाह कर लिया, हालांकि हज़रत ख़दीजा रज़ि0 इससे पहले बड़े बड़े सरदारों की दरख़्वास्ते निकाह रद्द कर चुकी थीं।(1)

कअ़बा की तअ़मीरे नौ और एक बड़े फ़ित्ने का सद्दे बाब

उन दिनों लोगों के दिलों पर आंहज़रत सल्ल0 की नेकी और बुज़ुर्गी का इतना असर था कि वह आंहज़रत सल्ल0 को नाम लेकर नहीं बुलाते थे बल्कि सादिक़ या अमीन कहकर पुकारते थे, आंहज़रत सल्ल0 की उम्र मुबारक 35/ साल की थी जब कुरैश ने कअ़बा की इमारत को (जिसकी दीवारें सैलाब के सदमे से फट गई थीं) अज़सरे नौ तअ़मीर कराया(2) इमारत के बनाने में तो सब ही शामिल थे मगर जब हजरे अस्वद के क़ाइम करने का मौक़ा आया तो सख़्त इख़्तिलाफ़ हुआ, क्योंकि हर एक यही चाहता था कि यह काम उसी के हाथ सर अंजाम पाए, नौबत यहां तक पहुंची कि तलवारें खिंच गईं, अरब में दस्तूर था कि जब कोई शख़्स जान दने की क़स्म खाता था तो प्याला में ख़ून

(1) हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के तिजारती माल को लेकर सफ़रे शाम का तज़किरा हाकिम ने मुस्तदरक में किया है 3,182, और इमाम ज़हबी ने इसकी तस्हीह की है। निकाह का भी इमाम हाकिम ने ज़िक्र किया है। और ज़रक़ानी ने इसके हालात तफ़सील से बयान फ़रमाए हैं। सहीह बुख़ारी में ज़बाने नुबूव्वत से इनके फ़ज़ाइल का तज़किरा मौजूद है,

(2) मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ 5-102, इमाम ज़हबी ने इसकी सनद को सही क़रार दिया है।

भर कर उसमें उंगलियां डुबो लेता था, इस मौक़ा पर भी बअ़ज़ दअ़वेदारों ने यह रस्म अदा की, चार दिन तक यह झगड़ा बरपा रहा, पांचवें दिन अबू उमय्या बिन मुग़ीरा ने जो क़ुरैश में सबसे ज़्यादा मुअम्मर था राए दी कि कल सुब्ह को जो शख़्स सबसे पहले हरम में आए वही सालिस क़रार दे दिया जाए, सबने यह राए तस्लीम की, ख़ुदा की क़ुदरत इत्तिफ़ाक़न आंहज़रत सल्ल0 तशरीफ़ ले आए, आंहज़रत सल्ल0 को देखना था कि "هَـذَا الأَمِيْنُ رَضِيْنَاه" के नअ़रे लग गए (अमीन आ गया हम सब उसके फ़ैसले पर रज़ामंद हैं) आंहज़रत सल्ल0 ने अपनी ज़ीरकी और मुआमला फ़ह्मी से ऐसी तदबीर की कि सब ख़ुश हो गए, आंहज़रत सल्ल0 ने एक चादर बिछाई उस पर पत्थर अपने हाथ से रख दिया फिर हर एक क़बीला के सरदार को कहा कि चादर को पकड़ कर उठाएं, इसी तरह उस पत्थर को वहां तक लाए जहां क़ाइम करना था, आंहज़रत सल्ल0 ने फिर उसे उठाकर कोने पर और तवाफ़ के सिरे पर लगा दिया[1] आंहज़रत सल्ल0 ने इस मुख़्तसर तदबीर से एक ख़ूंख़्वार जंग का इंसिदाद कर दिया, वर्ना उस वक़्त के अह्ले अरब में रेवड़ के पानी पिलाने, घोड़ों के दौड़ाने, अशआ़र में एक क़ौम से दूसरी क़ौम को अच्छा बताने, जैसी ज़रा ज़रा सी बातों पर ऐसी जंग होती कि बीसियों बरस तक ख़त्म होने में न आती थी।

(1) मुस्नदे अहमद 3,425, मुस्तदरक, हाकिम 3-458 व कुतुबे सियर

आसमानी तरबियत

आप सल्ल0 बचपन और शबाब में भी जबकि मंसबे नुबूव्वत से मुम्ताज़ नहीं हुए थे, मरासिमे शिर्क से हमेशा मुजतनिब रहे, एक दफ़ा कुरैश ने आप सल्ल0 के सामने खाना लाकर रखा, यह खाना बुतों के चढ़ावे का था, जानवर जो ज़िब्ह किया गया था किसी बुत के नाम पर ज़िब्ह किया गया था, आप सल्ल0 ने खाने से इंकार कर दिया[1] आप सल्ल0 ने नुबूव्वत से पहले बुत परस्ती की बुराई शुरू कर दी थी और जिन लोगों पर आप सल्ल0 को एतिमाद था उनको इस बात से मना फ़रमाते थे।[2]

रसूलुल्लाह सल्ल0 जिस ज़माने में पैदा हुए, मक्का बुत परस्ती का मर्कज़े अअ़ज़म था, खुद ख़ानए कअ़बा में तीन सौ साठ बुत थे, रसूलुल्लाह सल्ल0 के ख़ानदान का तमग़ए इम्तियाज़ सिर्फ़ इस क़दर था कि इस बुत कदा के मुतवल्ली और कलीद बरदार थे, बईं हमा आंहज़रत सल्ल0 ने कभी बुतों के आगे सर नहीं झुकाया, दीगर रुसूमे जाहिलीयत में भी कभी शिर्कत नहीं की, कुरैश ने इस बिना पर कि इनको आम लोगों से हर बात में मुम्ताज़ रहना चाहिये, यह क़ाएदा क़रार दिया था कि अय्यामे हज में कुरैश के लिये अरफ़ात जाना ज़रूरी नहीं और वह लोग जो बाहर से आएं वह कुरैश का लिबास इख़्तियार करें, वर्ना उनको बरहना होकर

(1) सहीह बुख़ारी में इस तरह के वाकिआत मज़कूर हैं, किताबुल मनाकिब, मनाकिबे ज़िक्र ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-216, मोअ़ूजमे कबीर तबरानी 5-88

कअूबा का तवाफ़ करना होगा, चुनांचे इसी बिना पर तवाफ़े बरहना का आम रिवाज हो गया था। लेकिन आंहज़रत सल्ल0 ने इन बातों में कभी अपने ख़ानदान का साथ न दिया।[1]

अरब में अफ़साना गोई का आम रिवाज था, रातों को लोग तमाम अशग़ाल से फ़ारिग़ होकर किसी मक़ाम में जमा होते थे, एक शख़्स जिसको इस फ़न में कमाल होता था दासतान शुरू करता, लोग बड़े ज़ौक़ व शौक़ से रात रात भर सुनते थे। बचपन में एक दफ़ा आंहज़रत सल्ल0 ने भी इस जलसा में शरीक होना चाहा था लेकिन इत्तिफ़ाक़ से राह में एक शादी का कोई जलसा था देखने के लिये खड़े हो गए वहीं नींद आ गई, उठे तो सुब्ह हो चुकी थी, एक दफ़ा और ऐसा ही इत्तिफ़ाक़ हुआ उस दिन भी यही वाक़िआ पेश आया, चालीस बरस की मुद्दत में सिर्फ़ दो दफ़ा इस क़िस्म का इरादा किया लेकिन दोनों दफ़ा तौफ़ीक़े इलाही ने बचा लिया[2] कि "तेरी शान इन मशाग़िल से बालातर है।"

इंसानियत की सुब्हे सादिक़ और बेअ़सते मुबारक

बेअ़सत का ज़माना जिस क़दर क़रीब होता गया, आंहज़रत सल्ल0 के मिज़ाज में ख़ल्वत गुज़ीनी की आदत बढ़ती ज़ाती थी, आंहज़रत सल्ल0 अक्सर पानी और सत्तू लेकर शहर से कई कोस परे सुनसान जगह कोहे हिरा के

(1) इसका ज़िक्र भी बुख़ारी में मौजूद है।

(2) अर्रोज़ुल अनफ़ सहेली, 1,112

एक ग़ार में जा बैठते, इबादत किया करते, इस इबादत में अल्लाह का ज़िक्र भी शामिल था, और कुदरते इलाहीया पर ग़ौर व फ़िक्र भी, जब तक पानी और सत्तू ख़त्म न हो जाए शहर न आया करते, अब आंहज़रत सल्ल0 को ख़्वाब नज़र आने लगे, ख़्वाब ऐसे सच्चे होते थे कि जो कुछ रात को ख़्वाब में देख लिया करते, दिन में वैसा ही ज़ुहूर में आ जाता, एक दिन जब कि आप सल्ल0 ने हसबे मअ़मूल ग़ारे हिरा में थे कि फ़रिशता नज़र आया, उसने कहा पढ़िये, आप सल्ल0 ने फ़रमाया मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं। उसने आप सल्ल0 को इस ज़ोर से दबोचा कि आपकी सारी ताक़त सर्फ़ हो गई, फिर उसने आप सल्ल0 को छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं, फिर उसने आप सल्ल0 को पूरी ताक़त से दबोचा फिर छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये, आप सल्ल0 ने कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं, उसने फिर पूरी क़ूव्वत से दबोचा और छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये, आप सल्ल0 ने फिर वही जवाब दिया, उसने यह आयतें पढ़ीं:

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اِقۡرَاۡ بِاسۡمِ رَبِّکَ الَّذِیۡ خَلَقَ، خَلَقَ الۡاِنۡسَانَ مِنۡ عَلَقٍ، اِقۡرَاۡ وَرَبُّکَ الۡاَکۡرَمُ، الَّذِیۡ عَلَّمَ بِالۡقَلَمِ، عَلَّمَ الۡاِنۡسَانَ مَالَمۡ یَعۡلَمۡ ؕ

"शुरू है अल्लाह के नाम से जो कमाले रहमत और निहायत रहम वाला है। पढ़िये अपने

Maktabe-Ashraf

परवरदिगार के नाम से जिसने (सब कुछ) पैदा किया, जिसने इंसान को पानी के कीड़े से बनाया, (हां) पढ़ते चले जाइये आपका परवरदिगार तो बहुत करम वाला है, जिसने क़लम के ज़रीआ़ से तअ़लीम दी (जिसने) इंसान को सब कुछ सिखाया जो वह नहीं जानता था।"

इस वाक़िआ के बाद नबी करीम सल्ल0 फ़ौरन घर आए और लेट गए, बीवी से कहा कि मुझ पर कपड़ा डाल दो, जब तबीअ़त में ज़रा सुकून हुआ तो बीवी से फ़रमाया कि मैं ऐसे वाक़िआत देखता हूं कि मुझे अपनी जान का डर हो गया है, हज़रत ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि0 ने कहा, नहीं आप को डर काहे का, मैं देखती हूं कि आप अक़रबा पर शफ़क़त फ़रमाते हैं, सच बोलते हैं, रांडों, यतीमों, बेकसों की दस्तगीरी करते हैं, मेहमान नवाज़ी फ़रमाते हैं, अस्ल मुसीबत ज़दों से हमदर्दी करते हैं, ख़ुदा आप सल्ल0 को कभी ग़मगीन न फ़रमाएगा, अब ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि0 को खुद भी अपने इत्मीनाने क़ल्ब की ज़रूरत हुई, इसलिये वह नबी करीम सल्ल0 को साथ लेकर अपने रिशता के चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़ल के पास गईं, जो इब्रानी ज़बान जानते थे और तौरेत व इंजील के माहिर थे, हज़रत ख़दीजा रज़ि0 की दरख़्वास्त पर नबी करीम सल्ल0 ने वरक़ा बिन नौफ़ल के सामने जिब्रईल अलै0 के आने, बात करने का वाक़िआ बयान फ़रमाया, वरक़ा झट बोल उठे यही वह नामूस है जो

हज़रत मूसा अलै0 पर उतरा था, काश मैं जवान होता, काश मैं उस वक़्त तक ज़िंदा रहता, जब क़ौम आपको निकाल देगी, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने पूछा, क्या क़ौम मुझको निकाल देगी? वरक़ा बोले हां! इस दुन्या में जिस किसी ने ऐसी तअ़लीम पेश की उससे शुरू में अदावत ही होती रही, काश मैं हिज्रत तक ज़िंदा रहूं और हुजूर की नुमायां ख़िदमत करूं।(1)

एक दिन रूहुल अमीन नबी करीम सल्ल0 को दामने कोह में लाए, नबी करीम सल्ल0 के सामने खुद वुजू किया और आंहज़रत सल्ल0 ने भी वुजू किया फिर दोनों ने मिल कर नमाज़ पढ़ी, रूहुल अमीन ने नमाज़ पढ़ाई।(2)

इस्लाम की तबलीग़ व दावत

नबी करीम सल्ल0 ने तबलीग़ शुरू कर दी, ख़दीजा रज़ि0 (बीवी) अली रज़ि0 (भाई उम्र आठ साल) अबू बक्र रज़ि0 (दोस्त) ज़ैद बिन हारसा रज़ि0 (मौला) पहले ही दिन मुसलमान हो गए, उन अशख़ास का ईमान लाना जो आंहज़रत सल्ल0 की चालीस साला ज़रा ज़रा सी हरकात व सकनात से वाक़िफ़ थे, नबी करीम सल्ल0 की अअ्ला सदाक़त और रास्तबाज़ी की रौशन दलील है, बिलाल, अम्र बिन अ़ब्सा, ख़ालिद बिन सअ़द बिन आ़स भी चंद रोज़ के

(1) पूरा वाक़िआ सहीह बुख़ारी के बाप बद्उल वह्य और सहीह मुस्लिम के किताबुल ईमान बाब बद्उल वह्य में मुफ़स्सल मज़कूर है, इसकी भी सराहत है कि उस वक़्त आप सल्ल0 की उम्र शरीफ़ चालीस साल थी।

(2) अल अंसाब लिलबलाज़री 1-111

बाद ही मुसलमान हो गए, अबू बक्र रज़ि0 बड़े मालदार थे, तिजारत करते थे, मक्का में उनकी दुकान बज़्ज़ाज़ी की थी, लोगों से उनका बहुत मेल मिलाप था, उनकी तबलीग़ से उस्मान ग़नी रज़ि0, ज़ुबैर रज़ि0, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0, तलहा रज़ि0, सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0 मुसलमान हुए, फिर अबू उबैदा आमिर बिन अब्दुल्लाह इब्नुल जर्राह रज़ि0, (जिनका लक़ब बाद में अमीनुल उम्मा हुआ) अब्दुल असद बिन बिलाल, उस्मान बिन मज़ऊन, आमिर बिन हैरा अज़दी, अबू हुज़ैफ़ा बिन उत्बा, साइब बिन उस्मान बिन मज़ऊन और अरक़म मुसलमान हुए, औरतों में उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के बाद नबी सल्ल0 के चचा अब्बास की बीवी उम्मुल फ़ज़्ल रज़ि0, अस्मा बिंते उमैस रज़ि0, अस्मा बिंते अबू बक्र रज़ि0 और फ़ातिमा ख़्वाहर उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने इस्लाम क़बूल किया।[1]

उन दिनों मुसलमान पहाड़ की घाटी में जाकर नमाज़ पढ़ा करते थे, एक दफ़ा आप सल्ल0 हज़रत अली रज़ि0 के साथ किसी दर्रा में नमाज़ पढ़ रहे थे, इत्तिफ़ाक़ से आप सल्ल0 के चचा अबू तालिब आ निकले, उनको इस जदीद तरीक़ए इबादत पर तअ़ज्जुब हुआ, खड़े हो गए और बग़ौर देखते रहे, नमाज़ के बाद पूछा यह कौनसा दीन है? आप सल्ल0

(1) सहीह बुख़ारी, सुनन तिर्मिज़ी, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, मुस्तदरक हाकिम और मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा की सहीह रिवायात में इन हज़रात के इस्लाम में सबक़े तक़द्दुम का ज़िक्र मौजूद है।

ने फ़रमाया कि हमारे दादा इब्राहीम का यही दीन था, अबू तालिब ने कहा मैं इसको इख़्तियार तो नहीं कर सकता लेकिन तुमको इजाज़त है और कोई शख़्स तुम्हारा मुज़ाहिम न हो सकेगा।(1)

तीन बरस तक आंहज़रत सल्ल0 ने निहायत राज़दारी के साथ फ़र्ज़े तबलीग़ अदा किया,लेकिन अब आफ़ताबे रिसालत बुलंद हो चुका था साफ़ हुक्म आया "فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ" और तुझको जो हुक्म दिया गया है, साफ़ साफ़ कह दे" और नीज़ यह हुक्म आया "وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ" (और अपने नज़दीक के ख़ानदान वालों को ख़ुदा से डरा)(2)

एक रोज़ आप सल्ल0 ने हज़रत अली रज़ि0 से फ़रमाया कि दावत का सामान करो, यह दरहक़ीक़त तबलीगे इस्लाम का पहला मौक़ा था, तमाम ख़ानदाने अब्दुल मुत्तलिब मदऊ किया गया। हम्ज़ा, अबू तालिब, अब्बास सब शरीक थे, आंहज़रत सल्ल0 ने खाने के बाद खड़े होकर फ़रमाया कि मैं वह चीज़ लेकर आया हूं जो दीन व दुन्या दोनों की कफ़ील है, इस बारे गिरां के उठाने में कौन मेरा साथ देगा, तमाम मजलिस में सन्नाटा था, दफ़अतन हज़रत अली रज़ि0 ने उठकर कहा "गो मुझको आशोबे चश्म है, गो मेरी टांगें पतली हैं और गो मैं सबसे नौ उम्र हूं, ताहम मैं आप का साथ दूंगा" कुरैश के लिये यह एक हैरत अंगेज़

(1) सीरतुन्नबी 1-206

(2) सीरतुन्नबी 1-210

मंज़र था कि दो शख़्स (जिनमें एक तेरह साल का नौजवान है) दुन्या की क़िस्मत का फ़ैसला कर रहे हैं, हाज़िरीन को बेसाख़्ता हंसी आ गई, लेकिन आगे चल कर ज़माना ने बता दिया कि यह लफ़्ज़ बलफ़्ज़ सच था।[1]

एक रोज़ नबी करीम सल्ल0 ने कोहे सफ़ा पर चढ़ के लोगों को पुकारना शुरू किया, जब सब जमा हो गए तो नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "तुम मुझे बताओ कि तुम मुझे सच्चा समझते हो या झूटा जानते हो?" सबने एक आवाज़ से कहा कि "हमने कोई बात ग़लत या बेहूदा आपके मुंह से नहीं सुनी, हम यक़ीन करते हैं कि आप सादिक़ और अमीन हैं।" नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः देखो मैं पहाड़ की चोटी पर खड़ा हूं और तुम उसके नीचे हो, मैं पहाड़ के इधर भी देख रहा हूं और उधर भी नज़र कर रहा हूं, अगर मैं कहूं कि रहज़नों का एक मुसल्लह गिरोह दूर से नज़र आ रहा है जो मक्का पर हमला आवर होगा क्या तुम इसका यक़ीन कर लोगे? लोगों ने कहा बेशक़! क्योंकि हमारे पास आप जैसे रास्त बाज़ आदमी के झुटलाने की कोई वजह नहीं, खुसूसन जबकि वह ऐसे बुलंद मक़ाम पर खड़ा है कि दोनों तरफ़ देख रहा है। नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः यह सब कुछ समझाने के लिये एक मिसाल थी,

(1) सीरतुन्नबी 1-210, तारीख़े तबरी व तफ़सीरे तबरी और अल्लामा शिब्ली रह0 ने यह वज़ाहत भी कर दी है कि यह रिवायत ज़ोअ़फ़ से ख़ाली नहीं, इमाम अहमद ने मुस्नद में, इब्ने कसीर ने तफ़सीर में, इब्ने सअ़द ने तबक़ात में और दूसरे अस्हाबे सियर ने भी इस रिवायत को ज़िक्र किया है, लेकिन इसकी कोई सनद ज़ोअ़फ़ से ख़ाली नहीं है।

अब यक़ीन कर लो कि मौत तुम्हारे सर पर आ रही है और तुम्हें खुदा के सामने हाज़िर होना है और मैं आलमे आख़िरत को भी ऐसा ही देख रहा हूं जैसा कि दुन्या पर तुम्हारी नज़र है, इस दिल नशीं वअ़ज़ से मतलब नबी करीम सल्ल0 का यह था कि नुबूव्वत के लिये एक मिसाल पेश करें कि किस तरह एक शख़्स आलमे आख़िरत को देख सकता है, जबकि हज़ारों अशख़ास नहीं देख सकते।[1]

तौहीद की बाज़ गश्त और मुश्रिकीन की ईज़ा रसानी

अब मुसलमानों की मुअ़तद बेहजमाअत तैयार हो गई थी जिनकी तअ़दाद चालीस से ज़्यादा थी, आपने हरमे कअ़बा में जाकर तौहीद का एलान किया, कुफ़्फ़ार के नज़दीक यह हरम की सबसे बड़ी तौहीन थी, इसलिये दफ़अ़तन एक हंगामा बरपा हो गया और हर तरफ़ से लोग आप सल्ल0 पर टूट पड़े, हारिस इब्ने अबी हाला (जो पहले शौहर से हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के साहबज़ादे थे) घर में थे, उनको ख़बर हुई दौड़े आए और आंहज़रत सल्ल0 को बचाना चाहा लेकिन हर तरफ़ से उन पर तलवारें पड़ीं और वह शहीद हो गए, इस्लाम की राह में यह पहला खून था जिससे ज़मीन रंगीन हुई।[2]

अब नबी करीम सल्ल0 ने सबको आम तौर पर समझाना शुरू किया, हर एक मेले में, हर एक गली कूचे में जा जा कर लोगों को तौहीद की खूबी बताते, बुतों, पत्थरों,

(1) यह रिवायत इज्माल के साथ सहीहैन में मौजूद है।

(2) अल इसाबा लिइब्ने हजर, ज़िक्रे हारिस बिन अबी हाला।

दरख़्तों की पूजा से रोकते, आप लोगों को तलक़ीन फ़रमाते कि ख़ुदा की ज़ात को नक़्स से, ऐब से, आलूदगी से पाक समझें, इस बात का पुख़्ता एतिक़ाद रखें कि ज़मीन, आसमान, चांद, सूरज, छोटे, बड़े सबके सब ख़ुदा के पैदा किये हुए हैं, सब उसी के मुहताज हैं, दुआ क़बूल करना, बीमार को सिहत व तंदुरुस्ती देना, मुरादें पूरी करना अल्लाह के इख़्तियार में है, अल्लाह की मर्ज़ी और हुक्म के बग़ैर कोई भी कुछ नहीं कर सकता, फ़रिशते और नबी भी उसके हुक्म के ख़िलाफ़ कुछ नहीं करते, अरब में उकाज़, उयैना और ज़िल मजाज़ के मेले बहुत मशहूर थे, दूर दूर से लोग वहां आया करते थे, नबी करीम सल्ल0 इन मक़ामात पर जाते और मेले में आए हुए लोगों को इस्लाम की और तौहीद की दावत फ़रमाया करते थे।[1]

जब आंहज़रत सल्ल0 ने एलाने दावत किया और बुत परस्ती की एलानिया मज़म्मत शुरू की तो कुरैश के चंद मुअ़ज़्ज़ज़ों ने अबू तालिब से आकर शिकायत की, अबू तालिब ने नर्मी से समझाकर रुख़सत कर दिया, लेकिन चूंकि बिनाए निज़ाअ़ क़ाइम थी, यअ़नी आंहज़रत सल्ल0 अदाए फ़र्ज़ से बाज़ न आ सकते थे, इसलिये यह सिफ़ारत दोबारा अबू तालिब के पास आई, इसमें तमाम रुअसाए कुरैश यअ़नी उत्बा बिन रबीआ़, शैबा, अबू सुफ़यान, आस बिन

(1) इमाम तिर्मिज़ी ने सुनन में, इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में, इमाम अहमद ने मुस्नद में और अस्हाबे सियर ने अपनी किताबों में इसका तज़किरा किया है, इमाम तिर्मिज़ी और इमाम ज़हबी ने हदीस की तस्हीह की है।

हिशाम, अबू जह्ल, वलीद बिन मुग़ीरा, आस बिन वाइल वग़ैरा शरीक थे, इन लोगों ने अबू तालिब से कहा कि तुम्हारा भतीजा हमारे मअ़बूदें की तौहीन करता है, हमारे आबा व अज्दाद को गुमराह कहता और हमको अहमक़ ठहराता है, इसलिये या तो तुम बीच से हट जाओ या तुम भी मैदान में आओ कि हम दोनों में से एक का फ़ैसला हो जाए, अबू तालिब ने देखा कि अब हालत नाज़ुक हो गई है, कुरैश अब तहम्मुल नहीं कर सकते और तन्हा कुरैश का मुक़ाबला नहीं कर सकता, आंहज़रत सल्ल0 से मुख़्तसर लफ़्ज़ों में कहा कि "जाने अम्म मेरे ऊपर इतना बार न डाल कि मैं उठा न सकूं।"

रसूलुल्लाह सल्ल0 के ज़ाहिरी पुश्त पनाह जो कुछ थे अबू तालिब थे, आंहज़रत सल्ल0 ने देखा कि अब उनके पाए सिबात में भी लग़ज़िश है, आपने आबदीदा होकर फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! अगर यह लोग मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे हाथ में चांद लाकर रख दें तब भी मैं अपने फ़र्ज़ से बाज़ न आऊंगा, ख़ुदा या तू इस काम को पूरा करेगा या मैं ख़ुद इस पर निसार हो जाऊंगा, आपकी पुर असर आवाज़ ने अबू तालिब को सख़्त मुतअस्सिर किया, रसूलुल्लाह सल्ल0 से कहा "जा कोई शख़्स तेरा बाल बीका नहीं कर सकता।"[1]

आंहज़रत सल्ल0 बदस्तूर दावते इस्लाम में मसरूफ़ रहे, कुरैश अगर्चे आंहज़रत सल्ल0 के क़त्ल का इरादा न कर सके

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी 86,87, मुस्तदरक हाकिम 3-577

लेकिन तरह तरह की अज़ीयतें देते थे, राह में कांटे बिछाते थे, नमाज़ पढ़ने में जिस्म मुबारक पर नजासत डाल देते थे, बद ज़बानियां करते थे।(1)

अब्दुललाह बिन अम्र बिन आस रज़ि0 का चश्म दीद बयान है कि एक रोज़ नबी करीम सल्ल0 ख़ानए कअ़बा में नमाज़ पढ़ रहे थे, उक़बा बिन अबी मुईत आया, उसने अपनी चादर को लपेट देकर रस्सी जैसा बनाया और जब नबी करीम सल्ल0 सज्दा में गए तो चादर को हुज़ूर सल्ल0 की गर्दन में डाल दिया और पेच पर पेच देने शुरू किये, गर्दने मुबारक बहुत भिंच गई थी ताहम हुज़ूर उसी इत्मीनाने क़ल्ब से सज्दा में पड़े हुए थे, इतने में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने धक्के देकर उक़्बा को हटाया और ज़बान से यह आयत पढ़ कर सुनाईः "أَتَقْتُلُوْنَ رَجُلاً أَنْ يَّقُوْلَ رَبِّىَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ" क्या तुम एक बुज़ुर्ग आदमी को मारते हो और सिर्फ़ इस जुर्म में कि वह अल्लाह को अपना परवरदिगार कहता है और तुम्हारे पास रौशन दलाइल लेकर आया है।" चंद शरीर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 से लिपट गए और उनको बहुत ज़द व कूब किया।(2)

एक दूसरी दफ़ा का ज़िक्र है कि नबी करीम सल्ल0 ख़ानए कअ़बा में नमाज़ पढ़ने लगे, क़ुरैश भी सिहने कअ़बा में जा बैठे, अबू जह्ल बोला कि आज शहर में फ़लां जगह

(1) सीरतुन्नबी 1-221

(2) सहीहुल बुख़ारी बाब बुन्यानुल कअ़बा, बाब ज़िक्रे मा लकियन्नबीय्यु सल्ल0 व अस्हाबुहु, मिन क़ुरैश बिमक्का

ऊंट ज़िब्ह हुआ है, ओझड़ी पड़ी हुई है, कोई जाए उठा लाए और इस (नबी करीम सल्ल0) के ऊपर धर दे, शक़ी उक़बा उठा, नजासत भरी ओझड़ी उठा लाया, जब नबी करीम सल्ल0 सज्दा में गए तो पुश्ते मुबारक पर रख दी, आंहज़रत सल्ल0 तो रब्बुल इज़्ज़त की जानिब मुतवज्जेह थे, कुछ ख़बर भी न हुई, कुफ़्फ़ार हंसी के मारे लोटे जाते थे और एक दूसरे पर गिरे जाते थे, इब्ने मसऊद सहाबी रज़ि0 भी मौजूद थे, काफ़िरों का हुजूम देखकर उनका हौसला न पड़ा, मगर मअ़सूम सय्यिदा फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि0 आ गईं, उन्होंने बाप की पुश्त से ओझड़ी को परे फेंक दिया और उन संग दिलों को सख़्त सुस्त भी कहा।[1]

एक मर्तबा यह तै करने के लिये मज्लिस मुंअक़िद हुई कि मुहम्मद सल्ल0 के मुतअ़ल्लिक़ क्या बात कही जाए कि मक्का में बाहर से आने वाले उनसे बचें और दूर ही दूर रहें, एक ने कहा हम बतलाया करेंगे कि वह काहिन है, वलीद बिन मुग़ीरा (जो एक खुर्रांट बुड्ढा था) बोला मैंने बहुतेरे काहिन देखे हैं लेकिन कहां तो काहिनों की तुक बंदियां और कुजा मुहम्मद (सल्ल0) का कलाम, हमको ऐसी बात न कहनी चाहिये जिससे क़बाइले अरब यह समझ लें कि हम झूट बोलते हैं, एक ने कहा हम इसे दीवाना बताया करेंगे, वलीद बोला, मुहम्मद (सल्ल0) को दीवानगी से क्या निस्बत है, एक बोला हम कहेंगे वह शाइर है, वलीद ने कहा हम

(1) सहीह बुख़ारी बाब बुनयानुल कअ़बा, बाब ज़िक्र मा लक़ियन्नबीयु सल्ल0 व अस्हाबुहू मिन क़ुरैश बिमक्का

जानते हैं कि शेअ़र क्या होता है, अस्नाफ़े सुख़न हमको बखूबी मअ़लूम हैं, मुहम्मद (सल्ल0) के कलाम को शेअ़र से ज़रा मुशाबहत नहीं, एक बोला हम बताया करेंगे कि वह जादूगर है, वलीद ने कहा जिस तहारत व लताफ़त व नफ़ासत से मुहम्मद (सल्ल0) रहता है वह जादूगरों में कहां होती है, जादूगरों की मनहूस सूरतें और नजिस आदतें अलग ही होती हैं, अब सबने आजिज़ होकर कहा चचा तुम ही बताओ कि फिर क्या किया जाए? वलीद ने कहा सच तो यह है कि मुहम्मद (सल्ल0) के कलाम में अजीब शीरीनी है, उसकी गुफ़्तगू नौरस हलावत है, कहने को तो बस यही कह सकते हैं कि उसका कलाम ऐसा है जिससे बाप बेटे, भाई भाई, शौहर व ज़न में जुदाई हो जाती है, इसलिये उससे परहेज़ करना चाहिये, तमाम लोगों ने वलीद की इस तज्वीज़ को पसंद किया, अब उनका मअ़मूल था कि मक्का के रास्तों पर बैठ जाते और आने जाने वालों को रसूलुल्लाह सल्ल0 के पास जाने से डराते।[1]

उत्बा का आंहज़रत सल्ल0 से मुकालमा

जब मक्का के काफ़िरों ने देखा कि मुहम्मद सल्ल0 किसी तरह दावत व तबलीग़ तर्क नहीं फ़रमाते, तो उन्होंने कहा कि आओ पहले मुहम्मद सल्ल0 को लालच दें, फिर धमकी दें, किसी तरह तो मान ही जाएंगे, मक्का के एक मशहूर सरदार उत्बा ने कहा देखो मैं जाता हूं और तस्फ़िया

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स0 89, 90

करके आता हूं, वह रसूलुल्लाह सल्ल0 के पास आया और यूं तक़रीर की:

"मेरे भतीजे मुहम्मद (सल्ल0)! अगर तुम इस कार्रवाई से माल व दौलत जमा करना चाहते हो तो हम खुद ही तेरे पास इतनी दौलत जमा कर देते हैं कि तू मालामाल हो जाए, अगर तुम इज़्ज़त के भूके हो तो अच्छा हम सब तुम को अपना रईस मान लेते हैं, अगर हुकूमत की ख़्वाहिश है तो हम तुमको बादशाहे अरब बना देते हैं, जो चाहो सो करने को हाज़िर हैं, मगर तुम अपना यह तरीक़ छोड़ दो, और अगर तुम्हारे दिमाग़ में कुछ ख़लल आ गया है तो बता दो कि हम तुम्हारा इलाज करा दें।"

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया: "तुमने जो कुछ मेरी बाबत कहा वह ज़रा भी सही नहीं, मुझे माल, इज़्ज़त, दौलत, हुकूमत कुछ दरकार नहीं और मेरे दिमाग़ में ख़लल भी नहीं, मेरी हक़ीक़त तुमको कुर्आन के इस कलाम से मअ़लूम होगी, फिर आप सल्ल0 ने यह आयात तिलावत फ़रमाई:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ، تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ، كِتَابٌ فُصِّلَتْ آيَاتُهُ
قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ، بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ، وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْ أَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ

إِلَيْهِ.....الخ

"यह कुर्आन खुदा के हुजूर से आया है, वह बड़ी रहमत वाला और निहायत रहम वाला है। यह बराबर पढ़ी जाने वाली किताब है अरबी ज़बान में समझदारों के लिये, इसमें सब बातें खुली खुली दर्ज हैं, जो लोग खुदा का हुक्म मानते हैं, उनके वास्ते इस फ़रमान में बशारत है, और जो इंकार करते हैं उनको खुदा के अज़ाब से डराता है, ताहम बहुत से लोगों ने इस फ़रमान से मुंह मोड़ लिया है, वह इसे सुनते ही नहीं और कहते हैं कि इसका हमारे दिल पर कोई असर नहीं और हमारे कान इससे शुनवा नहीं और हम में और तुम में एक तरह का पर्दा पड़ा है, तुम अपनी (तदीबर) करो हम अपनी (तदबीर) कर रहे हैं। ऐ नबी इन लोगों से कह दीजिये कि मैं भी तुम जैसा बशर हूं, मगर मुझ पर वह्य आती है, और खुदा के फ़रिशते ने यह बता दिया है कि सब लोगों का मअ़बूद सिर्फ़ एक है, उसी की तरफ़ मुतवज्जेह होना है और उसी से गुनाहों की मुआफ़ी मांगना लाज़िम है, उन लोगों पर अफ़सोस है जो शिर्क करते हैं और सदक़ा नहीं देते और आख़िरत का इंकार करते हैं, लेकिन जो खुदा पर ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये, उनके लिये आख़िरत में बड़ा दर्जा है।"

(हामीम सज्दा, आयत 1-5)

कलामे पाक के सुनने से उत्बा पर एक महवियत का आलम तारी हो गया, वह हाथों से सहारा दिये, गर्दन पुश्त पर डाले सुनता रहा और बिलआख़िर चुपचाप उठकर चला गया। उत्बा वापस गया तो वह उत्बा न था, कुरैश के सरदारों ने देखा तो कहा कि देखो उत्बा का वह चेहरा नहीं है, जो यहां से जाते वक़्त था, उन्होंने पूछा क्या देखा, क्या कहा, क्या सुना? उत्बा बोला, कुरैश! मैं ऐसा कलाम सुन कर आया जो न कहानत है, ने शेअ़र है न जादू है, न मंतर है। तुम मेरा कहा मानो तो मेरी राए पर चलो, मुहम्मद (सल्ल0) को अपने हाल पर छोड़ दो, लोगों ने यह राए सुन कर कहा, लो उत्बा पर भी मुहम्मद (सल्ल0) की ज़बान का जादू चल गया।[1]

सरदाराने कुरैश की आंहज़रत सल्ल0 से बातचीत

इस नाकामी के बाद कुरैश ने मशवरा किया कि मुहम्मद सल्ल0 को क़ौम के सामने बुला कर समझाना चाहिये, इस मशवरा के बाद उन्होंने नबी करीम सल्ल0 के पास कहला भेजा कि सरदाराने क़ौम आपसे कुछ बातचीत करना चाहते हैं और कअ़बा के अंदर जमा हैं, नबी करीम सल्ल0 खुशी खुशी वहां गए, क्योंकि हुज़ूर सल्ल0 को उनके ईमान ले आने की बड़ी आरज़ू थी, जब आंहज़रत सल्ल0 वहां जा बैठे तो उन्होंने गुफ़्तगू का आग़ाज़ इस तरह किया:

(1) अस्सीरतुन्नबवीया 1-486,487, मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा 14-295, अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स0 91-92

"ऐ मुहम्मद (सल्ल0)! हमने तुझे यहां बात करने के लिये बुलाया है, बखुदा हम नहीं जानते कि कोई शख़्स अपनी क़ौम पर इतनी मुश्किलात लाया हो, जिस क़दर तूने अपनी क़ौम पर डाल रखी है, कोई ख़राबी ऐसी नहीं जो तेरी वजह से हम पर न आ चुकी हो, अब तुम यह बताओ कि अगर तुम अपने इस नए दीन से माल जमा करना चाहते हो तो हम तुम्हारे लिये माल जमा कर दें, इतना कि हम में से किसी के पास इतना रूपया न निकले और अगर शर्फ़ व इज़्ज़त के ख़्वास्तगार हो तो हम तुम्हें अपना सरदार बना लें और अगर तुम सलतनत के तालिब हो तो तुम्हें अपना बादशाह मुक़र्रर कर लें और अगर तुम समझते हो कि जो चीज़ तुम्हें दिखाई देती है वह कोई जिन्न है जो ग़ालिब आ गया है तो हम टोने टोटकों के लिये माल सर्फ़ कर दें ताकि तुम तंदुरुस्त हो जाओ, या क़ौम के नज़दीक मअ़ज़ूर समझे जाओ।"

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया:

"तुमने जो कुछ भी कहा, मेरी हालत के ज़रा भी मुताबिक़ नहीं, जो तअ़लीम लेकर मैं आया हूं वह न तलबे अम्वाल के लिये है, न जल्बे शर्फ़ या हुसूले सलतनत के वास्ते है, बात यह है कि खुदावंद ने मुझे तुम्हारी तरफ़ रसूल बना कर भेजा है, मुझ पर किताब उतारी है, मुझे अपना बशीर व

नज़ीर बनाया है, मैंने अपने रब के पैग़ामात तुमको पहुंचा दिये हैं और तुम्हें बखूबी समझा दिया है, अगर तुम मेरी तअ़लीमात को क़बूल करोगे तो वह तुम्हारे लिये दुन्या वा आख़िरत का सरमाया है, और अगर रद्द करोगे तब मैं अल्लाह के हुक्म का इंतिज़ार करूंगा, वह मेरे लिये और तुम्हारे लिये क्या हुक्म भेजता है।"

कुरैश ने कहाः

"अच्छा मुहम्मद (सल्ल0)! अगर तुम हमारी बातों को नहीं मानते तो एक बात सुनो, तुमको मअ़लूम है कि हम किस क़दर सख़्ती व तंगी से दिन काट रहे हैं, पानी हमारे पास सबसे कम है और गुज़रान हमारी सबसे ज़्यादा तंग है, अब तुम खुदा से यह सवाल करो कि इन पहाड़ों को हमारे सामने से हटा दे ताकि हमारे शहर का मैदान खुल जाए, नीज़ हमारे लिये ऐसी नहरें जारी कर दे जैसी शाम व इराक़ में जारी हैं, नीज़ हमारे बाप, दादों को ज़िंदा कर दे, उन ज़िंदा होने वालों में कुसैय् बिन किलाब ज़रूर हो, क्योंकि वह हमारा सरदार था और सच बोला करता था हम उससे तेरी बाबत भी पूछ लेंगे, अगर उसने तेरी बातों को सच मान लिया और तूने हमारे सवालों को भी पूरा कर दिया, तब हम भी तुझे सच्चा जान लेंगे और मान लेंगे कि हां खुदा के यहां तेरा भी कोई दर्जा है

और उसने फ़िल हक़ीक़त तुझे रसूल बना कर भेजा है जैसा कि तू कह रहा है।"

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया:

"मैं इन कामों के लिये रसूल बना कर नहीं भेजा गया, मैं तो तअ़लीम के लिये रसूल बना कर भेजा गया हूं और मैंने ख़ुदा के पैग़ामात तुम्हें सुना दिये हैं, अगर तुम इसको क़बूल कर लोगे तो यह तुम्हारी दुन्या व आख़िरत के लिये सरमाया है और अगर रद्द करोगे तो मैं ख़ुदा के हुक्म का इंतिज़ार करूंगा, जो कुछ उसे मेरा और तुम्हारा फ़ैसला करना होगा फ़रमाएगा।"

कुरैश ने कहा:

"अच्छा अगर तुम हमारे लिये कुछ नहीं करते तो ख़ुद अपने ही लिये ख़ुदा से सवाल करो, यह कि वह एक फ़रिशते को तुम्हारे साथ मुक़र्रर कर दे, जो यह कहता रहे कि यह शख़्स सच्चा है और हम को तुम्हारी मुख़ालफ़त से मना भी कर दे, हां तुम अपने लिये यह भी सवाल करो कि बाग़ लग जाएं, बड़े बड़े महल बन जाएं, ख़ज़ाना सोना चांदी जमा हो जाए, जिसकी तुम्हें ज़रूरत भी है, अब तक तुम ख़ुद ही बाज़ार में जाते और अपनी मआ़श तलाश किया करते हो, ऐसा हो जाने के बाद ही हम तुम्हारी फ़ज़ीलत और शर्फ़ की पहचान हासिल कर सकेंगे।"

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया:

"मैं ऐसा न करूंगा और न खुदा से कभी ऐसा सवाल करूंगा और इन बातों के लिये मैं मबऊस भी नहीं हुआ, मुझे तो अल्लाह ने बशीर व नज़ीर बनाया है, तुम मान लो तो तुम्हारे लिये ज़ख़ीरए दारैन है वर्ना मैं सब्र करूंगा और खुदा के फ़ैसला का मुंतज़िर रहूंगा।"

कुरैश ने कहा:

"अच्छा तुम आसमान का टुक्ड़ा तोड़कर हम पर गिरा दो, क्योंकि तुम्हारा ज़ोअ्म यह है कि अगर खुदा चाहे तो ऐसा कर सकता है, पस जब तक तुम ऐसा न करोगे हम ईमान नहीं लाने के।"

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया:

"यह खुदा के इख़्तियार में है वह अगर चाहे तो ऐसा करे।"

कुरैश ने कहा:

"मुहम्मद (सल्ल0)! यह तो बताओ कि तेरे खुदा ने तुझे पहले से यह न बताया कि हम तुझे बुलांएगे, ऐसे ऐसे सवाल करेंगे, यह चीज़ें तलब करेंगे, हमारी बातों का यह जवाब है और खुदा का मंशा ऐसा ऐसा करने का है? चूंकि तेरे खुदा ने ऐसा नहीं किया, इसलिये हम समझते हैं कि जो कुछ हमने सुना है वह सही है कि यमामा में एक शख़्स रहता है, उसका नाम रहमान है, वही तुझको

ऐसी बातें सिखाता है, हम तो रहमान पर कभी नहीं ईमान लाने के, देखो आज हम ने अपने सारे उज़्र सुना दिये हैं, अब हम तुझ से क़समीया यह भी कहे देते हैं कि हम तुझे इस तअ़लीम की इशाअ़त कभी न करने देंगे, हत्ता कि हम मर जाएं या तू मर जाए।"

यहां तक बातचीत हुई कि एक उनमें से बोलाः "हम मलाइका की इबादत करते हैं जो खुदा की बेटियां हैं।" दूसरा बोलाः "हम तेरी बात का यक़ीन नहीं करेंगे जब तक कि खुदा और फ़रिशते हमारे सामने न आ जाएं।"

नबी करीम सल्ल0 आख़िरी बात सुनकर उठ खड़े हुए, नबी करीम सल्ल0 के साथ अब्दुल्लाह बिन अबू उमय्या बिन मुग़ीरा भी उठ खड़ा हुआ, यह आप सल्ल0 का फूफी ज़ाद भाई (आतिका बिंते अब्दुल मुत्तलिब का बेटा) था, उसने कहाः

"मुहम्मद (सल्ल0)! देखो तुम्हारी क़ौम ने अपने लिये कुछ चीज़ों का सवाल किया वह भी तुमने न माना, फिर उन्होंने यह चाहा कि तुम अपने ही लिये ऐसी अलामात का इज़हार करो जिससे तुम्हारी क़दर व मंज़िलत का सुबूत हो सकता हो, उसे भी तुमने क़बूल न किया, फिर उन्होंने अपने लिये थोड़ा सा अज़ाब भी चाहा जिसका तुम ख़ौफ़ दिलाया करते थे, तुमने उसका भी इक़रार न किया, बस अब मैं तुम पर कभी ईमान नहीं लाने

Maktab-e-Ashraf

का, अगर्चे तुम मेरे सामने आसमान को ज़ीना लगाकर ऊपर को चढ़ जाओ और मेरे सामने उस ज़ीना से उतरो और तुम्हारे साथ चार फ़रिशते भी आएं और वह तुम्हारी शहादत भी दें, मैं तो तब भी तुम पर ईमान नहीं लाऊंगा।[1]

नबी सल्ल0 इस रद्द व इंकार पर भी बराबर कुरैश को इस्लाम की हिदायत किया करते और फ़रमाया करते कि मेरी तअ़लीम ही में सब कुछ तुम्हारे लिये मौजूद है, जिन दानिशमंदों ने ईमान क़बूल किया और तअ़लीमे नबवी सल्ल0 पर कारबंद हुए, उन्हें इससे भी ज़्यादा मआरिफ़ व फ़वाइद हासिल हो गए जिसका कुफ़्फ़ार ने सवाल किया था।

कुरैश के हाथों मुसलमानों पर मज़ालिम

कुरैश ने जब देखा कि रसूलुल्लाह सल्ल0 से बस नहीं चलता तो उन्होंने ग़रीबों पर अपना गुस्सा उतारना शुरू किया, जिन्होंने इस्लाम क़बूल किया था, जब ठीक दोपहर हो जाती तो वह ग़रीब मुसलमानों को पकड़ते, अरब की तेज़ धूप रेतीली ज़मीन को दोपहर के वक़्त जलता तवा बना देती है, वह उन ग़रीबों को उसी तवे पर लिटाते, छाती पर भारी पत्थर रख देते कि करवट न बदलने पाएं, बदन पर गर्म बालू बिछाते, लोहे को आग पर गर्म करके उससे दाग़ते, पानी में डुबकियां देते।

(1) अस्सीरतुल हलबीया 1-496

यह मुसीबतें अगर्चे तमाम बेकसों पर आम थीं लेकिन उनमें जिन लोगों पर कुरैश ज़्यादा मेहरबान थे, उनके नाम यह हैं।[1]

हज़रत ख़ब्बाब बिन अलअरित रज़ि0: तमीम के क़बीला से थे, जाहिलीयत में गुलाम बनाकर फ़रोख़्त कर दिये गए और उम्मे अन्मार ने ख़रीद लिया था, उस ज़माना में इस्लाम लाए जब आंहज़रत सल्ल0 हज़रत अरक़म रज़ि0 के घर में मुक़ीम थे और सिर्फ़ छः सात शख़्स इस्लाम लाए थे, कुरैश ने उनको तरह तरह की तकलीफ़ें दीं, एक दिन कोयले जलाकर ज़मीन पर बिछाए, उस पर चित लिटाया, एक शख़्स छाती पर पांव रखे रहा कि करवट न बदलने पाएं, यहां तक कि कोयले पीठ के नीचे पड़े पड़े ठंडे हो गए।[2] हज़रत ख़ब्बाब रज़ि0 ने मुद्दतों के बाद जब यह वाक़िआ हज़रत उमर रज़ि0 के सामने बयान किया तो पीठ खोल कर दिखाई कि बर्स के दाग़ की तरह बिल्कुल सपेद थी।

हज़रत ख़ब्बाब रज़ि0 जाहिलीयत में लोहारी का काम करते थे, इस्लाम लाए तो बअ़ज़ लोगों के ज़िम्मा उनकी बक़ाया थी, मांगते तो जवाब मिलता, जब तक मुहम्मद (सल्ल0) का इंकार न करोगे, एक कौड़ी न मिलेगी, यह कहते कि नहीं! तुम मर मर कर ज़िंदा हो जाओ, तब भी यह मुम्किन नहीं।[3]

(1) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-228,231 (2) अलकामिल लिइब्ने असीर जि02-स067 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल इजारा, बाब हल युवाजरुर्रजुलु नफ़्सहू मिन मुशिरकिन फी अरज़िल हर्ब

हज़रत बिलाल रज़ि0: यह वही हज़रत बिलाल रज़ि0 हैं जो मुअज़्ज़िन के लक़ब से मशहूर हैं, हब्शीयुन्नस्ल और उमय्या बिन ख़लफ़ के गुलाम थे, जब ठीक दोपहर हो जाती तो उमय्या इनको जलती बालू पर लिटाता और पत्थर की चट्टान उनके सीने पर रख देता कि जुंबिश न करने पाएं, उनसे कहता कि इस्लाम से बाज़ आ, वर्ना यूं ही घुट घुट कर मर जाएगा, लेकिन उस वक़्त भी उनकी ज़बान से "أَحَد" का लफ़्ज़ निकलता। जब यह किसी तरह मुतज़लज़ल न हुए तो गले में रस्सी बांधी और लौंडों के हवाला किया, वह उनको शहर के इस सिरे से उस सिरे तक घसीटते फिरते थे, लेकिन अब भी वही रट थी "أَحَد أَحَد"[1]

हज़रत अम्मार रज़ि0: यमन के रहने वाले थे, उनके वालिद "यासिर रज़ि0" मक्का में आए, अबू हुज़ैफ़ा मख़्ज़ूमी ने अपनी कनीज़ से जिसका नाम सुमय्या था शादी कर दी, अम्मार रज़ि0 उसी के पेट से पैदा हुए, यह जब इस्लाम लाए तो इनसे पहले सिर्फ़ तीन शख़्स इस्लाम ला चुके थे, क़ुरैश उनको जलती हुई ज़मीन पर लिटाते और इस क़दर मारते कि बेहोश हो जाते, उनके वालिद और वालिदा के साथ यही सुलूक किया जाता था।[2]

हज़रत सुमय्या रज़ि0: हज़रत अम्मार रज़ि0 की वालिदा थीं, इनको अबू जह्ल ने इस्लाम लाने के जुर्म में बर्छी मारी और वह शहीद हो गईं।

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-284, मुस्नद अहमद-404

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-319

हज़रत यासिर रज़ि0: हज़रत अम्मार के वालिद थे, यह भी काफ़िरों के हाथ से अज़ीयत उठाते उठाते शहीद हो गए।[1]

हज़रत सुहैब रूमी रज़ि0: आंहज़रत सल्ल0 ने जब दावते इस्लाम शुरू की तो यह और अम्मार रज़ि0 बिन यासिर रज़ि0 एक साथ आंहज़रत सल्ल0 के पास आए, आप सल्ल0 ने इस्लाम की तरग़ीब दी और यह मुसलमान हो गए, कुरैश इनको इस क़दर अज़ीयत देते कि इनके हवास मुख़्तल हो जाते थे। जब इन्होंने मदीना को हिज्रत करनी चाही तो कुरैश ने कहा कि अपना सारा माल व मताअ़ छोड़ जाओ तो जा सकते हो, इन्होंने निहायत खुशी से मंजूर किया, हज़रत उमर रज़ि0 जब नमाज़ पढ़ाने में ज़ख़्मी हुए तो अपने बजाए इन्हीं को इमामत दी थी।[2]

अबू फ़ुकैहा रज़ि0: सफ़वान बिन उमय्या के गुलाम थे, हज़रत बिलाल रज़ि0 के साथ इस्लाम लाए, उमय्या को जब मअ़लूम हुआ तो उनके पांव में रस्सी बांधी और आदमियों से कहा कि घसीटते हुए ले जाएं और तपती हुई ज़मीन पर लिटाएं, एक "गबरीला" राह में जा रहा था उमय्या ने उनसे कहा: "तेरा खुदा यही तो नहीं है?" उन्होंने कहा: "मेरा और तेरा दोनों का खुदा अल्लाह तआला है।" एक दफ़ा उनके सीने पर इतना भारी बोझ रख दिया कि उनकी ज़बान निकल पड़ी।[3]

(1) अल कामिल 2-67 (2) मुस्तदरक हाकिम, मनाकिबे सुहैब 3-449
(3) अल कामिल 2-69

हज़रत लुबैना रज़ि०: यह बेचारी एक कनीज़ थीं, हज़रत उमर इस बेकस को मारते मारते थक जाते तो कहते "मैं तुझ पर रहम की बिना पर नहीं, बल्कि इस वजह से छोड़ दिया है कि थक गया हूं।" वह निहायत इस्तिक़लाल से जवाब देतीं कि "अगर तुम इस्लाम न लाओगे तो खुदा इसका इंतिक़ाम लेगा।"[1]

हज़रत ज़िन्नीरा रज़ि०: हज़रत उमर रज़ि० के घराने की कनीज़ थीं और इस वजह से हज़रत उमर रज़ि० (इस्लाम से पहले) इनको जी खोल कर सताते, अबू जह्ल ने इनको इस क़दर मारा कि इनकी आंखें जाती रहीं।[2]

हज़रत नहदीया रज़ि० और उम्मे उबैस रज़ि०: यह दोनों भी कनीज़ें थीं, और इस्लाम लाने के जुर्म में सख़्त से सख़्त मुसीबतें झेलती थीं।[3]

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के फ़ज़ाइल का यह पहला बाब है कि उन्होंने इन मज़लूमों में से अक्सर की जान बचाई, हज़रत बिलाल रज़ि०, आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ि०, लुबैना रज़ि०, ज़िन्नीरा रज़ि०, नहदीया रज़ि०, उम्मे उबैस रज़ि०, सबको भारी भारी दामों पर ख़रीदा और आज़ाद कर दिया।

यह वह लोग हैं जिनको क़ुरैश ने निहायत सख़्त जिस्मानी अज़ीयतें पहुंचाईं, इनसे कम दर्जा पर वह लोग थे,

(1) अलकामिल 2-69

(2) अलकामिल 2-69, 70

(3) मुस्तदरक हाकिम 3-284, मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा 12-10, हज़रत बिलाल रज़ि० के आज़ाद करने का ज़िक्र सहीहुल बुख़ारी में भी मौजूद है।

जिनको और तरह तरह से सताते थे।

हज़रत उस्मान रज़ि0: जो कबीरुस्सिन्न और साहिबे जाह व एज़ाज़ थे, जब इस्लाम लाए, तो दूसरों ने नहीं बल्कि खुद उनके चचा ने रस्सी बांध कर मारा।(1)

हज़रत अबू ज़र रज़ि0: जो सातवें मुसलमान हैं, जब मुसलमान हुए और कअूबा में अपने इस्लाम का एलान किया, तो कुरैश ने मारते मारते उनको लिटा दिया।(2)

हज़रत जुबैर बिन अलअव्वाम रज़ि0: इनका मुसलमान होने में पांचवां नम्बर था, जब इस्लाम लाए तो इनके चचा इनको चटाई में लपेट कर इनकी नाक में धूनी देते थे।(3)

हज़रत उमर रज़ि0 के चचाज़ाद भाई **सईद बिन ज़ैद रज़ि0** जब इस्लाम लाए तो हज़रत उमर रज़ि0 ने उनको रस्सियों से बांध दिया।(4)

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0 फ़ातिहे ईरान: अगर्चे निहायत मुअ़ज़्ज़ज़ और अपने क़बीला में निहायत मुक़्तदर थे, ताहम कुफ़्फ़ार के सितम से महफ़ूज़ न थे, बनू असद इस्लाम के जुर्म पर इनको सख़्त सज़ाएं देते, उस वक़्त तक हरमे कअूबा में कोई शख़्स बुलंद आवाज़ से कुर्आन नहीं पढ़ सकता था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 जब इस्लाम लाए तो उन्होंने कहा मैं इस फ़र्ज़ को

(1) रहमतुल लिल आलमीन, क़ाज़ी सुलैमान मंसूरपूरी 1-55 (2) सहीहुल बुख़ारी, बाब इस्लामु अबी ज़र रज़ि0 (3) सीरतुन्नबी सल्ल0, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी रह0, बहवाला रियाज़ुन्नुज़रह (4) सहीहुल बुख़ारी किताबुल इकराह, बाब मन इख़्तारज़्ज़र्ब वल क़त्ल वल हवान अलल कुफ़्र

ज़रूर अदा करूंगा, लोगों ने मना किया, लेकिन वह बाज़ न आए, हरम में गए और मक़ामे इब्राहीम अलै0 के पास खड़े होकर सूरए रहमान पढ़नी शुरू की, कुफ़्फ़ार हर तरफ़ से टूट पड़े और उनके मुंह पर तमांचे मारने शुरू किये, अगर्चे उनको जहां तक पढ़ना था, पढ़ कर दम लिया, लेकिन वापस गए तो चेहरा पर ज़ख़्म के निशान लेकर गए।[1]

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के साथ कुफ़्फ़ारे कुरैश का मुआमला

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 अगर्चे मक्का के ज़ी वजाहत और आबरू दार लोगों में थे, लेकिन इस्लाम लाने के बाद कुरैश की ईज़ाओं और इहानतों से बच न सके, एक दिन लोगों ने उनको गिराकर पांव से रौंदा और बहुत ज़द व कूब किया, उत्बा बिन रबीआ़ ने उनको दो ऐसे जूतों से मारा जिसमें जाबजा पैवंद लगे हुए थे, उनकें चेहरा पर इतनी ज़र्ब आई कि सारे चेहरे पर वरम हो गया, अअ़ज़ा का पता नहीं चलता था, उनके क़बीला के लोग उनको एक कपड़े में लपेट कर उठा ले गए और घर पहुंचा दिया, सबको यक़ीन था कि अबू बक्र रज़ि0 बचने वाले नहीं हैं, शाम को जब बोलने की सकत हुई तो कहा कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ख़ैरियत से हैं? उनके ख़ानदान वालों ने उनको बड़ी मलामत की कि अब भी इनको रसूलुल्लाह सल्ल0 की फ़िक्र है, जब मज्मा हटा तो फिर उन्होंने अपनी वालिदा से पूछा रसूलुल्लाह सल्ल0 का क्या हाल है? उन्होंने कहा कि मुझे

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-314, असदुल ग़ाबा 3-282

बिल्कुल ख़बर नहीं है, आपने कहा कि उम्मे जमील से पूछ कर आओ, उम्मे जमील आपको देखने आईं, उन्होंने यह हाल देखकर कहा कि जिन लोगों ने आपके साथ यह सुलूक किया है वह बड़े फ़ासिक़ व काफ़िर हैं, मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला उनसे इंतिक़ाम लेगा, आपने कहा कि रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़ैरियत कहो, उन्होंने कहा कि आप सल्ल0 बख़ैरियत हैं, फ़रमाया कहां हैं, उन्होंने कहा कि इब्ने अरक़म के घर में, आपने कहा कि उस वक़्त तक मुझे खाना पीना हराम है जब तक कि मैं आप सल्ल0 को देख न लूं, रात को जब आमद व रफ़्त मौक़ूफ़ हुई और सन्नाटा हो गया तो आप की वालिदा और उम्मे जमील आपको पकड़ा कर हुज़ूर सल्ल0 की ख़िदमत में लाईं और आप ज़ियारत व मुलाक़ात से मुशर्रफ़ हुए।[1]

मुसलमानों की हब्शा की तरफ़ हिजरत और नजाशी के सामने हज़रत जअफ़र की तक़रीर

जब कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को बेहद सताना शुरू किया तो नबी सल्ल0 ने सहाबए किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम को इजाज़त दे दी कि जो चाहे वह अपनी जान व ईमान के बचाव के लिये हबश को चला जाए।

इस इजाज़त के बाद एक छोटा सा क़ाफ़िला ग्यारह मर्द, चार औरतों का रात की तारीकी में निकला और बंदरगाह शुऐबा से जहाज़ में सवार होकर हबश को रवाना हो गया।[2]

(1) अल इसाबा 1-42 (2) फ़ुतुल बारी लिइब्ने हजर 7-188,189

इस मुख़्तसर क़ाफ़िला के सरदार हज़रत उस्मान रज़ि0 बिन अफ़्फ़ान थे, सय्यदा रुक़य्या रज़ि0 (बिन्तुन्नबी सल्ल0) उनके साथ थीं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः "इब्राहीम अलै0 के बाद यह पहला जोड़ा है जिसने राहे ख़ुदा में हिज्रत की है।"(1)

उनके पीछे और भी मुसलमान (83/ मर्द, 18 औरतें) मक्का से निकले और हबश को रवाना हुए, उनमें नबी सल्ल0 के चचेरे भाई जअ़फ़र तय्यार रज़ि0 भी थे, कुरैश ने समंदर तक उनका तआ़कुब किया मगर यह कश्तियों में बैठ कर रवाना हो चुके थे।(2)

हबश का बादशाह ईसाई था, मक्का के काफ़िर भी उसके पास तोहफ़े तहाइफ़ लेकर गए और जाकर कहा कि इन लोगों को जो हमारे मुल्क से भाग आए हैं हमारे सिपुर्द किया जाए, मुसलमान दरबार में बुलाए गए, तब नबी सल्ल0 के चचेरे भाई जअ़फ़र रज़ि0 ने दरबार में यह तक़रीर की:

> "ऐ बादशाह! हम जिहालत में मुब्तला थे, बुतों को पूजते थे, नजासत में आलूदा थे, मुर्दार खाते थे, बेहूदा बका करते थे, हम में इंसानियत और सच्ची मेहमानदारी का निशान न था, हमसाया की रिआयत न थी, कोई क़ाएदा व क़ानून न था, ऐसी हालत में ख़ुदा ने हम में से एक बुज़ुर्ग को मबऊस

(1) तबक़ात इब्ने सअ़द 1-203

(2) फ़ुतुल बारी 7-189

MaktabeMuttaqi

किया जिसके हसब व नसब, सच्चाई, दियानतदारी तक़वा, पाकीज़गी से हम खूब वाक़िफ़ थे, उसने हमको तौहीद की दावत दी और समझाया कि उस अकेले खुदा के साथ किसी को शरीक न जानें, उसने हमको पत्थरों की पूजा से रोका, उसने फ़रमाया कि हम सच बोला करें, वादा पूरा किया करें, गुनाहों से दूर रहें, बुराइयों से बचें, उसने हुक्म दिया कि हम नमाज़ पढ़ा करें, सदक़ा दिया करें और रोज़े रखा करें, हमारी क़ौम हमसे इन बातों पर झगड़ बैठी है, क़ौम ने जहां तक हो सका हमको सताया ताकि हम वहदहू ला शरीक की इबादत करना छोड़ दें और लकड़ी और पत्थर की मूर्तों की पूजा करने लग जाएं, हमने उनके हाथों बहुत जुल्म और तकलीफ़ें उठाई हैं और जब मजबूर हो गए, तब तेरे मुल्क में पनाह लेने आए हैं।"

बादशाह ने यह तक़रीर सुन कर कहा मुझे कुर्आन सुनाओ! जअ्फ़र तय्यार रज़ि० ने उसे सूरए मरयम सुनाई, बादशाह पर ऐसी तअसीर हुई कि वह रोने लगा और उसने कहा "मुहम्मद तो वही रसूल हैं जिनकी ख़बर यसूअ़ मसीह अलै० ने दी थी।" अल्लाह का शुक्र है कि मुझे उस रसूल का ज़माना मिला, फिर बादशाह ने मक्का के काफ़िरों को दरबार से निकलवा दिया।

दूसरे दिन अम्र बिन अलआ़स रज़ि० ने फिर दरबार में

रसाई हासिल की और नजाशी से कहा हुजूर! आपको यह भी मअ़लूम है कि यह लोग हज़रत ईसा अलै0 की निस्बत क्या एतिक़ाद रखते हैं? नजाशी ने मुसलमानों को बुला भेजा कि इस सवाल का जवाब दें, उन लोगों को तरद्दुद हुआ कि अगर हज़रत ईसा अलै0 के इब्नुल्लाह होने का इंकार करते हैं, नजाशी ईसाई है नाराज़ हो जाएगा, हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 ने कहा कुछ भी हो हमको सच बोलना चाहिये।

ग़र्ज़ यह लोग दरबार में हाज़िर हुए, नजाशी ने कहा तुम लोग ईसा बिन मरयम अलै0 के मुतअ़ल्लिक़ क्या एतिक़ाद रखते हो? हज़रत जअ़फ़र रज़ि0 ने कहा "हमारे पैग़म्बर सल्ल0 ने बताया कि ईसा अलै0 खुदा का बंदा और पैग़म्बर कलिमतुल्लाह है" नजाशी ने ज़मीन से एक तिंका उठा लिया और कहा, वल्लाह जो तुमने कहा ईसा अलै0 इस तिंके के बराबर भी या इससे ज़्यादा नहीं हैं, बितरीक़ जो दरबार में मौजूद थे निहायत बरहम हुए, नथनों से ख़रख़राहट की आवाज़ आने लगी, नजाशी ने उनके गुस्सा की कुछ परवाह न की और कुरैश के सफ़ीर बिल्कुल नाकामियाब आए।[1]

हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 का क़बूले इस्लाम

हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 आंहज़रत सल्ल0 के चचा थे, उनको आप सल्ल0 से मुहब्बत थी, और आप सल्ल0 से दो, तीन बरस बड़े थे और साथ खेलते थे, दोनों ने सुवैबा का दूध पिया था और इस रिशते से भाई भाई थे, वह अभी तक

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-335,336, मुस्नद अहमद 1-202, 5-290

इस्लाम नहीं लाए थे, लेकिन आप सल्ल0 की हर अदा को मुहब्बत की नज़र से देखते थे, उनका मज़ाक़े तबीअ़त सिपहगरी और शिकार अफ़गनी था, मअ़मूल था कि मुंह अंधेरे तीर कमान लेकर निकल जाते, तमाम दिन शिकार में मसरूफ़ रहते, शाम को वापस आते तो पहले हरम में जाते तवाफ़ करते, कुरैश के रुअसा सिहने हरम में अलग अलग दरबार जमा कर बैठा करते थे, हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 उन लोगों से साहब सलामत करते, कभी कभी किसी के पास बैठ जाते, इस तरीक़ा से सबसे याराना था और सब लोग उनकी क़दर व मंज़िलत करते थे।

आंहज़रत सल्ल0 के साथ मुख़ालिफ़ीन जिस बेरहमी से पेश आते थे बेगानों से भी न देखा जा सकता था, एक दिन अबू जह्ल ने रू दर रू आप सल्ल0 के साथ निहायत गुस्ताख़ियां कीं, एक कनीज़ देख रही थी, हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 शिकार से आए तो उसने तमाम माजिरा कहा, हज़रत हम्ज़ा रज़ि0 गुस्सा से बेताब हो गए, तीर व कमान हाथ में लिये हरम में आए और अबू जह्ल से कहा "मैं मुसलमान हो गया हूं"[1]

हज़रत उमर रज़ि0 का क़बूले इस्लाम

हज़रत उमर रज़ि0 का सत्ताईसवां साल था कि आंहज़रत सल्ल0 मबऊस हुए, हज़रत उमर रज़ि0 के घराने में ज़ैद की वजह से तौहीद की आवाज़ नामानूस नहीं रही

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी 101, मुस्तदरक हाकिम 3-213 ज़िक्रे इस्लाम हम्ज़ा रज़ि0

थी, चुनांचे सबसे पहले ज़ैद के बेटे सईद इस्लाम लाए, सईद का निकाह हज़रत उमर रज़ि0 की बहन फ़ातिमा से हुआ था, इस तअ़ल्लुक़ से फ़ातिमा भी मुसलमान हो गई थीं, इसी ख़ानदान में एक और मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स नुऐम बिन अब्दुल्लाह ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया था, लेकिन हज़रत उमर रज़ि0 अभी तक इस्लाम से बेगाना थे, उनके कानों में जब यह सदा पहुंची तो सख़्त बरहम हुए, यहां तक कि क़बीला में जो लोग इस्लाम ला चुके थे उनके दुशमन बन गए, लुबैना उनके ख़ानदान की कनीज़ थी जिसने इस्लाम क़बूल कर लिया था, उसको बेतहाशा मारते और मारते मारते थक जाते तो कहते कि दम ले लूं तो फिर मारूंगा, लुबैना के सिवा और जिस पर क़ाबू चलता था ज़द व कूब से दरेग़ नहीं करते थे, लेकिन इस्लाम का नशा ऐसा था कि जिस पर चढ़ जाता था उतरता न था, इन तमाम सख़्तियों पर एक शख़्स को भी वह बद दिल न कर सके, आख़िर मजबूर होकर (नऊज़ु बिल्लाह) खुद बानिये इस्लाम के क़त्ल का इरादा किया, तलवार कमर से लगा कर सीधे रसूलुल्लाह सल्ल0 की तरफ़ चले, कारकुनाने क़ज़ा ने कहा

आमद आं यारे कि मा मीख़्वास्तम

राह में इत्तिफ़ाक़न नुऐम बिन अब्दुल्लाह मिल गए, उनके तेवर देख कर पूछा ख़ैर है? बोले कि मुहम्मद (सल्ल0) का फ़ैसला करने जाता हूं, उन्होंने कहा पहले अपने घर की ख़बर लो, खुद तुम्हारे बहन बहनोई इस्लाम ला चुके

हैं, फ़ौरन पलटे और बहन के यहां पहुंचे, वह कुर्आन पढ़ रही थीं, उनकी आहट पाकर चुप हो गईं, और अज्ज़ा छिपा लिये, लेकिन आवाज़ उनके कानों में पड़ चुकी थी, बहन से पूछा कि यह क्या आवाज़ थी? बोलीं कुछ नहीं, उन्होंने कहा मैं सुन चुका हूं तुम दोनों मुर्तद हो गए, यह कहकर बहनोई से दस्त व गिरेबां हो गए और जब उनकी बहन बचाने को आईं तो उनकी भी ख़बर ली, यहां तक कि उनका जिस्म लहू लुहान हो, गया लेकिन इस्लाम की मुहब्बत इससे बालातर थी, बोलीं कि "उमर जो बन आए करो, लेकिन इस्लाम अब दिल से नहीं निकल सकता" इन अलफ़ाज़ ने हज़रत उमर रज़ि० के दिल पर भी ख़ास असर किया, बहन की तरफ़ मुहब्बत की निगाह से देखा, उनके जिस्म से खून जारी था, यह देखकर और भी रिक़्क़त हुई, बहन से कहा कि जो किताब पढ़ी जा रही थी ज़रा मुझे देना, देखूं कि मुहम्मद (सल्ल0) क्या लाए हैं, बहन ने कहा, मुझे ख़तरा है कि कहीं तुम इस किताब की बेअदबी न करो, उन्होंने जवाब दिया कि डरो नहीं और अपने मअ़बूदों की क़सम खाई कि पढ़कर ज़रूर वापस कर देंगे, उनकी यह बात सुनकर उनकी बहन को कुछ उम्मीद हुई कि शायद उनकी हिदायत का वक़्त आ गया है, उन्होंने कहा तुम मुश्रिक और नापाक हो और इसको सिर्फ़ पाक आदमी ही छू सकता है, उमर रज़ि० गए और गुस्ल कर के आए, बहन ने उनको कुर्आन मजीद के औराक़ दिये, उमर रज़ि० ने औराक़ लिये

तो सूरए ताहा सामने थी, उसका इब्तिदाई हिस्सा पढ़ा और कहा कि यह कलाम किस क़दर उम्दा और इज़्ज़त वाला है, हज़रत ख़ब्बाब रज़ि0 जो छिपे हुए थे, यह सुनकर बाहर निकल आए और उनसे कहा ऐ उमर! मुझे उम्मीद है कि अल्लाह ने अपने नबी सल्ल0 की दुआ क़बूल की, मैंने कल ही आप सल्ल0 को यह दुआ करते हुए सुना है कि "ऐ अल्लाह हकम बिन हिशाम (अबू जह्ल) या उमर बिन अलख़त्ताब के ज़रीआ़ इस दीन की मदद फ़रमा "उमर! इस नेअ़मत की क़दर करो, उमर रज़ि0 ने कहा, ख़ब्बाब मुझे मुहम्मद (सल्ल0) की जगह का पता दो कि मैं हाज़िर होकर इस्लाम क़बूल करूं, ख़ब्बाब रज़ि0 ने पता बतलाया, यह वह ज़माना था कि रसूलुल्लाह सल्ल0 हज़रत अरक़म रज़ि0 के मकान में जो कोहे सफ़ा की तली में वाक़ेअ़ था पनाह गुज़ीं थे, हज़रत उमर रज़ि0 ने आसतानए मुबारक पर पहुंच कर दस्तक दी, चूंकि शमशीर बकफ़ थे, सहाबा रज़िअल्लाहु अ़न्हुम को तरद्दुद हुआ, लेकिन हज़रत अमीर हम्ज़ा रज़ि0 ने कहा "आने दो, वह मुख़्लिसाना आया है तो बेहतर, वर्ना उसी की तलवार से उसका सर क़लम कर दूंगा" हज़रत उमर रज़ि0 ने अंदर क़दम रखा तो रसूलुल्लाह सल्ल0 ख़ुद आगे बढ़े और उनका दामन पकड़ के फ़रमाया, क्यों उमर! किस इरादा से आया है? नुबूव्वत की पुर जलाल आवाज़ ने उनको कपकपा दिया, निहायत ख़ुज़ूअ़ के साथ अ़र्ज़ किया कि "ईमान लाने के लिये" आंहज़रत सल्ल0 बेसाख़्ता

अल्लाहु अक्बर! पुकार उठे और साथ ही तमाम सहाबा रज़ि0 ने मिल कर इस ज़ोर से अल्लाहु अक्बर का नअ़रा मारा कि मक्का की तमाम पहाड़ियां गूंज उठीं।[1]

हज़रत उमर रज़ि0 के ईमान लाने से इस्लाम की तारीख़ में नया दौर पैदा हो गया, उस वक़्त तक अगर्चे चालीस पचास आदमी इस्लाम ला चुके थे, अरब के मशहूर बहादुर हज़रत हम्ज़ा सय्यदुश शोहदा रज़ि0 ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया था, ताहम मुसलमान अपने फ़राइज़े मज़हबी एलानिया नहीं अदा कर सकते थे और कअ़बा में नमाज़ पढ़ना तो बिल्कुल नामुम्किन था, हज़रत उमर रज़ि0 के इस्लाम के साथ दफ़अ़तन यह हालत बदल गई, उन्होंने एलानिया इस्लाम ज़ाहिर किया, काफ़िरों ने अव्वल अव्वल बड़ी शिद्दत की, लेकिन वह साबित क़दमी से मुक़ाबला करते रहे, यहां तक कि मुसलमानों की जमाअत के साथ कअ़बा में जाकर नमाज़ अदा की।[2]

हबश में कम व बेश 83 मुसलमान हिज्रत करके गए थे, चंद रोज़ आराम से गुज़रने पाए थे कि यह ख़बर मशहूर हुई कि कुफ़्फ़ार ने इस्लाम क़बूल कर लिया है, यह सुनकर अक्सर सहाबा रज़ि0 ने मक्का मुअ़ज़्ज़मा का रुख़ किया लेकिन शहर के क़रीब पहुंचे तो मअ़लूम हुआ कि ग़लत ख़बर है, इसलिये बअ़ज़ लोग वापस चले गए और अक्सर

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स0 102-103, सहीहुल बुख़ारी किताब बुनयानुल कअ़बा बाब इस्लामु उमर

(2) तबक़ाते इब्ने सअ़द 3-370

छिप छिप कर मक्का में आ गए।[1]

हज़रत उस्मान रज़ि० बिन मज़ऊन की हब्शा से वापसी और मुश्रिकीने मक्का की ईज़ा रसानी

इस ग़लत इत्तिलाअ़ पर आने वालों में हज़रत उस्मान रज़ि० बिन मज़ऊन भी थे, वह अरब के क़ाएदे के मुताबिक़ वलीद बिन मुग़ीरा के ज्वार और पनाह में दाख़िल हुए, उन्होंने जब देखा कि दूसरे मुसलमान जिनको किसी कुरैशी सरदार की पनाह हासिल नहीं थी, कुरैश की ज़्यादतियों का निशाना बने हुए थे और वह वलीद की पनाह की वजह से आज़ादी और अम्न व अमान के साथ चलते फिरते थे, तो उनकी ग़ैरत ने यह गवारा नहीं किया, उन्होंने कहा कि मेरे साथी कुरैश की हर तरह की ज्यादतियों का हदफ़ बने हुए हैं और मैं एक मुश्रिक की पनाह की वजह से आज़ाद फिर रहा हूं और अपने साथियों का उनकी मुसीबत में शरीक नहीं हूं, यह मेरी एक बड़ी दीनी कमज़ोरी और बेग़ैरती है, वह वलीद के पास गए और कहा कि आपने अपनी ज़िम्मादारी पूरी कर दी, मैं आपका ज्वार आपको वापस करता हूं, अब आप पर मेरी कोई ज़िम्मादारी नहीं है, वलीद ने कहा कि मेरे अज़ीज़! क्या मेरी क़ौम में से किसी ने तुमको कुछ तकलीफ़ पहुंचाई? हज़रत उस्मान ने कहा कि नहीं, लेकिन अब मुझे अल्लाह के ज्वार के सिवा किसी का ज्वार गवारा नहीं, वलीद ने कहा कि अच्छा बैतुल्लाह के

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स0 113

पास जाकर एलान कर दो कि तुम अब मेरे ज्वार में नहीं हो, और अब मैं बरियुज़्ज़िम्मा हूं, ताकि मुझ पर तुम्हारी हिफ़ाज़त की कोई ज़िम्मादारी बाक़ी न रहे, चुनांचे दोनों बैतुल्लाह की तरफ़ गए, वलीद ने कहा कि साहिबो! उस्मान मेरा ज्वार मुझे वापस करते हैं, हज़रत उस्मान ने कहा कि यह सही है, मैंने वलीद को पूरा वफ़ादार और शरीफ़ पाया और मुझे उनके ज्वार की कोई शिकायत नहीं, लेकिन मेरा जी चाहता है कि मैं अल्लाह के सिवा और किसी की हिमायत में न रहूं, हज़रत उस्मान रज़ि0 बिन मज़ऊन वहां से चले तो कुरैश की एक मजलिस गर्म थी, अरब का एक मशहूर शाइर लबीद अपना एक क़सीदा सुना रहा था, उसके एक शेअ़र का पहला मिस्रअ़ था أَلَا كُلُّ شَيْءٍ مَا خَلَا اللّٰهَ بَاطِلُ यअ़नी "अल्लाह के सिवा हर चीज़ बे हक़ीक़त है" हज़रत उस्मान रज़ि0 ने कहा सच है, लबीद ने दूसरा मिस्रअ़ पढ़ाः "وَكُلُّ نَعِيْمٍ لَا مُحَالَةَ زَائِلُ" "और हर ऐश एक न एक दिन फ़ना हाने वाला है।" हज़रत उस्मान रज़ि0 ने कहा कि यह ग़लत है, जन्नत का ऐश फ़ना होने वाला नहीं, अरब के सिवा और मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमान उसकी तर्दीद के आदी न थे, लबीद ने कहा कि ऐ सरदाराने कुरैश! इससे पहले तो हमारी मज्लिस में ऐसी बातें नहीं होती थीं, इस तरह के लोग कब से पैदा हो गए हैं, (जो बर्मला तर्दीद करते है) एक शख़्स ने कहा कि कुछ दिनों से हमारे यहां कम समझ लोगों की एक जमाअत पैदा हो गई है, जिन्होंने

हमारे दीन को तर्क कर दिया है, आप कुछ ख़्याल न कीजिये, हज़रत उस्मान रज़ि0 ने इस पर कुछ कहा और बात बढ़ी, एक शख़्स ने उनके मुंह पर एक तमांचा मारा जिससे उनकी एक आंख जाती रही, वलीद यह सब बैठा देख रहा था, उसने कहा मेरे अज़ीज़! तुमने ख़्वाहमख़्वाह अपनी आंख खोई, अगर तुम मेरी हिमायत में रहते तो क्यों इसकी नौबत आती, हज़रत उस्मान रज़ि0 ने कहा कि मेरी दूसरी आंख को भी इस आंख पर रश्क आ रहा है और इसको भी इसकी तमन्ना है, वलीद ने कहा कि अब भी मौक़ा है अगर चाहो तो मेरे ज्वार में आ जाओ, हज़रत उस्मान ने साफ़ इंकार कर दिया।[1]

कुरैश की जानिब से बनी हाशिम का मुक़ातआ

कुरैश देखते थे कि इस रोक टोक पर भी इस्लाम का दाइरा फैलता जाता है, उमर रज़ि0 और हम्ज़ा रज़ि0 जैसे लोग ईमान ला चुके हैं, नजाशी ने मुसलमानों को पनाह दी, सुफ़रा बे नैले व मराम वापस आए, मुसलमानों की तअ़दाद में इज़ाफ़ा होता जाता है, इसलिये अब यह तदबीर सोची कि आंहज़रत सल्ल0 और आपके ख़ानदान को महसूर करके तबाह कर दिया जाए, चुनांचे तमाम क़बाइल ने एक मुआहदा मुरत्तब किया कि कोई शख़्स ख़ानदाने बनी हाशिम से न क़राबत करेगा, न उनके हाथ ख़रीद व फ़रोख़्त करेगा, न उनसे मिलेगा, न उनके पास खाने पीने का सामान जाने

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-370

देगा, जब तक कि वह आंहज़रत सल्ल0 को क़त्ल के लिये हवाला न कर दें, यह मुआहदा दरे कअ्बा पर आवेज़ां किया गया।[1]

अबू तालिब मजबूर होकर तमाम ख़ानदाने बनी हाशिम के साथ शिअ़बे अबी तालिब में पनाह गुज़ीं हुए, तीन साल तक बनू हाशिम ने इस हिसार में ज़िंदगी बसर की, यह ज़माना ऐसा सख़्त गुज़रा कि तलह के पत्ते खा खाकर रहते थे, हदीसों में जो सहाबए किराम रज़ि0 की ज़बान से मज़कूर है कि हम तलह की पत्तियां खा खाकर बसर करते थे, यह उसी ज़माना का वाकिआ है, हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0 का बयान है कि एक रात को सूखा हुआ चमड़ा हाथ आ गया, मैंने उसको पानी से धोया फिर आग पर भूना और पानी मिलाकर खाया, इब्ने सअ़द ने रिवायत की है कि बच्चे जब भूक से रोते थे तो बाहर आवाज़ आती थी, कुरैश सुन सुनकर खुश होते थे, लेकिन बअ्ज़ रहम दिलों को तरस भी आता था।[2] एक दिन हकीम बिन हिज़ाम ने जो हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के भतीजे थे, थोड़े से गेहूं अपने गुलाम के हाथ हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के पास भेजे, राह में अबू जह्ल ने देख लिया और छीन लेना चाहा, इत्तिफ़ाक़ से अबुल बोह्तरी कहीं से आ गया, वह अगर्चे काफ़िर था, उसको रहम आया और कहा कि एक शख़्स अपनी फूफी को कुछ खाने के लिये भेजता है, तू क्यों रोकता है।[3]

(1) ज़ादुल मआ़द 3-29 (2) अर्रौज़ुल अन्फ़ 1-220 (3) सीरत इब्ने हिशाम 1-354, सीरत ज़हबी, स0-142

अह्द नामा की तन्सीख़ और मुक़ातआ का ख़ातमा

मुत्तसिल तीन बरस तक आंहज़रत सल्ल0 और तमाम आले हाशिम ने यह मुसीबतें झेलीं, बिल आख़िर दुशमनों को ही रहम आया और ख़ुद उन्हीं की तरफ़ से इस मुआहदा के तोड़ने की तहरीक नश्र हुई, हिशाम मख़्ज़ूमी ख़ानदाने बनी हाशिम का क़रीबी रिशतादार और अपने क़बीले में मुम्ताज़ था, वह चोरी छिपे बनू हाशिम को ग़ल्ला वग़ैरा भेजता रहता था, एक दिन वह जुबैर के पास जो अब्दुल मुत्तलिब के नवासे थे गया और कहा, क्यों जुबैर तुमको यह पसंद है कि तुम खाओ पियो, हर क़िस्म का लुत्फ़ उठाओ और तुम्हारे नानिहाल वालों को एक दाना तक नसीब न हो, जुबैर ने कहा क्या करूं तन्हा हूं, एक शख़्स भी मेरा साथ दे तो मैं ज़ालिमाना मुआहदा को फाड़ कर फेंक दूं, हिशाम ने कहा मैं मौजूद हूं, दोनों मिलकर मुत्इम बिन अदी के पास गए, बोहतरी इब्ने हिशाम, ज़म्आ बिन अल अस्वद ने भी साथ दिया, दूसरे दिन सब मिलकर हरम गए, जुबैर ने सब लोगों को मुख़ातब करके कहाः ऐ अह्ले मक्का यह क्या इंसाफ़ है, हम लोग आराम से बसर करें और बनू हाशिम को आब व दाना नसीब न हो, ख़ुदा की क़सम जब तक यह ज़ालिमाना मुआहदा चाक न कर दिया जाएगा मैं बाज़ न आऊंगा, अबू जह्ल बराबर से बोला, हरगिज़ मुआहदा को कोई हाथ नहीं लगा सकता, ज़म्आ ने कहा तू झूट कहता है जब यह लिखा गया था उस वक़्त भी हम राज़ी न थे।[1]

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-374, 375, 376

उधर आंहज़रत सल्ल0 ने अबू तालिब को इत्तिला दी थी कि मुआहदा को दीमक खा गई है, जब लोगों ने उसको देखा तो ऐसा ही था, सिर्फ़ "بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ" बाक़ी रह गया था।[1]

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के साथ कुफ़्फ़ारे कुरैश का मुआमला

कुफ़्फ़ार की ईज़ा रसानी अब कमज़ोरों और बेकसों पर ही महदूद न थी, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 का क़बीला मुअज़्ज़ज़ और ताक़तवर क़बीला था, उनके यार और अंसार भी कम थे, ताहम वह कुफ़्फ़ार के जुल्म से तंग आ गए और बिलआख़िर हबश की तरफ़ हिज्रत का इरादा किया, बरकुल ग़िमाद जो मक्का मुअ़ज़्ज़मा से यमन की सिम्त पांच दिन की राह पर है, वहां तक पहुंचे थे कि इब्नुद्दुग़ुन्ना से मुलाक़ात हो गई जो क़बीला क़ारा का रईस था, उसने पूछा कहां? हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने कहा "मेरी क़ौम मुझको रहने नहीं देती, चाहता हूं कि कहीं अलग जाकर ख़ुदा की इबादत करूंगा।" इब्नुद्दुग़ुन्ना ने कहा "यह नहीं हो सकता कि तुम जैसा शख़्स मक्का से निकल जाए, मैं तुम को अपनी पनाह में लेता हूं।" तो हज़रत अबू बक्र रज़ि0 उसके साथ वापस आए, इब्नुद्दुग़ुन्ना मक्का पहुंच कर तमाम सरदाराने कुरैश से मिला और कहाः ऐसे शख़्स को निकालते हो जो मेहमान नवाज़ है, मुफ़्लिसों का मददगार है, रिशता-

(1) ज़ादुल मआ़द 3-30, सहीह बुख़ारी में इस मुहासरा का ज़िक्र मौजूद है, मुलाहज़ा हो किताबुल मनासिक बाब दुख़ूलुन्नबी सल्ल0 मक्का, व बाब बुन्यानुल कअ़बा, बाब तकासुमुल मुश्रिकीन अलन्नबी सल्ल0

-दारों को पालता है, मुसीबतों में काम आता है, कुरैश ने कहा लेकिन शर्त यह है कि अबू बक्र (रज़ि0) नमाज़ों में चुपके जो चाहें पढ़ें, आवाज़ से कुर्आन पढ़ते हैं तो हमारी औरतों और बच्चों पर असर पड़ता है, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने चंद रोज़ यह पाबंदी इख़्तियार की, लेकिन आख़िर उन्होंने घर के पास एक मस्जिद बना ली और उसमें खुशूअ् व खुजूअ् के साथ बआवाज़ कुर्आन पढ़ते थे, वह निहायत रक़ीकुल क़ल्ब थे, कुर्आन पढ़ते तो बेइख़्तियार रोते, औरतें और बच्चे उनको देखते और मुतअस्सिर होते, कुरैश ने इब्नुद्दुग़ुन्ना से शिकायत की, उसने हज़रत अबू बक्र रज़ि0 से कहा कि अब मैं तुम्हारी हिफ़ाज़त का ज़िम्मादार नहीं हो सकता, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने कहा "मुझको ख़ुदा की हिफ़ाज़त बस है, मैं तुम्हारे ज्वार से इस्तीअ़फ़ा देता हूं।[1]

एक रोज़ नबी सल्ल0 मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए, वहां मुश्रिक सरदार बैठे हुए थे, अबू जह्ल ने नबी सल्ल0 को देखा और तमस्ख़ुर से कहा "अब्दे मनाफ़ वालो! देखो तुम्हारा नबी आ गया।"

उक़्बा बिन रबीआ बोलाः हमें क्या इंकार है, हम में से कोई नबी बन बैठे, कोई फ़रिशता कहलाए, नबी सल्ल0 यह बातें सुन कर लौटे और उनके पास आए।

पहले उक़्बा से फ़रमाया "उक़्बा तूने ख़ुदा और रसूल (सल्ल0) की हिमायत कभी न की, तू अपनी ही बात की पिच पर अड़ा रहा।"

(1) सहीह बुख़ारी किताबुल फ़ज़ाइल बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल0 व अस्हाबुहू इलल मदीना 1-552

फिर कुरैश से फ़रमायाः "तुम्हारे लिये वह साअ़त नज़दीक आ रही है कि जिस दीन का तुम इंकार करते हो, आख़िरश उसी में दाख़िल हो जाओगे।"

नाज़िरीन इसी किताब में देखेंगे कि यह पेशगोई क्योंकर पूरी हुई।(1)

अबू तालिब और हज़रत ख़दीजा रज़ि० की वफ़ात

10 हि० नुबूव्वत में नबी सल्ल० के चचा अबू तालिब का जो हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० के वालिद थे, इंतिक़ाल हो गया।(2)

अबू तालिब ने लड़कपन से नबी सल्ल० की तरबियत की थी और जब से आंहज़रत सल्ल० ने नुबूव्वत की दावत और मुनादी शुरू कर दी थी वह बराबर मददगार रहे थे, इसलिये नबी सल्ल० को उनके मरने का सदमा हुआ।(3)

इनसे तीन दिन पीछे नबी सल्ल० की प्यारी बीवी हज़रत ताहिरा ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि० ने इंतिक़ाल फ़रमाया।(4) इस बीवी ने अपना सारा माल व ज़र नबी सल्ल० की ख़ुशी पर कुर्बान और राहे ख़ुदा में सर्फ़ कर दिया था, यह सबसे पहले इस्लाम लाई थीं, जिब्रईल अलै० ने इन बीवी को ख़ुदा का सलाम पहुंचाया था, इनकी बीवी के गुज़र जाने का रंज नबी सल्ल० को बहुत हुआ।(5)

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-65 बहवाला तारीख़े तबरी (2) फ़ुतुल बारी 7-194 (3) सहीहैन में अबू तालिब की नुस्रत व इआनत का ज़िक्र मौजूद है। (4) फ़ुतुल बारी 7-224 (5) सहीहुल बुख़ारी किताब मनाकिबुल अंसार, बाब तज़ौवुजुन्नबी सल्ल० ख़दीजा व फ़ज़्लुहा, मुस्नद अहमद 6-118

अब कुरैश ने नबी सल्ल0 को ज़्यादातर सताना शुरू कर दिया, एक दफ़ा एक शरीर ने नबी सल्ल0 के सर पर कीचड़ फेंक दिया, आंहज़रत सल्ल0 उसी तरह घर में दाख़िल हुए, नबी सल्ल0 की बेटी उठीं, वह सर धुलाती जाती थीं और रोती जाती थीं, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "प्यारी बेटी तुम क्यों रोती हो, तुम्हारे बाप की हिफ़ाज़त खुदा खुद फ़रमाएगा।[1]

अगर्चे अबू तालिब का सहारा जाता रहा, अगर्चे ख़दीजा जैसी बीवी जो मुसीबतों में और तकलीफ़ों में निहायत ग़मगुसार थीं जुदा हो गईं, नबी सल्ल0 ने अब ज़्यादा जोश से वअ्ज़ का काम शुरू किया।

ताइफ़ का सफ़र और सख़्त अज़ीयतों का सामना

चुनांचे थोड़े ही दिनों बाद नबी सल्ल0 मक्का से निकले और वअ्ज़ के लिये ताइफ़ तशरीफ़ ले गए, नबी सल्ल0 के साथ इस सफ़र में ज़ैद बिन हारसा रज़ि0 थे, मक्का और ताइफ़ के दर्मियान जितने क़बीले थे सबको वअ्ज़ सुनाते, तौहीद की मुनादी करते हुए नबी सल्ल0 प्यादा पा ताइफ़ पहुंचे, ताइफ़ में बनू सक़ीफ़ आबाद थे, सर सब्ज़ मुल्क और सर्द पहाड़ पर रहने की वजह से उनके गुरूर की कोई हद न थी, अब्द या लैल, मसऊद, हबीब, तीनों भाई वहां के सरदार थे, नबी सल्ल0 पहले उन्हीं से मिले और उन्हें इस्लाम की दावत फ़रमाई, उनमें से एक बोलाः "मैं कअ्बा के सामने दाढ़ी मुंडवा दूंगा अगर तुझे अल्लाह ने रसूल बनाया हो।"

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-416

दूसरा बोलाः "क्या खुदा को तेरे सिवा और कोई भी रसूल बनाने को न मिला, जिसे चढ़ने की सवारी भी मुयस्सर नहीं.....उसे रसूल बनाना था तो किसी हाकिम या सरदार को बनाया होता।" तीसरा बोलाः "मैं तुझसे बात ही नहीं करने का, क्योंकि अगर तू खुदा का रसूल है जैसा कि तू कहता है, तब तो यह बहुत ख़तरनाक बात है कि मैं तेरे कलाम को रद्द करूं और अगर तू खुदा पर झूट बोलता है तो मुझे शायां नहीं कि तुझसे बात करूं।"

नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "अब मैं तुम से सिर्फ़ यह चाहता हूं कि अपने ख़्यालात अपने ही पास रखो, ऐसा न हो कि यह ख़्यालात दूसरे लोगों के ठोकर खाने का सबब बन जाएं।"

नबी सल्ल0 ने वअ्ज़ कहना शुरू फ़रमाया, उन सरदारों ने अपने गुलामों और शहर के लड़कों को सिखा दिया, वह वअ्ज़ के वक़्त नबी सल्ल0 पर इतने पत्थर फेंकते कि हुजूर सल्ल0 लहू में तर बतर हो जाते, खून बह बह कर जूतों में जम जाता और वुजू के लिये पांव से जूता निकालना मुश्किल हो जाता।

एक दफ़ा बदमआ़शों और औबाशों ने नबी सल्ल0 को इस क़दर गालियां दीं, तालियां बजाईं, चीख़ें लगाईं कि खुदा के नबी सल्ल0 एक मकान के इहाते में जाने पर मजबूर हो गये, यह जगह उत्बा व शैबा फ़रज़ंदाने रबीआ़ की थी, उन्होंने दूर से इस हालत को देखा और नबी सल्ल0 पर

तरस खाकर अपने गुलाम अ़द्दास को कहा कि एक प्लेट में अंगूर रखकर उस शख़्स को दे आओ, गुलाम ने अंगूर नबी सल्ल0 के सामने लाकर रख दिये, नबी सल्ल0 ने अंगूरों की तरफ़ हाथ बढ़ाया और ज़बान से फ़रमाया "بسم اللہ" और फिर अंगूर खाने शुरू किये।

अ़द्दास ने हैरत से नबी सल्ल0 की तरफ़ देखा और फिर कहा "यह ऐसा कलाम है कि यहां के बाशिंदे नहीं बोला करते।"

नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "तुम कहां के हो और तुम्हारा मज़हब क्या है?" अ़द्दास ने जवाब दिया "मैं ईसाई हूं और नैनवा का बाशिंदा हूं।"

नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "क्या मर्दे सालेह यूनुस अलै0 बिन मत्ता के शहर के बाशिंदे हो? अ़द्दास ने कहाः "आपको क्या ख़बर है कि यूनुस बिन मत्ता कौन था और कैसा था? नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "वह मेरा भाई है वह भी नबी था और मैं भी नबी हूं, अ़द्दास यह सुनते ही झुक पड़ा और उसने नबी सल्ल0 का सर, हाथ, क़दम चूम लिये। उत्बा और शैबा ने दूर से गुलाम को ऐसा करते देखा और आपस में कहने लगे, लो गुलाम तो हाथ से गया, जब अ़द्दास अपने आक़ा के पास लौट कर गया तो उन्होंने कहा "कम्बख़्त तुझे क्या हो गया था कि उस शख़्स के हाथ, पांव, सर चूमने लग गया था।"

अ़द्दास ने कहा "हुजूरे आली! आज उस शख़्स से

बेहतर रूए ज़मीन पर कोई नहीं, उन्होंने मुझे ऐसी बात बताई जो सिर्फ़ नबी ही बता सकता है।" उन्होंने अ़द्दास को डांट दिया कि ख़बरदार! कहीं अपना दीन न छोड़ बैठना तेरा दीन तो उसके दीन से बेहतर है।

उसी मक़ाम पर एक दफ़ा वअ़ज़ करते हुए खुदा के रसूल सल्ल0 के इतनी चोटें लगीं कि हुज़ूर सल्ल0 बेहोश होकर गिर पड़े, ज़ैद ने आप सल्ल0 को अपनी पीठ पर उठाया, आबादी से बाहर ले गए, पानी के छींटे देने से होश आया।

इस सफ़र में इतनी तकलीफों और ईज़ाओं के बाद और एक शख़्स तक के मुसलमान न होने के रंज और सदमा के वक़्त भी नबी सल्ल0 का दिल खुदा की अज़मत और मुहब्बत से भरपूर था और उस वक़्त जो दुआ हुज़ूर सल्ल0 ने मांगी उसके अलफ़ाज़ यह हैं:

"اَللّٰهُمَّ اِلَيْکَ اَشْكُوْ ضَعْفَ قُوَّتِیْ، وَقِلَّةَ حِيْلَتِیْ، وَهَوَانِیْ عَلَى النَّاسِ، يَاأَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ، أَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ، وَأَنْتَ رَبِّیْ، اِلٰى مَنْ تَكِلُنِیْ، اِلٰى بَعِيْدٍ يَتَجَهَّمُنِیْ، أَوْ اِلٰى عَدُوٍّ مَّلَّكْتَهٗ أَمْرِیْ، اِنْ لَّمْ يَكُنْ عَلَیَّ غَضَبٌ فَلَا اُبَالِیْ، وَلٰكِنْ عَافِيَتُکَ هِیَ أَوْسَعُ لِیْ، أَعُوْذُبِنُوْرِ وَجْهِکَ الَّذِیْ أَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ، وَصَلَحَ عَلَيْهِ أَمْرُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، مِنْ أَنْ يُّنْزِلَ بِیْ غَضَبَکَ أَوْيَحِلَّ عَلَیَّ سَخَطُکَ، لَکَ الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِکَ."

"इलाही अपनी कमज़ोरी, बे सर व सामानी और लोगों की तहक़ीर की बाबत तेरे सामने फ़रयाद करता हूं, तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है, दरमांदा आजिज़ों का मालिक तू ही है और मेरा मालिक भी तू ही है, मुझे किस के सिपुर्द किया जाता है, क्या बेगाना, तुर्शरू के या उस दुशमन के जो काम पर क़ाबू रखा है, लेकिन जब मुझ पर तेरा ग़ज़ब नहीं तो मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं, क्योंकि तेरी आफ़ियत मेरे लिये ज़्यादा वसीअ़ है, मैं तेरी ज़ात के नूर से पनाह चाहता हूं, जिससे सब तारीकियां रौशन हो जाती हैं और दीन व दुन्या के काम उससे ठीक हो जाते हैं, कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर उतरे या तेरी नाराज़गी वारिद हो, मुझे तेरी रज़ामंदी और खुशनूदी दरकार है और नेकी करने और बदी से बचने की ताक़त मुझे तेरी ही तरफ़ से मिलती है।"

नबी सल्ल0 ने ताइफ़ से वापस होते हुए यह भी फ़रमाया मैं इन लोगों की तबाही के लिये क्यों दुआ करूं अगर यह लोग खुदा पर ईमान नहीं लाए तो क्या हुआ? उम्मीद है कि आइंदा नस्लें ज़रूर एक खुदा पर ईमान लाने वाली होंगी।[1]

(1) इस वाक़िआ को इमाम बुख़ारी रह0 ने अपनी सहीह में इख़्तिसार के साथ ज़िक्र फ़रमाया है। इमाम ज़हबी रह0 ने अस्सीरतुन्नबवीया 185 ता 188 में, और इब्ने हिशाम ने अस्सीरतुन्नबवीया 1-419 ता 421 में तफ़सील से इसको बयान किया है, इमाम हैसमी ने भी मज्मउज़्ज़वाइद 6-35 में इसका तज़किरा किया है, इमाम तबरानी ने भी सहीह सनद के साथ इसको बयान फ़रमाया है।

क़बाइले अरब को दावते इस्लाम

मक्का में वापस आकर नबी सल्ल0 ने अब ऐसा करना शुरू किया कि मुख़्तलिफ़ क़बीलों की सुकूनत गाहों में तशरीफ़ ले जाते या मक्का से बाहर चले जाते और जो कोई मुसाफ़िर आता या मिल जाता उसे ईमान और खुदा तर्सी का वअ्ज़ फ़रमाते।[1]

उन्ही अय्याम में क़बीलए बनू किंदा में तशरीफ़ ले गए सरदारे क़बीला मुलीह था और क़बीला बनू अब्दुल्लाह के यहां भी पहुंचे उनसे फ़रमाया कि तुम्हारे बाप का नाम अब्दुल्लाह था तुम भी इस्म बा मुसम्मा हो जाओ, क़बीला बनू हनीफ़ा के घरों में तशरीफ़ ले गए उन्होंने सारे अरब में सबसे बदतर तरीक़ पर नबी सल्ल0 का इंकार किया, क़बीला बनू आमिर बिन सअ़सआ़ के पास गए, सरदारे क़बीला का नाम बुहैरा बिन फ़िरास था और उसने दावते इस्लाम सुन कर नबी सल्ल0 से पूछा भला अगर हम तेरी बात मान लें और तू मुख़ालिफ़ीन पर ग़ालिब आ जाए तो क्या वादा करता है कि तेरे बाद यह अम्र मुझसे मुतअ़ल्लिक़ होगा? नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "यह तो खुदा के इख़्तियार में है, वह जिसे चाहेगा मेरे बाद उसे मुक़र्रर करेगा" बुहैरा बोलाः खूब इस वक़्त तो अरब के सामने सीना सिपर हम बनें और जब तेरा काम बन जाए तो मज़े कोई और उड़ाए, जा! हमको तेरे साथ कोई सरोकार नहीं, क़बाइल के सफ़र

(1) अम्ताउल अस्माअ़ लिल मक़रीज़ी 1-30

में हुज़ूर सल्ल0 के रफ़ीक़े तरीक़ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 थे।[1]

उन्ही अय्याम में नबी सल्ल0 को सुवैद बिन सामित मिला, उसका लक़ब अपनी क़ौम में कामिल था, नबी सल्ल0 ने उसे दावते इस्लाम फ़रमाई, वह बोला शायद आपके पास वही कुछ है जो मेरे पास है, नबी सल्ल0 ने पूछा, तुम्हारे पास क्या है? वह बोलाः "हिक्मते लुक़्मान" नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः बयान करो, उसने कुछ उम्दा अशआ़र सुनाए, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः यह अच्छा कलाम है, लेकिन मेरे पास कुर्आन है जो इससे अफ़ज़ल तर है और हिदायत व नूर है" इसके बाद नबी सल्ल0 ने उसे कुर्आन सुनाया और वह बे तअम्मुल इस्लाम ले आया, जब यसरिब लौट कर गया तो क़ौमे ख़ज़रज ने उसे क़त्ल कर डाला।[2]

उन्ही अय्याम में अबुल हैसर अनस बिन राफ़ेअ़ मक्का आया और उसके साथ बनी अब्दुल अश्हल के भी चंद नौजवान थे जिनमें अयास बिन मुआज़ भी था, यह लोग कुरैश के साथ अपनी क़ौम ख़ज़रज की तरफ़ से मुआहदा करने आए थे, नबी सल्ल0 उनके पास गए और जाकर फ़रमायाः

"मेरे पास ऐसी चीज़ है जिसमें तुम सबकी बहबूद है क्या तुम्हें कुछ रग़बत है" वह बोले ऐसी क्या चीज़ है? आपने फ़रमाया "अल्लाह का रसूल हूं, मख़्लूक़ की तरफ़

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-424, 425

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-426, 427

मबऊस हूं, बंदगाने खुदा को दावत देता हूं कि वह खुदा ही की इबादत करें और शिर्क न करें, मुझ पर खुदा ने किताब नाज़िल की है" फिर उनके सामने इस्लाम के उसूल बयान फ़रमाए और क़ुर्आन भी पढ़ कर सुनाया, अयास बिन मुआज़ अभी जवान था सुनते ही बोलाः "ऐ मेरी क़ौम! बुखुदा यह तुम्हारे लिये इस मक़सद से बेहतर है जिसके लिये तुम यहां आए हो।"

अनस बिन राफ़ेअ़ ने कंकरियों की मुट्ठी भर कर उठाई और अयास के मुंह पर फेंक मारी और कहा बस चुप रह, हम इस काम के लिये तो नहीं आए, रसूलुल्लाह सल्ल0 उठकर चले गए, यह वाक़िआ जंगे बुआस से जो औस व खज़रज में हुई, पहले का है, अयास वापस जाकर चंद रोज़ के बाद मर गया, मरते वक़्त उसकी ज़बान पर तस्बीह व तहमीद व तहलील व तक्बीर जारी थे, मरहूम के दिल में नबी सल्ल0 के इसी वअ़ज़ से इस्लाम का बीज बो गया था जो मरते वक़्त फल फूल ले आया था।[1]

उन्ही अय्याम में ज़िम्माद अज़दी मक्का में आया यह यमन का बाशिंदा था और अरब का मशहूर जादूगर था, जब उसने सुना कि मुहम्मद (सल्ल0) पर जिन्नात का असर है तो उसने क़ुरैश से कहा कि मैं मुहम्मद (सल्ल0) का इलाज अपने मंतर से कर सकता हूं, यह नबी सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा "मुहम्मद (सल्ल0) आओ

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-427, 428, मुस्नद अहमद 5-427, इब्ने हजर ने इसकी सनद की तौसीक फरमाई है, असद इसाबा 1-146

तुम्हें मंतर सुनाऊं, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि पहले मुझसे सुन लौं, फिर आंहज़रत सल्ल0 ने उसे सुनाया:

"اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ، وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ، وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَمَّا بَعْدُ:"

"सब तअ़रीफ़ अल्लाह के वास्ते है, हम उसकी नेअ़मतों का शुक्र करते हैं, और हर काम में उसकी इआनत चाहते हैं, जिसे खुदा राह दिखाता है उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे खुदा ही रास्ता न दिखाए उसकी कोई रहबरी नहीं कर सकता, मेरी शहादत यह है कि खुदा के सिवा इबादत के लाइक़ कोई भी नहीं, वह यक्ता है, उसका कोई शरीक नहीं, मैं यह भी ज़ाहिर करता हूं कि मुहम्मद (सल्ल0) खुदा का बंदा और रसूल है, उसके बाद मुद्दआ यह है।"

ज़िमाद ने इस क़दर सुना था कि बोल उठा कि इन्हीं कलिमात को फिर सुना दीजिये, वही तीन दफ़ा उसने इन्ही कलिमात को सुना फिर बेइख़्तियार बोल उठा, मैंने बहुतेरे काहिन देखे और साहिर देखे, शाइर सुने, लेकिन ऐसा कलाम तो मैंने किसी से भी न सुना, यह कलिमात तो एक अत्थाह समंदर जैसे हैं, मुहम्मद (सल्ल0)! खुदारा हाथ बढ़ाइये कि मैं इस्लाम की बैअ़त कर लूं।[1]

उन्ही दिनों तुफ़ैल बिन अम्र मक्का में आया यह

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुआ, बाब तख़्फ़ीफ़ुस्सलात वलख़ुत्बा

क़बीलए दौस का सरदार था और नवाहिये यमन में उनके ख़ानदान में रईसाना हुकूमत थी, तुफ़ैल बज़ाते खुद शाइर, दानिशमंद शख़्स था, अहले मक्का ने आबादी से बाहर जाकर उसका इस्तिक़बाल किया और अज़ूला पैमाना पर उसकी ख़िदमत और तवाज़ोअ् की, तुफ़ैल का बयान है:

"मुझे अहले मक्का ने यह भी बताया कि यह शख़्स जो हम में से निकला है इससे ज़रा बचना, इसे जादू आता है, जादू से बाप बेटे, ज़न व शौहर, भाई भाई में जुदाई डाल देता है, हमारी जमईयत को परेशान और हमारे काम अबतर कर दिये हैं, हम नहीं चाहते हैं, कि तुम्हारी क़ौम पर भी ऐसी ही कोई मुसीबत पड़े, इसलिये हमारी ज़ोर से यह नसीहत है कि न उसके पास जाना, न उसकी बात सुनना और न खुद बातचीत करना।"

"यह बातें उन्होंने ऐसी उम्दगी से मेरे ज़ेहन नशीन कर दीं कि जब मैं कअ़बा में जाना चाहता तो कानों को रूई से बंद कर लेता कि मुहम्मद (सल्ल0) की आवाज़ की भनक मेरे कान में न पड़ जाए, एक रोज़ मैं सुब्ह ही ख़ानए कअ़बा में गया, नबी सल्ल0 नमाज़ पढ़ रहे थे, चूंकि खुदा की मशीय्यत यह थी कि उनकी आवाज़ मेरी समाअ़त तक ज़रूर पहुंचे, इसलिये मैंने सुना कि एक अजीब कलाम वह पढ़ रहे हैं उस वक़्त मैं अपने आपको मलामत करने लगा कि मैं खुद शाइर हूं, बा इल्म

हूं, अच्छे बुरे की तमीज़ रखता हूं, फिर क्या वजह है? और कौनसी रोक है कि मैं उनकी बात न सुनूं? अच्छी बात होगी तो मानूंगा, वर्ना नहीं मानूंगा, मैं यह इरादा करके ठहर गया, जब नबी सल्ल0 वापस घर को चले तो मैं भी पीछे पीछे हो लिया और जब मकान पर हाज़िर हुआ तो नबी सल्ल0 को अपना वाक़िआ मक्का में आने, लोगों के बहकाने और कानों में रूई लगाने और आज हुज़ूर सल्ल0 की ज़बान से कुछ सुन पाने का सुनाया और अ़र्ज़ किया कि मुझे अपनी बात सुनाइये, नबी सल्ल0 ने कुर्आन पढ़ा, बख़ुदा मैंने ऐसा पाकीज़ा कलाम कभी सुना ही न था जो इस क़दर नेकी और इंसाफ़ की हिदायत करता हो।"

अलग़र्ज़ तुफ़ैल उसी वक़्त मुसलमान हो गए, जिसे कुरैश बात बात में मख़्दूम व मुताअ् कहते थे वह बात की बात में मुहम्मद सल्ल0 का दिल व जान से ख़ादिम और मुतीअ् बन गया, कुरैश को ऐसे शख़्स का मुसलमान होना निहायत ही शाक़ व नागवार गुज़रा।[1]

अबू ज़र रज़ि0 अपने शहर यसरिब ही में थे कि उन्होंने नबी सल्ल0 के मुतअ़ल्लिक़ कुछ उड़ती सी ख़बर सुनी उन्होंने अपने भाई से कहा तुम जाओ मक्का में उस शख़्स से मिल कर आओ।

अनीस बिरादरे अबू ज़र एक मशहूर फ़सीह शाइर,

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़िस्सा दौस वत्तुफ़ैल बिन अम्र में बहुत इख़्तिसार से यह वाक़िआ मरवी है, तफ़सील इब्ने सअ़द 1-353, और शर्हुल मवाहिब 4-37 में मुलाहज़ा हो।

ज़बान आवर था वह मक्का में आया, नबी सल्ल0 से मिला, फिर भाई को जा बताया कि मैंने मुहम्मद (सल्ल0) को एक ऐसा शख़्स पाया जो नेकियों के करने का और शर से बचने का हुक्म देता है।

अबू ज़र रज़ि0 बोले इतनी सी बात से कुछ तसल्ली नहीं होती, आख़िर खुद पैदल चलकर मक्का पहुंचे, हज़रत अबू ज़र रज़ि0 को नबी सल्ल0 की शनाख़्त न थी और किसी से दरयाफ़्त करना भी वह पसंद न करते थे, ज़मज़म का पानी पी कर कअूबा ही में लेट रहे, अली मुर्तज़ा रज़ि0 आए, उन्होंने पास खड़े होकर कहा कि यह तो कोई मुसाफ़िर मअ़लूम होता है, बोले हां! अली मुर्तज़ा रज़ि0 ने कहा अच्छा मेरे यहां चलो, यह रात वहीं रहे, न अली मुर्तज़ा रज़ि0 ने कुछ पूछा, न अबू ज़र रज़ि0 ने कुछ कहा, सुब्ह हुई, अबू ज़र रज़ि0 फिर कअूबा में आ गए, दिल में आंहज़रत सल्ल0 की तलाश थी, मगर किसी से दरयाफ़्त न करते थे, अली मुर्तज़ा रज़ि0 फिर आ पहुंचे उन्होंने फ़रमाया कि शायद तुम्हें अपना ठिकाना न मिला, अबू ज़र रज़ि0 बोले हां! अली मुर्तज़ा रज़ि0 फिर साथ ले गए, अब उन्होंने पूछा, तुम कौन हो और क्यों यहां आए हो? अबू ज़र रज़ि0 ने कहा राज़ रखो तो मैं बता देता हूं, अली रज़ि0 ने वादा किया।

अबू ज़र रज़ि0 ने कहा मैंने सुना है कि इस शहर में एक शख़्स है जो अपने को नबीयल्लाह बताता है.....मैंने

अपने भाई को भेजा था, वह यहां से कुछ तसल्ली बख़्श बात लेकर न गया, इसलिये ख़ुद आया हूं।

अली मुर्तज़ा रज़ि0 ने कहा तुम खूब आए और खूब हुआ कि मुझसे मिले, देखो मैं उन्हीं की ख़िदमत में जा रहा हूं, मेरे साथ चलो, मैं अंदर जाकर देख लूंगा, अगर उस वक़्त मिलना मुनासिब न होगा तो मैं दीवार से लग कर खड़ा हो जाऊंगा, गोया जूता दुरुस्त कर रहा हूं।

अलग़र्ज़ अबू ज़र रज़ि0, अली मुर्तज़ा रज़ि0 के साथ ख़िदमते नबवी सल्ल0 में पहुंचे और अ़र्ज़ किया मुझे बताया जाए कि इस्लाम क्या है?

नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "अबू ज़र! तुम अभी इस बात को छिपाए रखो और अपने वतन को चले जाओ, जब तुम्हें हमारे जुहूर की ख़बर मिल जाए तब आ जाना, हज़रत अबू ज़र रज़ि0 बोले बख़ुदा मैं तो इन दुशमनों में एलान करके जाऊँगा, अब अबू ज़र रज़ि0 कअ़बा की तरफ़ आए, कुरैश जमा थे, उन्होंने सबको सुनाकर बआवाज़े बुलंद कलिमए शहादत पढ़ा, कुरैश ने कहा इस बेदीन को मारो, लोगों ने मार डालने के लिये मुझे मारना शुरू किया, अब्बास रज़ि0 आ गए, उन्होंने मुझे झुक कर देखा कहा कम्बख़्तो! यह तो क़बीलए ग़िफ़ार का आदमी है, जहां तुम तिजारत को जाते और खजूरें लाते हो, लोग हट गए, अगले दिन उन्होंने फिर सबको सुनाकर कलिमा पढ़ा, फिर लोगों ने मारा और अब्बास रज़ि0 ने उनको छुड़ाया और यह अपने वतन को

चले आए।[1]

बैअते उक़्बा और इशाअते इस्लाम

11 हि0 नुबूव्वत के मौसमे हज का ज़िक्र है कि नबी सल्ल0 ने रात की तारीकी में शहरे मक्का से चंद मील परे मक़ामे उक़्बा पर लोगों को बातें करते सुना, उस आवाज़ पर खुदा का नबी सल्ल0 उन लोगों के पास पहुंचा, यह छः आदमी यसरिब से आए थे, उनके सामने नबी सल्ल0 ने खुदा की अज़मत व जलाल का बयान शुरू किया, उनकी मुहब्बत को खुदा के साथ गर्माया, बुतों से उनको नफ़रत दिलाई, नेकी व पाकीज़गी की तअ़लीम देकर गुनाहों और बुराइयों से मना फ़रमाया, कुर्आन की तिलावत फ़रमाकर उनके दिलों को रौशन फ़रमाया, यह लोग अगर्चे बुत परस्त थे लेकिन उन्होंने अपने शहर के यहूदियों को बारहा ज़िक्र करते सुना था कि एक नबी अंक़रीब ज़ाहिर होने वाला है.....इस तअ़लीम से वह उसी वक़्त ईमान ले आए और जब अपने वतन लौट कर गए तो दीने हक़ के सच्चे दाई बन गए।[2]

वह हर एक को खुशख़बरी सुनाते थे कि वह नबी सल्ल0 जिसका तमाम आलम को इंतिज़ार था आ गया.....हमारे कानों ने उसका कलाम सुना, हमारी आंखों ने उसका दीदार किया और उसने हमको उस ज़िंदा रहने वाले

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब मनाकिबुल अंसार, बाब इस्लाम अबी ज़र रज़ि0, सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइलुस्सहाबा रज़ि0, बाब मिन फ़ज़ाइले अबी ज़र रज़ि0

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-428, 429

Maktaba-e-Ashraf

खुदा से मिला दिया है कि दुन्या की ज़िंदगी और मौत उसके सामने हेच है।[1]

उन लोगों के बशारत ले जाने का नतीजा यह हुआ कि यसरिब के घर घर में आंहज़रत सल्ल0 का ज़िक्र होने लगा, और अगले साल 12 हि0 नुबूव्वत में यसरिब के बाशिंदे मक्का में हाज़िर हुए और नबी सल्ल0 के फ़ैज़ान से दौलते ईमान हासिल की।

उन लोगों ने जिन बातों पर नबी सल्ल0 से बैअ़त की थी वह यह हैं:

(1) हम खुदाए वाहिद की इबादत किया करेंगे और किसी को उसका शरीक नहीं बनाएंगे।

(2) हम चोरी और ज़िना नहीं करेंगे।

(3) हम अपनी औलाद (लड़कियों) को क़त्ल नहीं करेंगे।

(4) हम किसी पर झूटी तोहमत नहीं लगाएंगे और न किसी की चुग़ली किया करेंगे।

(5) हम नबी सल्ल0 की इताअत हर एक अच्छी बात में किया करेंगे।[2]

जब यह लोग वापस जाने लगे तो आंहज़रत सल्ल0 ने उनकी तअ़लीम के लिये मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि0 को साथ कर दिया, मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि0 अमीर घराने के लाडिले बेटे थे, जब घोड़े पर सवार होकर निकलते थे तो आगे पीछे गुलाम चला करते थे, बदन पर दो सौ रूपये से कम की

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-428, 429

(2) सहीहुल बुख़ारी किताबुल ईमान, बाब हद्दसना अबुल यमान, इब्ने हिशाम ने सीरत में सहीह सनद से पूरा वाक़िआ तफ़सील से बयान किया है। 1-431 ता 434

कभी पोशाक नहीं पहनते थे, मगर जब उनको इस्लाम के तुफ़ैल रूहानी ऐश हासिल हुआ तो इन जिस्मानी आराइशों को उन्होंने बिल्कुल छोड़ दिया था, जिन दिनों यह मदीना में दीन की मुनादी करते और इस्लाम की तबलीग़ किया करते थे उन दिनों उनके कंधे पर सिर्फ़ कम्बल का एक छोटा सा टुक्ड़ा होता था जिसे अगली तरफ़ से कांटों से अटका लिया करते थे।[1]

हज़रत मुसअ़ब रज़ि0 मदीना में अस्अद बिन ज़ुरारा के घर जाकर उतरे थे और उनको मदीना वाले अल मुक़्री (पढ़ाने वाला, उस्ताद) कहा करते थे, एक दिन मुसअ़ब रज़ि0 व अस्अद रज़ि0 और चंद मुसलमान बीरे मर्क़ पर जमा हुए, यह ग़ौर करने के लिये कि बनी अब्दुल अश्हल और बनी ज़फ़र में क्योंकर इस्लाम की मुनादी की जाए।

सअ़द बिन मआ़ज़ और उसैद बिन हुज़ैर इन क़बाइल के सरदार थे और अभी मुसलमान न हुए थे, उन्हें भी ख़बर हुई सअ़द बिन मआ़ज़ ने उसैद बिन हुज़ैर से कहा:

तुम किस ग़फ़लत में पड़े हो, देखो! यह दोनों हमारे घरों में आकर हमारे बेवक़ूफ़ों को बहकाने लगे, तुम जाओ उन्हें झिड़क दो और यह कह दो कि हमारे मुहल्लों में फिर कभी न आएं, मैं खुद ऐसा करता, मैं इसलिये ख़ामोश हूं कि अस्अद मेरी ख़ाला का बेटा है।

उसैद बिन हुज़ैर अपना हथियार लेकर रवाना हुआ,

(1) असदुल ग़ाबा 4-406 ज़िक्रे मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि0

अस्अद रज़ि0 ने मुसअ़ब रज़ि0 को कहा देखो यह क़बीले का सरदार आ रहा है ख़ुदा करे वह तेरी बात मान जाए, मुसअ़ब रज़ि0 ने कहा वह अगर आकर बैठ गया तो मैं उससे ज़रूर कलाम करूंगा, इतने में आ पहुंचा और खड़ा खड़ा गालियां देता रहा और यह भी कहा कि तुम हमारे अहमक़, नादान लोगों को फुस्लाने आए हो।

मुसअ़ब रज़ि0 ने कहा काश आप बैठ कर कुछ सुन लें अगर पसंद आए तो क़बूल फ़रमाएं, नापसंद हो तो उसे छोड़ जाएं, उसैद ने कहा ख़ैर क्या मुज़ाइक़ा है, मुसअ़ब रज़ि0 ने समझाया कि इस्लाम क्या है और फिर उसे कुर्आन मजीद भी पढ़कर सुनाया, उसैद ने सब कुछ चुपचाप सुना बिलआख़िर कहा, हां! यह तो बताओ कि जब कोई तुम्हारे दीन में दाख़िल होना चाहता है तो क्या करते हो?

उन्होंने कहा नहला कर पाक कपड़े पहनाकर कलिमए शहादत पढ़ा देते हैं और दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़वा देते हैं, उसैद उठा कपड़े धोए, कलिमए शहादत पढ़ा और नफ़्ल अदा की, फिर कहा मेरे पीछे एक और शख़्स है अगर वह तुम्हारा पैरू हो गया तो फिर कोई तुम्हारा मुख़ालिफ़ न रहेगा और मैं अभी जाकर उसे तुम्हारे पास भेजता हूं, उसैद यह कहकर चला गया, उधर सअ़द बिन मआज़ उसके इंतिज़ार में था, दूर से चेहरा देखते ही बोला, देखो उसैद का चेहरा वह नहीं जो जाते वक़्त था, जब उसैद आ बैठा तो सअ़द ने पूछा कि क्या हुआ? उसैद बोला मैंने उन्हें समझा

दिया है और वह कहते हैं कि हम तुम्हारी मंशा के ख़िलाफ़ न करेंगे, मगर वहां तो एक और हादसा पेश आया, बनू हारसा वहां आ गए थे और वह अस्अद बिन जुरारा को इसलिये क़त्ल करने पर आमादा हैं कि वह तेरा भाई है, यह सुनकर सअ़द बिन मआ़ज़ गुस्सा में भर गया और अपना हर्बा संभाल कर खड़ा हो गया, उसे डर था कि बनू हारसा उसके भाई को मार न डालें, उसने चलते वक़्त यह भी कहा कि उसैद! तुम कुछ भी काम न बना कर आए, सअ़द वहां पहुंचा, देखा कि मुसअ़ब रज़ि0 व अस्अद रज़ि0 दोनों बइत्मीनान बैठे हुए हैं, सअ़द ने समझा कि उसैद ने मुझे उनकी बातें सुनने के लिये भेजा है, यह ख़्याल आते ही उन्हें गालियां देने लगा और अस्अद को यह भी कहा कि अगर मेरे और तुम्हारे दर्मियान क़राबत न होती तो तुम्हारी क्या मजाल थी कि हमारे मुहल्ला में चले आते, अस्अद रज़ि0 ने मुसअ़ब रज़ि0 से कहा देखो यह बड़े सरदार हैं और अगर इनको समझा दो तो फिर कोई दो आदमी भी तुम्हारे मुख़ालिफ़ न रह जाएंगे, मुसअ़ब ने सअ़द से कहा आइये बैठ जाइये कोई बात करें, हमारी बात पसंद आए तो क़बूल फ़रमाइये वर्ना इंकार कर दीजिये, सअ़द हर्बा रखकर बैठ गए, हज़रत मुसअ़ब ने उनके सामने इस्लाम की हक़ीक़त बयान की और कुर्आन भी पढ़ कर सुनाया, आख़िर सअ़द ने वही सवाल किया जो उसैद ने किया था, अलग़र्ज़ सअ़द उठे और नहाये, कपड़े धोए, कलिमा पढ़ा, नफ़्ल अदा की और हथियार लेकर अपनी मजलिस में वापस आए, आते ही

अपने क़बीले के लोगों को पुकार कर कहा:

ऐ बनी अब्दुल अश्हल! तुम लोगों की मेरे बारे में क्या राए है? सबने कहा, तुम हमारे सरदार हो, तुम्हारी राए, तुम्हारी तलाश, बेहतर और अअ्ला होती है, हज़रत सअ़द बोले सुनो! ख़्वाह कोई मर्द हो या औरत मैं उससे बात करना हराम समझता हूं जब तक कि वह खुदा और रसूल पर ईमान न लाए।

इस कहने का असर यह हुआ कि बनी अब्दुल अश्हल में शाम तक कोई मर्द इस्लाम से ख़ाली न रहा और तमाम क़बीला एक दिन में मुसलमान हो गया।[1]

बैअ़ते उक़्बा सानिया

हज़रत मुसअ़ब रज़ि0 की तअ़लीम से इस्लाम का चर्चा इसी तरह तमाम अंसार के क़बीलों में फैल गया और इसका नतीजा यह हुआ कि अगले साल 13 हि0 नुबूव्वत में 73 मर्द और 2 औरतें यसरिब के क़ाफ़िला में मिलकर मक्का आए, उनको यसरिब के अह्ले ईमान ने इसलिये भेजा था कि रसूलुल्लाह सल्ल0 को अपने शहर में आने की दावत दें और नबी सल्ल0 से मंजूरी हासिल करें।

यह रास्त बाज़ों का गिरोह उसी मुतबर्रक मक़ाम पर जहां दो साल से इस शहरे यसरिब के मुशताक़ हाज़िर हुआ करते थे रात की तारीकी में पहुंच गया, और खुदा के बरगुज़ीदा रसूल भी अपने चचा अब्बास को साथ लिये हुए वहां जा पहुंचे।

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-435 ता 437

हज़रत अब्बास ने (जो अभी मुसलमान न हुए थे) उस वक़्त एक काम की बात कही, उन्होंने कहा लोगो! तुम्हें मअ़लूम है कि कुरैशे मक्का मुहम्मद के जानी दुशमन हैं अगर तुम उनसे कोई अहद व इक़रार करने लगो तो पहले समझ लेना कि यह नाज़ुक और मुशिकल काम है, मुहम्मद से अहद व पैमान करना सुर्ख़ व सियाह लड़ाइयों को दावत देना है, जो कुछ करो सोच समझकर करो, वर्ना बेहतर है कि कुछ भी न करो।

उन रास्तबाज़ों ने अब्बास को कुछ जवाब न दिया, हां रसूलुल्लाह सल्ल0 से अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर कुछ इर्शाद फरमाएं।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उनको कलामे इलाही पढ़ कर सुनाया जिसके सुनते ही वह ईमान व ईक़ान के नूर से भरपूर हो गए।

उन सब ने अ़र्ज़ की कि ख़ुदा के नबी सल्ल0 हमारे शहर चल बसें ताकि हमें पूरा पूरा फ़ैज़ हासिल हो सके।

नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः

1- क्या तुम दीने हक़ की इशाअत में मेरी पूरी पूरी मदद करोगे?

2- और जब मैं तुम्हारे शहर में जा बसूं क्या तुम मेरी और मेरे साथियों की हिमायत अपने अह्ल व अयाल के मानिंद करोगे?

ईमान वालों ने पूछा ऐसा करने का हमको मुआवज़ा

क्या मिलेगा?

नबी सल्ल0 ने फ़रमाया बहिश्त (जो नजात और खुशनूदी का महल है) ईमान वालों ने अ़र्ज़ किया ऐ खुदा के रसूल सल्ल0 यह तो हमारी तसल्ली फ़रमा दीजिये कि हुजूर सल्ल0 हमको कभी न छोड़ेंगे?

नबी सल्ल0 ने फ़रमाया नहीं! मेरा जीना, मेरा मरना तुम्हारे साथ होगा, इस आख़िरी फ़िक़रे को सुनना था कि आशिक़ाने सदाक़त अजब सुरूर व नशात के साथ जांनिसारी की बैअ़ते इस्लाम करने लगे, बराअ् बिन मअ़रूर रज़ि0 पहले बुजुर्ग हैं जिन्होंने इस शब सबसे पहले बैअ़त की थी।

एक शैतान ने पहाड़ की चोटी से यह नज़ारा देखा और चीख़ कर अह्ले मक्का को पुकार कर कहा लोगो! आओ देखो कि मुहम्मद और उसके फ़िर्क़े के लोग तुमसे लड़ाई के मशवरे कर रहे हैं।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया तुम इस आवाज़ की परवाह न करो, अब्बास बिन उबादा ने कहा अगर हुजूर की इजाज़त हो तो हम कल ही मक्का वालों को अपनी तलवार के जौहर दिखा दें, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया नहीं! मुझे जंग की इजाज़त नहीं, इसके बाद नबी सल्ल0 ने उनमें से बारह शख़्सों का इंतिख़ाब किया और उनका नाम नक़ीब रखा और यह फ़रमाया कि जिस तरह ईसा बिन मरयम अलै0 ने अपने लिये बारह शख़्सों को चुन लिया था उसी

तरह मैं तुम्हें इंतिख़ाब करता हूं, ताकि तुम अहले यसरिब में जाकर दीन की इशाअ़त करो, मक्का वालों में मैं खुद यह काम करूंगा।

उनके नाम यह हैं:–

क़बीला ख़ज़रज के 9-अस्अद बिन ज़ुरारा, राफ़ेअ़ बिन मालिक, उबादा बिन सामित (यह तीनों उक्बा ऊला में भी थे) सअ़द बिन रबीअ़, मुंज़िर बिन अ़म्र, अब्दुल्लाह बिन रवाहा, बराअ़ बिन मअ़रूर, अब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन हराम, सअ़द बिन उबादा।

क़बीलए औस के तीन - उसैद बिन हुज़ेर, सअ़द बिन ख़ैसमा, अबुल हैसम बिन तीहान।[1]

क़ुरैश को दिन निकलने के बाद कुछ भनक सी मअ़लूम हुई, वह अहले यसरिब की तलाश में निकले, लेकिन उनका क़ाफ़िला सुब्ह ही रवाना हो चुका था, क़ुरैश ने सअ़द बिन उबादा और मुंज़िर बिन अम्र को वहां पाया, हज़रत मुंज़िर रज़ि० तो निकल गए और उनके हाथ न आए, मगर सअ़द बिन उबादा रज़ि० को उन्होंने पकड़ लिया, उनकी सवारी के ऊंट का तंग खोल कर उसकी मशकें बांध दीं, मक्का में लाकर उन्हें मारते और उनके सर के लम्बे लम्बे बालों को खींचते थे, यह सअ़द बिन उबादा वही हैं जिनको नबी सल्ल० ने उन 12/अशख़ास में से एक नक़ीब ठहराया था, उनका अपना बयान है कि जब क़ुरैश उन्हें ज़द व कूब कर

(1) मुस्नद अहमद 3-322-339 मुस्तदरक हाकिम 2-624, 625, इमाम ज़हबी ने हाकिम की रिवायत को सही करार दिया है, तफ़सील के लिये मुलाहज़ा हो, सीरत इब्ने हिशाम 1-438 ता 448, नीज़ फ़तहुल बारी 7-219 ता 223

रहे थे तो एक सुर्ख़ व सफ़ेद शीरीं शमाइल शख़्स उन्हें अपनी तरफ़ आता हुआ नज़र आया, मैंने अपने दिल में कहा कि अगर इस क़ौम में किसी से मुझे भलाई हासिल हो सकती है तो वह यही होगा, जब वह मेरे पास आ गया तो उसने निहायत ज़ोर से मुंह पर तमांचा लगाया, उस वक़्त मुझे यक़ीन आ गया कि इनमें कोई भी ऐसा शख़्स नहीं जिससे ख़ैर की उम्मीद की जा सके, इतने में एक और शख़्स आया, उसने मेरे हाल पर तरस खाया और कहा क्या क़ुरैश के किसी भी शख़्स के साथ तुझे हक़्क़े हमसाइगी हासिल नहीं और किसी से भी तेरा अहद व पैमान नहीं? मैंने कहा हां! जुबैर बिन मुतइम और हारिस बिन हर्ब जो अब्दे मनाफ़ के पोते हैं वह तिजारत के लिये हमारे यहां जाया करते हैं, और मैंने बारहा उनकी हिफ़ाज़त की है, उसने कहा कि फिर उन्ही दोनों के नाम की दुहाई तुझे देनी और अपने तअ़ल्लुक़ात का इज़हार करना चाहिये, मैंने ऐसा ही किया फिर वही शख़्स उन दोनों के पास पहुंचा और उन्हें बताया कि ख़ज़रज का एक आदमी पिट रहा है और वह तुम्हरा नाम लेकर तुम्हें पुकार रहा है, उन दोनों ने पूछा वह कौन है उसने बताया कि सअ़द बिन उबादा, वह बोले हां, उसका हम पर एहसान भी है, उन्होंने आकर सअ़द बिन उबादा को छुड़ाया और यह साबित क़दम बुज़ुर्ग यसरिब को तशरीफ़ ले गए।[1]

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-449, 450 रहमतुल लिलआलमीन 1-81

हिज्रत करने की इजाज़त

उक़्बा सानिया की बैअ़त के बाद नबी सल्ल0 ने उन मुसलमानों को जो अभी मक्का से बाहर नहीं गए थे लेकिन जिन पर इतने ज़ुल्म व सितम होने लगे थे कि प्यारा वतन उनके लिये आग का पहाड़ बन गया, यसरिब चले जाने की इजाज़त फ़रमा दी, उन ईमान वालों को घर बार, ख़ेश व अक़ारिब, बाप, भाई, ज़न व फ़रज़ंद के छोड़ने का ज़रा ग़म न था, बल्कि खुशी यह थी कि यसरिब जाकर खुदाए वह्दहू ला शरीक की इबादत पूरी आज़ादी से कर सकेंगे।[1]

हिज्रत करने वालों और घर छोड़ने वालों को कुरैशे मक्का की सख़्त मुज़ाहमत का मुक़ाबला करना पड़ा।

हज़रत सुहैब रूमी रज़ि0 जब हिज्रत करके जाने लगे तो कुफ़्फ़ार ने उन्हें आ घेरा, कहा सुहैब! जब तू मक्का में आया था तो मुफ़्लिस व क़ल्लाश था, यहां ठहर कर तूने हज़ारों कमाए, आज यहां से जाता है और चाहता है सब माल व ज़र लेकर चला जाए, यह तो कभी नहीं होने का, हज़रत सुहैब रज़ि0 ने कहा, अच्छा अगर मैं अपना सारा माल व मताअ़ तुम्हें दे दूं तब तुम मुझे जाने दोगे? कुरैश बोले हां! हज़रत सुहैब रज़ि0 ने सारा माल उन्हं दे दिया और यसरिब को रवाना हो गए। नबी सल्ल0 ने यह क़िस्सा सुनकर फ़रमाया कि उस सौदे में सुहैब रज़ि0 ने नफ़ा कमाया।[2]

(1) ज़ादुल मआ़द 3-49 रहमतुल लिल आलमीन 1-82

(2) सीरत इब्ने हिशाम 1-477 दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 2-522

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 कहती हैं मेरे शौहर अबू सलमा रज़ि0 ने हिज्रत का इरादा किया, मुझे ऊंट पर चढ़ाया, मेरी गोद में मेरा बच्चा सलमा था, जब हम चल पड़े तो बनू मुग़ीरा ने आकर अबू सलमा रज़ि0 को घेर लिया, कहा, कि तू जा सकता है मगर हमारी लड़की नहीं ले जा सकता, अब बनू अब्दुल असद भी आ गए, उन्होंने अबू सलमा से कहा, तू जा सकता है मगर बच्चा को जो हमारे क़बीला का बच्चा है तू नहीं ले जा सकता, ग़र्ज़ उन्होंने अबू सलमा रज़ि0 से ऊंट की महार लेकर ऊंट बिठा दिया, बनू अब्दुल असद तो मां की गोद से बच्चा को छीन कर ले गए और बनू मुग़ीरा उम्मे सलमा को ले आए, अबू सलमा जो दीन के लिये हिज्रत करना फ़र्ज़ समझते थे ज़न व बच्चा के बग़ैर रवाना हो गए, उम्मे सलमा रज़ि0 शाम को उसी जगह जहां बच्चा और शौहर से जुदा की गई थीं पहुंच जातीं और घंटों रो धोकर वापस आ जातीं, एक साल इसी तरह रोते चिल्लाते गुज़र गया, आख़िर उनके चचेरे भाई को रहम आया और हर दो क़बाइल से कह सुन कर उम्मे सलमा को इजाज़त दिला दी कि अपने शौहर के पास चली जाएं, बच्चा भी उनको वापस दे दिया गया, उम्मे सलमा रज़ि0 एक ऊंट पर सवार होकर मदीना को तने तन्हा चल दीं, ऐसी मुश्किलात का सामना तक़रीबन हर एक सहाबी को करना पड़ा था।[1]

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-467, 468

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 का बयान है कि हज़रत अ़याश रज़ि0 बिन रबीआ़ और हज़रत हिशाम सहाबी भी उनके साथ मदीना चलने को तैयार हुए थे, हज़रत अ़याश रज़ि0 तो रवानगी के वक़्त जाए मुक़र्ररा पर पहुंच गए, मगर हिशाम रज़ि0 बिन आ़स की बाबत कुफ़्फ़ार को ख़बर लग गई तो उनको कुरैश ने कैद कर दिया, हज़रत अ़याश रज़ि0 मदीना जा पहुंचे कि अबू जह्ल मअ़ अपने बिरादर हारिस के मदीना पहुंचा, अ़याश रज़ि0 उनके चचेरे भाई थे और तीनों की मां एक थी, अबू जह्ल व हारिस ने कहा कि तुम्हारे बाद वालिदा की बुरी हालत हो रही है, उसने क़सम खा ली है कि अ़याश रज़ि0 का मुंह देखने तक न सर में कंघी करूंगी, न साया में बैठूंगी, इसलिये भाई तुम चलो और मां को तस्कीन दे कर आ जाना।

उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने कहा अ़याश! मुझे तो फ़रेब मअ़लूम होता है, तुम्हारी मां के सर में कोई जूं गई तो वह खुद ही कंघी कर लेगी और मक्का की धूप ने ज़रा ख़बर ली तो वह खुद ही साया में जा बैठेगी, मेरी राए तो यह है कि तुम को जाना नहीं चाहिये, अ़याश रज़ि0 बोले नहीं मैं वालिदा की क़सम पूरी करके वापस आ जाऊंगा।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने फ़रमायाः अच्छा अगर यही राए है तो सवारी के लिये मेरा नाक़ा ले जाओ, यह बहुत तेज़ रफ़्तार है, अगर रास्ता में ज़रा भी उनसे शुब्हा गुज़रे तो तुम इस नाक़ा पर बआसानी उनकी गिरफ़्त से बच

कर आ सकोगे।

हज़रत अ़याश रज़ि0 ने नाक़ा ले लिया, यह तीनों चल पड़े, एक रोज़ राह में (मक्का) के क़रीब अबू जह्ल ने कहा, भाई हमारा ऊंट तो नाक़ा के साथ चलता चलता रह गया, बेहतर है कि तुम मुझे अपने साथ सवार कर लो, अ़याश रज़ि0 बोले बेहतर है, जब अ़याश रज़ि0 ने नाक़ा बिठाया तो दोनों ने उन्हें पकड़ लिया, मशकें कस लीं और मक्का में इसी तरह ले कर दाख़िल हुए, यह दोनों बड़े फ़ख़्र से कहते थे कि देखो कि बेवक़ूफ़ों और अहमक़ों को इसी तरह सज़ा दिया करते हैं, अब अ़याश रज़ि0 को भी हिशाम बिन आ़स रज़ि0 के साथ क़ैद कर दिया गया, जब नबी सल्ल0 मदीना मुनव्वरा पहुंच गए तब हुज़ूर सल्ल0 की तमन्ना पूरी करने के लिये वलीद बिन मुग़ीरा मक्का आए और क़ैदख़ाने से दोनों को रातों रात निकाल कर ले गए।[1]

रसूलुल्लाह सल्ल0 के ख़िलाफ़ क़ुरैश की साज़िश और नाकामी और आप सल्ल0 की हिज्रते मदीना

क़ुरैश ने देखा कि अब मुसलमान मदीना में जाकर ताक़त पकड़ते जाते हैं और वहां इस्लाम फैलता जाता है, इस बिना पर उन्होंने दारुन्नदवा जो दारुश्शूरा था, में इजलासे आम किया, हर क़बीला के रुअसा शरीक थे, लोगों ने मुख़्तलिफ़ राएं पेश कीं, एक ने कहा "मुहम्मद सल्ल0 के हाथ पांव में ज़ंजीरें डालकर मकान में बंद कर दिया जाए,

(1) मुस्तदरक हाकिम 2-235, इमाम ज़हबी ने रिवायत की तस्हीह फ़रमाई है।

दूसरे ने कहा "जिला वतन कर देना काफी है" अबू जह्ल ने कहा कि हर क़बीले से एक एक शख़्स का इंतिख़ाब हो और पूरा मज्मा एक साथ मिलकर तलवारों से उनका ख़ातमा कर दे, इस सूरत में उनका खून तमाम क़बाइल में बट जाएगा, और आले हाशिम अकेले तमाम क़बाइल का मुक़ाबला न कर सकेंगे, इस अख़ीर राए पर इत्तिफ़ाक़े आम हो गया और झट पटे से आकर रसूल सल्ल0 के आस्तानए मुबारक का मुहासरा कर लिया गया, अह्ले अरब ज़नाना मकान के अंदर घुसना मअ्यूब समझते थे, इसलिये बाहर ठहरे रहे कि आंहज़रत सल्ल0 निकलें तो यह फ़र्ज़ अदा किया जाए।[1]

रसूलुल्लाह सल्ल0 से कुरैश को इस दर्जा अ़दावत थी, ताहम आप सल्ल0 की दियानत पर यह एतिमाद था कि जिस शख़्स को कुछ माल या अस्बाब अमानत रखना होता था आप सल्ल0 ही के पास लाकर रखता था, उस वक़्त भी बहुत सी अमानतें जमा थीं, आप सल्ल0 को कुरैश के इरादे की पहले से ख़बर हो चुकी थी, इस बिना पर हज़रत अली रज़ि0 को बुलाकर फ़रमाया कि "मुझको हिज्रत का हुक्म हो चुका है, मैं आज मदीना रवाना हां जाऊंगा[2] तुम मेरे पलंग पर मेरी चादर ओढ़ कर सो रहो, सुब्ह सब की अमानतें वापस दे आना, हज़रत अली रज़ि0 तो उन तलवारों

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-480

(2) हिज्रत का हुक्म आप सल्ल0 को अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ से हुआ था, जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में सराहत है। किताबुल मनाक़िब, बाबु हिज्रतिन्नबी सल्ल0 व अस्हाबिही इलल मदीना।

के साए में निहायत बेफ़िक्री से मज़े की नींद सो रहे और खुदा का रसूल (सल्ल0) खुदा की हिफ़ाज़त में बाहर निकला और उन दिल के अंधों की आंखों में ख़ाक डालता हुआ और सूरए "यासीन" पढ़ता हुआ साफ़ निकल गया, किसी ने नबी सल्ल0 को जाते न देखा,[1] यह वाक़िआ 27/सफ़र 13 हि0 नुबूव्वत सल्ल0 रोज़ पंजशंबा (12/सितम्बर 621 ई0) का है।[4]

हिज्रत से दो तीन दिन पहले रसूलुल्लाह सल्ल0 दोपहर के वक़्त हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के घर पर गए दस्तूर के मुताबिक़ दरवाज़ा पर दस्तक दी, इजाज़त के बाद घर में तशरीफ़ ले गए, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 से फ़रमाया कि "कुछ मशवरा करना है सब को हटा दो" बोले कि "यहां आप की हरम के सिवा और कोई नहीं है (उस वक़्त हज़रत आइशा रज़ि0 से शादी हो चुकी थी) आप सल्ल0 ने फ़रमाया "मुझको हिज्रत की इजाज़त हो गई है" हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने निहायत बेताबी से कहा "मेरा बाप आप पर फ़िदा हो, क्या मुझको भी हमराही का शर्फ़ होगा?" इर्शाद हुआ "हां" हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने हिज्रत के लिये चार महीने से दो ऊंटनियां बबूल की पत्तियां खिला खिलाकर तैयार की थीं, अ़र्ज़ की कि इनमें से एक आप पसंद फ़रमाएं, मोहसिने आलम को किसी का एहसान गवारा नहीं हो सकता था, इर्शाद हुआ "अच्छा, मगर बक़ीमत"

(1) मुस्नद अहमद 1-348, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ 5-389

(2) सीरतुन्नबी सल्ल0 1, 270, रहमतुल लिल आलमीन 1-85

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने मजबूरन क़बूल किया, हज़रत आइशा रज़ि0 उस वक़्त कम्सिन थीं, उनकी बड़ी बहन हज़रत अस्मा ने जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की मां थीं, सफ़र का सामान किया, दो तीन दिन का खाना नाश्ता दान में रखा, नताक (जिसको औरतें कमर से लपेटती हैं) फाड़ कर उससे नाश्ता दान का मुंह बांधा, यह वह शर्फ़ था जिसकी बिना पर आज तक उनको "ज़ातुन्निताकैन" के लक़ब से याद किया जाता है।(1)

आपने कअ़बा पर वदाई निगाह डाली और फ़रमाया "मक्का! तू मुझको तमाम दुन्या से ज़्यादा अज़ीज़ है लेकिन तेरे फ़रज़ंद मुझको रहने नहीं देते।(2) शब की तारीकी में दोनों बुज़ुर्गवार चल पड़े, मक्का से चार पांच मील के फ़ासिले पर कोहे सौर है उसकी चढ़ाई सर तोड़ है, रास्ता संगलाख़ था, नुकीले पत्थर नबी सल्ल0 के पाए नाज़ुक को ज़ख़्मी कर रहे थे और ठोकर लगने से भी तकलीफ़ होती थी, अबू बक्र रज़ि0 ने नबी सल्ल0 को अपने कंधे पर उठा लिया, आख़िर एक ग़ार तक पहुंचे, अबू बक्र रज़ि0 ने नबी सल्ल0 को बाहर ठहराया, खुद अंदर जाकर ग़ार को साफ़ किया, तन के कपड़े फाड़ कर ग़ार के रोज़न बंद किये और

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब मनाकिबुल अंसार, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल0 व अस्हाबिही इलल मदीना

(2) इमाम तिर्मिज़ी, इमाम दारमी और इब्ने माजा ने "واللّٰه إنك لخير أرض اللّٰه وأحب أرض اللّٰه الیّ ولولاانیّ أخرجت منك ماخرجت" के अलफ़ाज़ कहे हैं, और इमाम तिर्मिज़ी ने हदीस को हसन ग़रीब सहीह कहा है।

फिर अ़र्ज़ किया कि हुजूर (सल्ल0) भी तशरीफ़ ले आएं।[1]

सुब्ह हुई, हज़रत अली रज़ि0 हसबे मअ़मूल ख़्वाब से बेदार हुए, कुरैश ने क़रीब जाकर उन्हें पहचाना, पूछा मुहम्मद (सल्ल0) कहां हैं? हज़रत अली रज़ि0 ने जवाब दिया मुझे क्या ख़बर, क्या मेरा पहरा था? तुम लोगों ने उन्हें निकल जाने दिया और वह निकल गए, कुरैश गुस्सा और नदामत से अली रज़ि0 पर पिल पड़े, उनको मारा और ख़ानए कअ़बा तक पकड़ लाए और थोड़ी देर हब्स में रखा आख़िर छोड़ दिया।[2]

अस्मा बिंते अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 कहती हैं कि मेरे वालिद जाते हुए घर से नक़्द रूपया सब उठा ले गए, यह पांच छः हज़ार रूपये थे, वालिद के चले जाने के बाद मेरे दादा अबू कुहाफ़ा ने कहा कि बेटी मैं समझता हूं कि अबू बक्र (रज़ि0) ने तुमको दोहरी तकलीफ़ में डाल दिया, वह ख़ुद भी चले गए और नक़द व माल भी साथ ले गए, हज़रत अस्मा रज़ि0 बोलीं, दादा जान! वह हमारे लिये काफ़ी रूपया छोड़ गए हैं, अस्मा रज़ि0 ने एक पत्थर लिया और उस पर एक कपड़ा लपेटा और जिस घड़े में रूपया हुआ करता था वहां रख दिया और फिर दादा का हाथ पकड़ कर ले गईं, अबू कुहाफ़ा की आंखें जाती रही थीं, कहा दादाजान! हाथ लगा कर देखो कि माल मौजूद है, बूढ़े ने उसे टटोला और

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-6, दलाइलुन्नुबूव्वा 2-477, अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स0 221, रहमतुल लिल आलमीन 1-85

(2) तारीख़े तबरी 1-586

फिर कहा ख़ैर जब तुम्हारे पास सरमाया काफ़ी है तो अबू बक्र (रज़ि0) के जाने का चंदाँ ग़म नहीं, यह अबू बक्र रज़ि0 ने अच्छा किया और मैं समझता हूं कि तुम्हारे लिये काफ़ी इंतिज़ाम कर गए हैं, हज़रत अस्मा रज़ि0 कहती हैं कि यह तदबीर मैंने बूढ़े दादा साहब के इत्मीनाने क़ल्ब के लिये की थी, वर्ना वालिद बुज़ुर्गवार तो सब कुछ (नबी सल्ल0 की ख़िदमत के लिये) साथ ले गए थे।[1]

यह चांद और सूरज दोनों तीन रोज़ तक उसी ग़ार में रहे, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के बेटे अब्दुल्लाह रज़ि0 नौ ख़ेज़ जवान थे, शब को ग़ार में साथ सोते, सुब्ह मुंह अंधेरे शहर चले जाते और पता लगाते कि क़ुरैश क्या मशवरे कर रहे हैं? जो कुछ ख़बर मिलती, शाम को आकर आंहज़रत सल्ल0 से अ़र्ज़ करते, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 का गुलाम कुछ रात गए बकरियां चरा कर लाता, आप सल्ल0 और हज़रत अबू बक्र रज़ि0 उनका दूध पी लेते, तीन दिन तक सिर्फ़ यही ग़िज़ा थी।[2]

क़ुरैश आंहज़रत सल्ल0 की तलाश में निकले, ढूंढते ढूंढते ग़ार के दहाना तक आ गए, आहट पाकर हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ग़मज़दा हुए और आंहज़रत सल्ल0 से अ़र्ज़ की अब दुशमन इस क़दर करीब आ गए कि अगर अपने क़दम पर उनकी नज़र पड़ जाए तो हमको देख लेंगे, आप सल्ल0

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-488

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताब मनाकिबुल अंसार, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल0

ने फ़रमाया "لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا" घबराओ नहीं ख़ुदा हमारे साथ है।[1]

चौथे दिन आप ग़ार से निकले अब्दुल्लाह बिन उरैक़ित एक काफ़िर, जिस पर एतिबार था रहनुमाई के लिये उज्रत पर मुक़र्रर कर लिया गया था, वह आगे आगे रस्ता बताता जाता था, एक रात दिन बराबर चलते गए, दूसरे दिन दोपहर के वक़्त धूप सख़्त हो गई तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने चाहा कि रसूलुल्लाह सल्ल0 साया में आराम फ़रमा लें, चारों तरफ़ नज़र डाली, एक चट्टान के नीचे साया नज़र आया, सवारी से उतर कर ज़मीन झाड़ी, फिर अपनी चादर बिछा दी, आंहज़रत सल्ल0 ने आराम फ़रमाया तो तलाश में निकले कि कहीं खाने को कुछ मिल जाए तो लाएं, पास ही एक चरवाहा बकरियां चरा रहा था उससे कहा एक बकरी का थन गर्द व गुबार से साफ़ कर दे, फिर उसके हाथ साफ़ कराए और दूध दुहाया, बर्तन के मुंह पर कपड़ा लपेट दिया कि गर्द न पड़ने पाए, दूध लेकर आंहज़रत सल्ल0 के पास आए और थोड़ा सा पानी मिला कर पेश किया, आप सल्ल0 ने पीकर फ़रमाया कि "क्या चलने का वक़्त नहीं आया? आफ़ताब ढल चुका था, इसलिये आप वहां से रवाना हुए।[2]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी सल्ल0, बाब मनाक़िबुल मुहाजिरीन व फ़ज़लिहुम, सहीह मुस्लिम, फ़ज़ाइलुस सहाबा, फ़ज़ाइल अबू बक्र अस्सिद्दीक़ रज़ि०

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब फ़ी हदीसिल हिज्रह, सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुह्द वर्रक़ाइक़, बाब फ़ी हदीसिल हिज्रह

सुराक़ा का तआक़ुब

क़ुरैश ने इश्तिहार दे दिया था कि जो शख़्स मुहम्मद (सल्ल0) या अबू बक्र को गिरफ़्तार कर लाएगा उसको एक खून बहा के बराबर (यअ़नी सौ ऊंट) इन्आम दिया जाएगा, सुराक़ा ने सुना तो इन्आम की उम्मीद में निकला, ऐन उस हालत में कि आप सल्ल0 रवाना हो रहे थे, उसने आपको देख लिया और घोड़ा दौड़ा कर क़रीब आ गया, लेकिन घोड़े ने ठोकर खाई वह गिर पड़ा, तर्कश से फ़ाल के तीर निकाले कि हमला करना चाहिये या नहीं? जवाब में "नहीं" निकला, लेकिन सौ ऊंटों का गिरां बहा मुआवज़ा ऐसा न था कि तीर की बात मान ली जाती, दोबारा घोड़े पर सवार हुआ और आगे बढ़ा, नबी सल्ल0 क़ुर्आन मजीद की तिलावत करते हुए और मालिक से लौ लगाए हुए बढ़े चले जाते थे, अब की घोड़े के पांव घुटनों तक ज़मीन में धंस गए, घोड़े से उतर पड़ा और फिर फ़ाल देखी, अब भी वही जवाब था, लेकिन मुकर्रर तजर्बा ने उसकी हिम्मत पस्त कर दी और यक़ीन हो गया कि यह कुछ और आसार हैं, आंहज़रत सल्ल0 के पास आकर क़ुरैश के इश्तिहार का वाक़िआ सुनाया और अपना सामान आप सल्ल0 की ख़िदमत में पेश किया यह क़बूल हो, आप सल्ल0 ने मअ़ज़िरत की और सिर्फ़ यह ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि आप सल्ल0 का पता निशान छिपाया जाए, सुराक़ा ने दरख़्वास्त की कि मुझको अम्न की तहरीर लिख दीजिये, हज़रत अबू

बक्र रज़ि0 के गुलाम आमिर बिन फ़ुहैरा ने चमड़े के एक टुक्ड़े पर फ़रमाने अम्न लिख दिया।[1]

मुबारक शरफ़्स

ग़ार से निकल कर पहले ही दिन इस मुबारक क़ाफ़िला का गुज़र उम्मे मअ़बद के ख़ेमा पर हुआ, यह औरत क़ौमे खुज़ाआ से थीं, मुसाफ़िरों की ख़बरगीरी और उनकी तवाज़ोअ़ के लिये मशहूर थीं, सरे राह पानी पिलाया करती थीं और मुसाफ़िर वहां ठहर कर सुस्ताया करते थे, यहां पहुंच कर बुढ़िया से पूछा कि उसके पास खाने की कोई चीज़ है, वह बोलीं नहीं, अगर कोई शैय मौजूद होती तो दरयाफ़्त करने से पहले मैं खुद हाज़िर कर देती, नबी सल्ल0 ने ख़ेमा के गोशा में एक बकरी देखी, पूछा यह बकरी क्यों खड़ी है? उम्मे मअ़बद ने कहा कि कमज़ोर है, रेवड़ के साथ नहीं चल सकती, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "इजाज़त है कि हम उसे दूह लें? उम्मे मअ़बद ने कहा कि अगर हुज़ूर (सल्ल0) को दूध मअ़लूम होता है तो दूह लीजिये, नबी सल्ल0 ने बिस्मिल्लाह कह कर बकरी के थनों को हाथ लगाया, बर्तन मांगा वह ऐसा भर गया कि दूधर उछल कर ज़मीन पर भी गिर गया, यह दूध आंहज़रत सल्ल0 और हमराहियों ने पी लिया। दूसरी दफ़ा फिर बकरी को दूहा गया, बर्तन फिर भर गया, यह भी हमराहियों ने पिया, तीसरी दफ़ा.बर्तन फिर भर गया और वह उम्मे मअ़बद के लिये छोड़ दिया गया और आगे को रवाना हो गए।

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल0, सीरत इब्ने हिशाम 1-489, 490

कुछ देर बाद उम्मे मअ़बद के शौहर आए, ख़ेमा में दूध का बर्तन भरा देखकर हैरान हो गए कि यह कहां से आया, उम्मे मअ़बद ने कहा कि एक बाबरकत शख़्स यहां आए थे और यह दूध उनके क़ुदूम का नतीजा है, वह बोले कि यह तो वही साहिबे क़ुरैश मअ़लूम होते हैं जिनकी मुझे तलाश थी, अच्छा ज़रा उनकी तौसीफ़ तो करो, उम्मे मअ़बद बोलीं:

"मैंने एक शख़्स को देखा जिसकी नज़ाफ़त नुमायां, जिसका चेहरा ताबां, और जिसकी साख़्त में तनासुब था, पाकीज़ा रू और पसंदीदा ख़ू, न फ़रबही का ऐब, न लाग़री का नक़्स, न पेट निकला हुआ, न सर के बाल गिरे हुए, चेहरा वजीह, जिस्म तनोमंद और क़द मौजूं था, आंखें सुर्मगीं, फ़राख़ और सियाह थीं, पुतलियां काली थीं, ढेले बहुत सफ़ेद थे, पलकें घनी और लम्बी थीं, पुरवक़ार ख़ामोश दिलबस्तगी लिये हुए, कलाम शीरीं और वाज़ेह, न कम सुख़न, न बिस्यार गो, गुफ़्तगू इस अंदाज़ की जैसे पिरोए हुए मोती, दो नर्म व नाज़ुक शाख़ों के दर्मियान एक शाख़े ताज़ा जो देखने में ख़ुश मंज़र, रफ़ीक़ उनके गिर्द व पेश रहते हैं, जो कुछ वह फ़रमाते हैं वह सुनते हैं, जब हुक्म देते हैं तो तअ़मील के लिये झपटते हैं, मख़्दूम व मुताअ् न कोताह सुख़न न फ़ुजूल गो।"

यह सिफ़त सुनकर वह बोला कि यह तो ज़रूर साहिबे क़ुरैश हैं और मैं इन्से ज़रूर जा मिलूंगा।[1]

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-9,10, तबक़ाते इब्ने सअ़द 1-230, ज़ादुल मआ़द 3-56

नबी सल्ल0 यसरिब जा रहे थे कि अस्नाए राह में बुरैदा असलमी मिला, यह अपनी क़ौम का सरदार था, कुरैश ने आंहज़रत सल्ल0 की गिरफ़्तारी पर एक सौ ऊंट इन्आम मुशतहर किया था और बुरैदा इसी लालच में आंहज़रत की तलाश में निकला, जब नबी सल्ल0 के सामने हुआ और हुजूर सल्ल0 से हम कलाम होने का मौक़ा मिला तो बुरैदा सत्तर आदमियों समेत मुसलमान हो गया, अपनी पगड़ी उतार कर नेज़ा पर बांध ली जिस का सफ़ेद फरेरा हवा में लहराता और बशारत सुनाता कि अम्न का बादशाह, सुल्ह का हामी, दुन्या को अदालत और इंसाफ़ से भरपूर करने वाला तशरीफ़ ला रहा है,[1] रास्ता में नबी सल्ल0 को जुबैर बिन अल अव्वाम मिले, यह शाम से आ रहे थे और मुसलमानों का तिजारत पेशा गिरोह भी उनके साथ था, उन्होंने नबी सल्ल0 और अबू बक्र रज़ि0 के लिये सफ़ेद पार्चा जात पेश किये।[2]

नबीये अकरम सल्ल0 का मदीना में इस्तिक़बाल

तशरीफ़ आवरी की ख़बर मदीना में पहले पहुंच चुकी थी, तमाम शहर हमा चश्म इंतिज़ार था, मअ़सूम बच्चे फ़ख़्र और जोश में कहते फिरते थे कि पैग़म्बर सल्ल0 आ रहे हैं, लोग हर रोज़ तड़के से निकल निकल कर शहर के बाहर जमा होते और दोपहर तक इंतिज़ार करके हसरत के साथ वापस चले आते, एक दिन इंतिज़ार करके वापस जा चुके थे

(1) अस्सीरतुन्नबवीया लिज़्ज़हबी स0 228

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल0

कि एक यहूदी ने क़िला से देखा और क़राइन से पहचान कर पुकारा कहा "अह्ले अरब लो! तुम जिसका इंतिज़ार करते थे वह आ गया" तमाम शहर तकबीर की आवाज़ से गूंज उठा, अंसार हथियार सज धज कर बेताबाना घरों से निकल आए, अक्सर मुसलमान ऐसे थे जिन्होंने हुनूज़ दीदारे पुर अनवार से चश्मे ज़ाहिर बीं को रौशन किया था, उन्हें नबी सल्ल0 और उनके रफ़ीक़ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 की शनाख़्त में इश्तिबाह हो जाता था, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 इस ज़रूरत को ताड़ गए और सरे मुबारक पर साया करके खड़े हो गए, मदीना मुनव्वरा से तीन मील के फ़ासिले पर जो बालाई आबादी है उसको आलिया और कुबा कहते हैं, यहां अंसार के बहुत से ख़ानदान आबाद थे, इनमें सबसे ज़्यादा मुम्ताज़ अम्र बिन औफ़ का ख़ानदान था और कुल्सूम बिन अल हदम ख़ानदान के अफ़सर थे, आंहज़रत सल्ल0 यहां पहुंचे तो तमाम ख़ानदान ने जोशे मुसर्रत में "अल्लाहु अक्बर" का नअ़रा मारा, यह फ़ख़्र उनकी क़िस्मत में था कि मेज़बाने दो आलम ने उनकी मेहमानी क़बूल की, अंसार हर तरफ़ से जूक़ दर जूक़ आते और जोशे अक़ीदत के साथ सलाम अ़र्ज़ करते।[1]

मस्जिदे कुबा की तअ़मीर

यहां आप सल्ल0 का पहला काम मस्जिद तअ़मीर कराना था, कुल्सूम की एक उफ़्तादा ज़मीन थी जहां खजूरें

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब हिज्रतुन्नबी सल्ल0, सहीह मुस्लिम, किताबुज्जुहद वर्रक़ाइक़, बाब फी हदीसिल हिज्रह, तबक़ात इब्ने सअ़द 1-233

सुखाई जाती थीं, यहीं दस्ते मुबारक से मस्जिद की बुन्याद डाली, यही मस्जिद है जिसकी शान में कुर्आन मजीद में है:

لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ، فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ.

"वह मस्जिद जिसकी बुन्याद पहले ही दिन परहेज़गारी पर रखी गई है, वह इस बात की ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि तुम उसमें खड़े हो, उसमें ऐसे लोग हैं जिनको सफ़ाई बहुत पसंद है और खुदा साफ़ रहने वालों को दोस्त रखता है।

(सूरए तौबा-108)

मस्जिद की तअ़मीर में मज़दूरों के साथ आप सल्ल0 खुद भी काम करते थे, भारी भारी पत्थरों के उठाते वक़्त जिस्म मुबारक ख़म हो जाता था, अक़ीदतमंद आते और अ़र्ज़ करते कि "हमारे मां बाप आप सल्ल0 पर फ़िदा हों, आप छोड़ दें हम उठा लेंगे, आप सल्ल0 उनकी दरख़्वास्त क़बूल फ़रमाते, लेकिन फिर उसी वज़न का दूसरा पत्थर उठला लेते,[1] हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 बिन रवाहा शाइर थे वह भी मज़दूरों के साथ शरीक थे और जिस तरह मजूदर काम करते वक़्त थकन मिटाने को गाते जाते हैं, वह यह अशआर पढ़ते जाते थे-

أَفْلَحَ مَنْ يُّعَالِجُ الْمَسَاجِدَا وَيَقْرَأُ الْقُرْآنَ قَائِمًا وَّقَاعِدًا

وَلَا يَبِيْتُ اللَّيْلَ عَنْهُ رَاقِدًا

(1) वफ़ाउल वफ़ा बहवाला तबरानी कबीर 1-180

"वह कामियाब है जो मस्जिद दुरुस्त करता है और उठते बैठते कुर्आन पढ़ता है और रात को जागता रहता है।"

आंहज़रत सल्ल0 भी हर हर क़ाफ़िया के साथ आवाज़ मिलाते जाते थे।[1]

मदीना का पहला जुमुआ

12/रबीउल अव्वल 1 हि0 को जुमुआ़ का दिन था, नबी सल्ल0 कुबा से सवार होकर बनी सालिम के घरों तक पहुंचे कि जुमुआ़ का वक़्त हो गया, यहां सौ आदमियों के साथ जुमुआ़ पढ़ा, यह इस्लाम में पहला जुमुआ़ था,[2] आप सल्ल0 ने खुत्बा में फ़रमायाः

"हम्द व सताइश खुदा के लिये है, मैं उसकी की हम्द करता हूं, मदद व बख़्शिश और हिदायत उसी से चाहता हूं, मेरा ईमान उसी पर है, मैं उसकी नाफ़रमानी नहीं करता और नाफ़रमानी करने वालों से अदावत रखता हूं, मेरी शहादत यह है कि खुदा के सिवा इबादत के लाइक़ कोई भी नहीं, वह यक्ता है, उसका कोई शरीक नहीं, मुहम्मद (सल्ल0) उसका बंदा और रसूल है, उसी ने मुहम्मद को हिदायत, नूर और नसीहत के साथ ऐसे ज़माने में भेजा जबकि मुद्दतों से कोई रसूल दुन्या पर न आया, इल्म घट गया और गुमराही बढ़ गई थी, उसे आख़िरी ज़माना में क़्यामत के क़रीब और मौत की नज़दीकी के वक़्त भेजा गया

(1) वफ़ाउल वफ़ा 1-181 बहवाला इब्न अबी शैबा

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 2-500, ज़ादुल मआ़द 3-59

है, और जिसने उनका हुक्म माना वह भटक गया, दर्जा से गिर गया और सख़्त गुमराही में फंस गया है, मुसलमानो! मैं तुम्हें अल्लाह से तक़वा की वसीयत करता हूं, बेहतरीन वसीयत जो मुसलमान, मुसलमान को कर सकता है यह है कि उसे आख़िरत के लिये आमादा करे और अल्लाह से तक़्वा के लिये कहे, लोगो! जिन बातों से ख़ुदा ने तुम्हें परहेज़ करने को कहा है उनसे बचते रहो, इससे बढ़ कर न कोई नसीहत है और न इससे बढ़कर कोई ज़िक्र है, याद रखो! कि उमूरे आख़िरत के बारे में उस शख़्स के लिये जो ख़ुदा से डर कर काम कर रहा है, तक़्वा बेहतरीन मददगार साबित होगा और जब कोई शख़्स अपने और ख़ुदा के दर्मियान का मुआमला बातिन व ज़ाहिर में दुरुस्त कर लेगा और ऐसा करने में उसकी नीयत ख़ालिस हुई तो ऐसा करना उसके लिये दुन्या में ज़िक्र और मौत के बाद (जब इंसान को अअ्माल की ज़रूरत व क़दर मअ़लूम होगी) ज़ख़ीरा बन जाएगा, लेकिन अगर कोई ऐसा नहीं करता (तो उसका ज़िक्र इस आयत में है) कि इंसान पसंद करेगा कि उसके अअ्माल उससे दूर ही रखे जाएं, ख़ुदा तुम को अपनी ज़ात से डराता है और ख़ुदा तो अपने बंदों पर निहायत मेहरबान है, और जिस शख़्स ने ख़ुदा के हुक्म को सच जाना और उसके वादों को पूरा किया तो इसकी बाबत इर्शादि इलाही मौजूद है, "हमारे यहां

बात नहीं बदलती और हम अपने नाचीज़ बंदों पर जुल्म नहीं करते,'' मुसलमानो! अपने मौजूदा और आइंदा, ज़ाहिर और ख़ुफ़िया कामों में अल्लाह से तक़्वा को पेश नज़र रखो क्योंकि तक़्वा वालों की बद्दियां छोड़ दी जाती हैं और अज्र बढ़ा दिया जाता है, तक़्वा वाले वह हैं जो बहुत बड़ी मुराद को पहुंच जाएंगे, यह तक़्वा ही है जो अल्लाह की बेज़ारी, अज़ाब और गुस्सा को दूर कर देता है, यह तक़वा ही है जो चेहरा को दरख़्शां, परवदरिगार को खुशनूद और दर्जा को बुलंद करता है, मुसलमानो! हज़्ज़ उठाओ, मगर हुक़ूक़े इलाही में फ़रो गुज़ाश्त न करो, ख़ुदा ने इसी लिये तुमको अपनी किताब सिखाई और अपना रस्ता दिखाया है कि रास्त बाज़ों और काज़िबों को अलग अलग कर दिया जाए, लोगो! ख़ुदा ने तुम्हारे साथ उम्दा बरताव किया है, तुम भी लोगों के साथ ऐसा ही करो, और जो ख़ुदा के दुशमन हैं उन्हें दुशमन समझो, और अल्लाह के रस्ता में पूरी हिम्मत और तवज्जोह से कोशिश करो, उसी ने तुमको बरगुज़ीदा बनाया और तुम्हारा नाम मुसलमान रखा, ताकि हलाक होने वाला भी रौशन दलाइल पर हलाक हो और ज़िंदगी पाने वाला भी रौशन दलाइल पर ज़िंदगी पाए, और सब नेकियां अल्लाह की मदद से हैं, लोगो! अल्लाह का ज़िक्र करो और आइंदा ज़िंदगी के लिये अमल करो, क्योंकि जो शख़्स अपने और

Maktab-e-Ashraf

MaktabeAshraf

खुदा के दर्मियान मुआमला को दुरुस्त कर लेता है, अल्लाह तआला उसके और लोगों के दर्मियान मुआमला को दुरुस्त कर देता है, हां! खुदा बंदों पर हुक्म चलाता है और उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता, खुदा बंदों का मालिक है और बंदों को उस पर कुछ इख़्तियार नहीं, खुदा सब से बड़ा है और हमको नेकी करने की ताक़त उसी अज़मत वाले से मिलती है।[1]

मदीना में हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० के घर में क़याम

मदीना तय्यिबा में जब तशरीफ़ आवरी की ख़बर मअ़लूम हुई तो हर तरफ़ से लोग जोशे मुसर्रत से पेशक़दमी के लिये दौड़े, क़ुबा से मदीना तक दो रूया जां निसारों की सफ़ें थीं, राह में अंसार के ख़ानदान आते थे, हर क़बीला सामने आकर अ़र्ज़ करता "हुजूर (सल्ल0) यह घर है, यह माल है, यह जान है" आप सल्ल0 मिन्नत का इज़हार फ़रमाते और दुआए ख़ैर देते और फ़रमाते कि मेरी ऊंटनी का रास्ता छोड़ दो, उसको खुदा की तरफ़ से हुक्म है, इसी तरह मदीना के पांच बड़े बड़े क़बीलों के सरदार मिलते रहे और यही अ़र्ज़ करते रहे "हुजूर (सल्ल0) यह घर है, यह माल है, यह जान है" आप सल्ल0 यही फ़रमाते "इसका रास्ता छोड़ दो जहां अल्लाह का हुक्म होगा वहीं जाएगी।"[2]

(1) तारीख़े तबरी 2-807 (2) दलाइलुन्नबुव्वा 2-503, 504

शहर क़रीब आ गया तो जोश का यह आलम था कि बच्चियां छतों पर निकल आईं और गाने लगीं-

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَىٰ لِلّٰهِ دَاعِ

"चांद निकल आया है, कोहे वदाअ़ की घाटियों से, हम पर खुदा का शुक्र वाजिब है, जब तक दुआ मांगने वाले दुआ मांगें"(1)

बनू नज्जार की लड़कियां दफ़ बजा बजा कर गाती थीं-

نَحْنُ جَوَارٍ مِّنْ بَنِي النَّجَّارِ يَا حَبَّذَا مُحَمَّداً مِّنْ جَارِ

"हम ख़ानदाने नज्जार की लड़कियां हैं, मुहम्मद सल्ल0 क्या अच्छे हमसाया हैं"

आप सल्ल0 ने लड़कियों की तरफ़ ख़िताब करके फ़रमाया "क्या तुम मुझको चाहती हो? बोलीं हां! "फ़रमाया मैं भी तुम को चाहता हूं।"(2)

जहां अब मस्जिदे नबवी (सल्ल0) है उससे मुत्तसिल हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि0 का घर था, ऊंटनी वहां पहुंच कर ठहर गई, हज़रत अबू अय्यूब रज़ि0 का मकान दो मंज़िला था, उन्होंने बालाई मंज़िल पेश की, लेकिन आप सल्ल0 ने ज़ाइरीन की आसानी के लिये नीचे का हिस्सा पसंद फ़रमाया।(3)

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा 2-506, 507

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा 2-508, फ़तुल बारी 7-261

(3) मुस्तदरक हाकिम 3-460, इमाम ज़हबी ने हदीस को सही करार दिया है, सीरत इब्ने हिशाम, 1-498

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० दोनों वक़्त आप सल्ल० की ख़िदमत में खाना भेजते और आप सल्ल० जो छोड़ देते अबू अय्यूब रज़ि० और उनकी ज़ौजा के हिस्सा में आता, खाने में जहां हुज़ूर सल्ल० की उंगलियों का निशान पड़ा होता अबू अय्यूब रज़ि० तबर्रुकन वहीं उंगलियां डालते।(1)

एक दिन इत्तिफ़ाक़ से बालाई मंज़िल में पानी का बर्तन टूट गया, अंदेशा हुआ कि पानी बहकर नीचे जाए और आंहज़रत सल्ल० को तकलीफ़ हो, घर में ओढ़ने का सिर्फ़ एक लिहाफ़ था, हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० ने उसको डाल दिया कि पानी जज़्ब होकर रह जाए।(2)

मस्जिदे नबवी सल्ल० और मकानात की तअमीर

मदीना में क़याम के बाद सबसे पहला काम एक ख़ानए ख़ुदा की तअमीर थी, अब तक यह मअमूल था कि मवेशी ख़ाना में आप सल्ल० नमाज़ पढ़ा करते थे, दौलत कदा के क़रीब ख़ानदाने नज्जार की ज़मीन थी, जिसमें कुछ क़ब्रें थीं, कुछ खजूर के दरख़्त थे, आप सल्ल० ने उन लोगों को बुलाकर फ़रमाया "कि मैं यह ज़मीन बक़ीमत लेना चाहता हूं" वह बोले कि "हम क़ीमत लेंगे लेकिन आप से नहीं बल्कि ख़ुदा से" चूंकि अस्ल में वह ज़मीन दो यतीम बच्चों की थी, आप सल्ल० ने ख़ुद उन यतीमों को बुला भेजा, उन यतीमों ने भी अपनी काइनात नज़्र करना चाही लेकिन आप सल्ल० ने गवारा न किया, हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० ने

(1) सीरत इब्ने हिशाम 1-499
(2) मुस्तदरक हाकिम 3-360

क़ीमत अदा की, क़ब्रें उखड़वा कर ज़मीन हमवार कर दी गई और मस्जिद की तअ़मीर शुरू कर दी गई, शंहशाहे दो आलम (सल्ल0) फिर मज़दूरों के लिबास में था, सहाबए किराम रज़ि0 पत्थर उठा उठा कर लाते थे और रिज्ज़ पढ़ते जाते थे, आंहज़रत सल्ल0 भी उनके साथ आवाज़ मिलाते और यह पढ़तेः

اَللّٰهُمَّ لَا خَيْرَ اِلَّا خَيْرُ الْآخِرَة فَارْحَمِ الْأَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَة

"ऐ खुदा! कामियाबी सिर्फ़ आख़िरत की कामियाबी है, ऐ खुदा! मुहाजिरीन और अंसार पर रहम फ़रमा।"(1)

यह मस्जिद हर क़िस्म की तकल्लुफ़ात से बरी और इस्लाम की सादगी की तस्वीर थी, यअ़नी कच्ची ईटों की दीवारें, बर्गे खुर्मा का छप्पर, खजूर के सुतून थे, क़िब्ला बैतुल मक़्दिस की तरफ़ रखा गया,(2) लेकिन जब क़िब्ला बदल कर कअ़बा की तरफ़ हो गया तो शुमाली जानिब एक नया दरवाज़ा क़ाइम कर दिया गया, फ़र्श चूंकि बिल्कुल ख़ाम था बारिश में कीचड़ हो जाता था, एक दफ़ा सहाबए किराम रज़ि0 नमाज़ के लिये आए तो कंकरियां लेते आए और अपनी अपनी नशिस्त गाह पर बिछा लीं, आंहज़रत सल्ल0 ने पसंद फ़रमाया और संगरेज़ों का फ़र्श बनवा दिया, मस्जिद के एक सिरे पर एक मुसक़्क़फ़ चबूतरा था जो सुफ़्फ़ा कहलाता था, यह उन लोगों के लिये था जो इस्लाम

(1) सीरतुन्नबी 1-280, 281, बहवाला सहीहुल बुख़ारी व सुनन अबी दाऊद

(2) ज़ादुल मआ़द 3-63

लाते थे और धर बार नहीं रखते थे, मस्जिदे नबवी सल्ल0 जब तअ़मीर हो चुकी तो मस्जिद से मुत्तसिल ही आप सल्ल0 ने अज़्वाजे मुतह्हरात के लिये मकान बनवाए, उस वक़्त तक हज़रत सौदा रज़ि0 और हज़रत आइशा रज़ि0 अक़्दे निकाह में आ चुकी थीं, इसलिये दो ही हुज्रे बने, जब और अज़्वाज आती गईं तो और मकानात बनते गए, यह मकानात कच्ची ईंटों के थे, इनमें से पांच खजूर की टट्टियों से बने थे, जो हुज्रे ईटों के थे उनके अंदुरूनी हुज्रे भी टट्टियों के थे, तरतीब यह थी कि उम्मे सलमा रज़ि0, उम्मे हबीबा रज़ि0, ज़ैनब रज़ि0, जुवैरिया रज़ि0, मैमूना रज़ि0, ज़ैनब बिंते जह्श के मकानात शामी जानिब थे और हज़रत आइशा रज़ि0, सफ़ीया रज़ि0, सौदा रज़ि0 मुक़ाबिल जानिब थीं, यह मकानात मस्जिद से इस क़दर मुत्तसिल थे कि जब आप सल्ल0 मस्जिद में एतिकाफ़ में होते तो मस्जिद से सर निकाल देते और अज़्दवाजे मुतह्हरात घर में बैठे बैठे आप सल्ल0 के बाल धो देती थीं, यह मकानात छः छः सात सात हाथ चौड़े और दस हाथ लम्बे थे, छत इतनी ऊंची थी कि आदमी खड़ा होकर छत को छू लेता था और दरवाज़ों पर कम्बल का पर्दा पड़ा रहता था।[1]

रातों को चराग़ नहीं जलते थे।[2] आंहज़रत सल्ल0 के हमसाया में जो अंसार रहते थे उनमें सअ़द बिन उबादा

(1) सीरतुन्नबी सल्ल0, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 1-281, 282 बहवाला तबक़ाते इब्ने सअ़द नीज़ वफ़ाउल वफ़ा

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाबुस्सलात अलल फ़िराश

रज़ि0, सअ़द बिन मआ़ज़ रज़ि0, उमारा बिन हरम रज़ि0, और अबू अय्यूब रज़ि0 रईस और दौलतमंद थे, यह लोग आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में दूध भेज दिया करते थे और इसी पर आप सल्ल0 बसर किया करते थे, सअ़द बिन उबादा रज़ि0 ने इल्तिज़ाम कर लिया था कि रात के खाने पर हमेशा अपने यहां से एक बड़ा बादिया भेजा करते थे जिसमें कभी सालन, कभी दूध, कभी घी होता था,[1] हज़रत अनस रज़ि0 की मां उम्मे अनस ने अपनी जाइदाद आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में पेश की, आंहज़रत सल्ल0 ने क़बूल फ़रमाकर अपनी दाया उम्मे ऐमन को दे दिया और खुद फ़क्र व फ़ाक़ा इख़्तियार फ़रमाया।[2]

अज़ान की मशरुइयत

इस्लाम की तमाम इबादात का अस्ली मर्कज़ वह्दत व इज्तिमाअ़ है उस वक़्त तक किसी ख़ास अलामत के न होने की वजह से नमाज़े जमाअ़त का कोई इंतिज़ाम न था, लोग आगे पीछे आते और जो जिस वक़्त आता नमाज़ पढ़ लेता, आंहज़रत सल्ल0 को यह पसंद न था, आपने इरादा फ़रमाया कि लोग मुक़र्रर कर दिये जाएं जो वक़्त पर लोगों को घरों से बुला लाएं, लेकिन इसमें ज़हमत थी, सहाबा को बुलाकर मशवरा किया, लोगों ने मुख़्तलिफ़ राएं दीं, किसी ने कहा कि नमाज़ के वक़्त मस्जिद पर एक अलम खड़ा कर दिया जाए लोग देख कर आते जाएंगे, आप सल्ल0 ने यह तरीक़ा

(1) तबक़ातं इब्ने सअ़द, किताबुन्निसा, स0116

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हिबा, बाब फ़ज़्लुल मन्हीया

नापसंद फ़रमाया, ईसाइयों और यहूदियों के यहां एलाने नमाज़ के जो तरीक़े हैं वह भी आप सल्ल0 की ख़िदमत में अर्ज़ किये गए, लेकिन आप सल्ल0 ने हज़रत उमर रज़ि0 की राए पसंद की, और हज़रत बिलाल रज़ि0 को हुक्म दिया कि अज़ान दें,[1] इससे एक तरफ़ तो नमाज़ की इत्तिला आम हो जाती थी दूसरी तरफ़ दिन में पांच दफ़ा दावते इस्लाम का एलान हो जाता था।

मुहाजिरीन व अंसार में भाई चारा का मुआहदा

मुहाजिरीन मक्का मुअज़्ज़मा से बिल्कुल बेसर व सामान आए थे, गो उनमें दौलतमंद और ख़ुशहाल भी थे लेकिन काफ़िरों से छिप कर निकले थे, इसलिये कुछ साथ न ला सके थे, अगर्चे मुहाजिरीन के लिये अंसार का घर मेहमानख़ानए आम था ताहम एक मुस्तक़िल इंतिज़ाम की ज़रूरत थी, मुहाजिरीन नज़्र और ख़ैरात पर सब्र करना पसंद नहीं करते थे, वह दस्त व बाज़ू से काम लेने के ख़ूगर थे, ताहम चूंकि बिल्कुल ख़ाली हाथ थे और एक हब्बा भी पास न था इसलिये आंहज़रत सल्ल0 ने ख़्याल फ़रमाया कि अंसार और उनमें रिश्तए उख़ूव्वत क़ाइम कर दिया जाए, जब मस्जिदे नबवी सल्ल0 की तअ़मीर क़रीबे ख़त्म हुई तो आप सल्ल0 ने अंसार को तलब फ़रमाया, हज़रत अनस रज़ि0 बिन मालिक जो उस वक़्त दस साला थे, उनके मकान में लोग

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब बद्उल अज़ान, सहीह मुस्लिम और दूसरी सिहाह की किताबों में भी यह वाक़िआ मज़कूर है।

जमा हुए[1] मुहाजिरीन की तअ़दाद 45/ थी,आंहज़रत सल्ल0 ने अंसार की तरफ़ ख़िताब करके फ़रमाया "यह तुम्हारे भाई हैं" फिर मुहाजिरीन और अंसार में दो दो शख़्स को बुला कर फ़रमाते गए कि येह और तुम भाई भाई हो, और अब वह दरहक़ीक़त भाई भाई थे, अंसार ने मुहाजिरीन को साथ ले जाकर घर की एक एक चीज़ का जाइज़ा दे दिया कि आधा आप का और आधा हमारा है।[2] सअ़द रज़ि0 बिन अर्रबीअ् जो अब्दुर्रहमान रज़ि0 बिन औफ़ के भाई क़रार पाए थे उनकी दो बीवियां थीं, अब्दुर्रहमान से कहा कि एक को में तलाक़ दे देता हूं आप उससे निकाह कर लीजिये लेकिन उन्होंने एहसान मंदी के साथ इंकार किया।[3]

अंसार का माल व दौलत जो कुछ था नख़्लिस्तान थे, रूपये पैसे तो उस ज़माने में थे नहीं, उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल0 से दरख़्वास्त की कि यह बाग़ हमारे भाईयों में बराबर तक़सीम कर दिये जाएं, मुहाजिरीन तिजारत पेशा थे और इसी वजह से खेती के फ़न से बिल्कुल नाआशना थे, इस बिना पर आंहज़रत सल्ल0 ने उनकी तरफ़ से इंकार किया, अंसार ने कहा सब कारोबार हम खुद अंजाम दे लेंगे जो कुछ पैदावार होगी उसमें निसफ़ हिस्सा मुहाजिरीन का होगा, मुहाजिरीन ने उसको मंजूर किया,[4] यह रिशता बिल्कुल हक़ीक़ी रिशता बन गया, कोई अंसारी मरता तो

(1) ज़ादुल मआ़द 3-63

(2) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली 1-245, इब्ने हिशाम 1-504 ता 507

(3) व (4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब इख़ाउन्नबी सल्ल0

उसकी जाइदा और माल मुहाजिरीन को मिलता था और भाई बंद महरूम रहते, यह इस फ़रमाने इलाही की तअ़मील थी:

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ

"जो लोग ईमान लाए और हिज्रत की और खुदा की राह में माल व जान से जिहाद किया और वह लोग जिन्होंने इन लोगों को पनाह दी और उनकी मदद की, यह लोग बाहम भाई भाई हैं।"[1]

जंगे बदर के बाद जब मुहाजिरीन को इआनत की ज़रूरत न रही तो यह आयत उतरी:

وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ

"अरबाबे क़राबत एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं।[2] (अन्फ़ाल आयत 75)

दुन्या अंसार के इस ईसार पर हमेशा नाज़ करेगी लेकिन यह भी देखो कि मुहाजिरीन ने क्या किया? सअ़द रज़ि0 बिन अर्रबीअ् ने जब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 को एक एक चीज़ का जाइज़ा देकर निस्फ़ ले लेने की दरख़्वास्त की तो उन्होंने कहा "खुदा यह सब आपको मुबारक करे मुझको सिर्फ़ बाज़ार का रास्ता बता दीजिये" उन्होंने कैनक़ाअ् का जो मशहूर बाज़ार था जाकर रास्ता बता दिया, उन्होंन कुछ घी और कुछ पनीर ख़रीदा और शाम तक

(1) अन्फाल, आयत 72

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुत्तफसीर, बाब "وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ ـ الخ"

ख़रीद व फ़रोख़्त की, चंद रोज़ में इतना सरमाया हो गया कि शादी कर ली,[1] रफ़्ता रफ़्ता उनकी तिजारत को यह तरक़्क़ी हुई कि खुद उनका क़ौल है कि ख़ाक पर हाथ डालता हूं तो सोना बन जाती है, उनका अस्बाबे तिजारत सात सात सौ ऊंटों पर लदा करता था और जिस दिन मदीना में पहुंचता तमाम शहर में धूम मच जाती थी,[2] बअूज़ सहाबा रज़ि० ने दुकानें खोल लीं, हज़रत अबू बक्र रज़ि० का कारख़ाना मक़ामे सुख़ में था, जहां वह कपड़े की तिजारत करते थे[3] हज़रत उस्मान रज़ि० बनू क़ैन्क़ाअ़ के बाज़ार में खजूर की ख़रीद व फ़रोख़्त करते थे, हज़रत उमर रज़ि० भी तिजारत में मशगूल हो गए थे और शायद उनकी इस तिजारत की वुस्अत ईरान तक पहुंच गई थी,[4] और सहाबए किराम रज़ि० ने भी उसी क़िस्म की छोटी बड़ी तिजारत शुरू कर दी थी, सहीह बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० पर लोगों ने जब कसरते रिवायत की बिना पर एतिराज़ किया कि और सहाबा रज़िअल्लाहु अन्हुम तो इस क़दर रिवायत नहीं करते तो उन्होंने कहा "इसमें मेरा क्या क़ुसूर है, और लोग बाज़ार में तिजारत करते थे और मैं रात दिन बारगाहे नुबूव्वत में हाज़िर रहता था।[5]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब इख़ाउन्नबी सल्ल०

(2) असदुल ग़ाब्बा 3-314, 315

(3) तबक़ाते इब्ने सअ़द, 2-120

(4) मुस्नद अहमद में इन वाक़िआत का ज़िक्र मौजूद है।

(5) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब हफ़्ज़तुल इल्म।

फिर जब ख़ैबर फ़त्ह हुआ तो तमाम मुहाजिरीन ने यह नख़्लिस्तान अंसार को वापस कर दिये, सहीह मुस्लिम बाबुल जिहाद में है "आंहज़रत सल्ल0 जब जंगे ख़ैबर से फ़ारिग़ हुए और मदीना वापस हुए तो मुहाजिरीन ने अंसार के अतीये जो नख़्लिस्तान की सूरत में थे वापस कर दिये" मुहाजिरीन के लिये मकानात का यह इंतिज़ाम हुआ कि अंसार ने अपने घरों के आसपास जो उफ़्तादा ज़मीनें थीं उनको दे दीं और जिनके पास ज़मीन न थी उन्होंने अपने मस्कूना मकानात दे दिये,[1] अंसार ने मुहाजिरीन की मेहमानी और हमदर्दी का जो हक़ अदा किया, दुन्या की तारीख़ में उसकी नज़ीर नहीं मिल सकती, बहरैन जब फ़त्ह हुआ तो आंहज़रत सल्ल0 ने अंसार को बुला कर फ़रमाया कि "मैं इसको अंसार में तक़सीम कर देना चाहता हूं" उन्होंने अ़र्ज़ की कि "पहले हमारे भाई मुहाजिरों को इतनी ही ज़मीनें इनायत फ़रमा दीजिये तब हम लेना मंजूर करेंगे।"[2]

एक दफ़ा एक फ़ाक़ा ज़दा शख़्स आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में आया कि सख़्त भूका हूं, आप सल्ल0 ने घर में दरयाफ़्त फ़रमाया कि कुछ खाने को है? जवाब आया कि "सिर्फ़ पानी" आप सल्ल0 ने हाज़िरीन की तरफ़ मुख़ातब होकर फ़रमाया "कोई है? जो इनको आज मेहमान बनाए।"

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब रद्दुल मुहाजिरीन इलल अंसार मुनाकिहहुम

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबु मनाकिबिल अंसार, बाब क़ौलुन्नबी सल्ल0 "इस्बिरूनी हत्ता तलक़ूनी अलल हौवज़"

अबू तलहा रज़ि0 ने अ़र्ज़ की "मैं हाज़िर हूं" ग़र्ज़ वह अपने घर ले गए लेकिन वहां भी बरकत थी, बीवी ने कहा सिर्फ़ बच्चों का खाना मौजूद है, उन्होंने बीवी से कहा चराग़ बुझा दो, और वही खाना मेहमान के सामने लाकर रख दो, तीनों साथ खाने पर बैठे, मियां बीवी भूके बैठे रहे और इस तरह हाथ चलाते रहे कि गोया खा रहे हैं इसी वाक़िआ के बारे में यह आयत उतरी है:

وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ

"और गो उनको तंगी हो, ताहम अपने ऊपर दूसरों को तर्जीह देते हैं।"(1)

सुफ़्फ़ए नबवी सल्ल0

एक साइबान था जो मस्जिदे नबवी सल्ल0 के किनारे पर मस्जिद से मिला हुआ तैयार किया गया था,(2) सहाबए किराम रज़ि0 में से अक्सर तो मशाग़िले दीनी के साथ हर क़िस्म के कारोबार यअ़नी तिजारत या ज़राअ़त भी करते थे लेकिन चंद लोगों ने अपनी ज़िंदगी सिर्फ़ इबादत और आंहज़रत सल्ल0 की तरबियत पज़ीरी पर नज़्र कर दी थी, इन लोगों के बाल बच्चे न थे, और जब शादी कर लेते थे तो इस हल्क़ा से निकल आते थे, उनमें एक टोली दिन को जंगल से लकड़ियां चुन लाती और बेच कर अपने भाईयों के लिये कुछ खाना मुहय्या करती, यह लोग दिन में बारगाहे

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब क़ौलुल्लाह अज़्ज़ व जल्ल "وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ" फ़तहुल बारी 7-119

(2) वफ़ाउल वफ़ा 1-321

नुबूव्वत में हाज़िर रहते और हदीसें सुनते और रात को उसी चबूतरा (सुफ़्फ़ा) पर पड़ रहते।[1]

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 भी उन्ही लोगों में थे उनमें से किसी के पास चादर और तहमद दोनों चीज़ें साथ मुहय्या न हो सकीं, चादर को गले से इस तरह बांध लेते कि रानों तक लटक आती[2] अक्सर अंसार खजूर की फली हुई शाख़ें तोड़ कर लाते और छत में लगा देते, खजूरें जो टपक टपक कर गिरतीं यह उठाकर खा लेते, कभी दो दो दिन खाने को नहीं मिलता, अक्सर ऐसा होता कि रसूलुल्लाह सल्ल0 मस्जिद में तशरीफ़ लाते और नमाज़ पढ़ाते, यह लोग आकर नमाज़ में शरीक होते लेकिन भूक और ज़ोअ्फ़ से ऐन नमाज़ की हालत में गिर पड़ते, बाहर के लोग आते और उनको देखते तो समझते कि दीवाने हैं[3] आंहज़रत सल्ल0 के पास जब कहीं से सदक़ा का खाना आता तो मुसल्लम उनके पास भेज देते, और जब दावत का खाना आता तो उनको बुला लेते और उनके साथ बैठ कर खाते[4] अक्सर ऐसा होता कि रातों को आंहज़रत सल्ल0 उनको मुहाजिरीन और अंसार पर तक़सीम कर देते यअ़नी अपने मक़्दूर के मुवाफ़िक़ हर शख़्स एक एक, दो दो को अपने साथ ले जाए और उनको खाना खिलाए[5] हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ि0 निहायत फ़य्याज़ और दौलतमंद थे, वह कभी अस्सी अस्सी मेहमानों को

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारह, बाब सुबूतुल जन्ना लिश्शहीद (2) सहीहुल बुख़ारी 1-114, हिलयतुल औलिया 1-341 (3) सुनन तिर्मिज़ी, अबवाबुज़्ज़ोह्द मा जाआ फ़ी बेअ्सति असहाबिन्नबी सल्ल0 (4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुर्रकाइक, बाब कैफ़ा कान ऐशुन्नबी सल्ल0 व अस्हाबहु (5) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मवाक़ीत, बाब मअ़ज़्ज़ैफ़ वल अह्ल, अस्सह्र

लेकर जाते, आंहज़रत सल्ल0 उन लोगों का इस क़दर ख़्याल रखते थे कि जब एक दफ़ा आंहज़रत सल्ल0 से हज़रत फ़ातिमा ज़ुहरा रज़ि0 ने दरख़्वास्त की कि मेरे हाथों में चक्की पीसते पीसते नील पड़ गए हैं, मुझको एक कनीज़ इनायत हो, तो फ़रमाया यह नहीं हो सकता कि तुम को दूं और सुफ़्फ़ा वाले भूके मरें।[1] रातों को उमूमन यह लोग इबादत करते और कुर्आन मजीद पढ़ा करते, उनके लिये एक मुअल्लिम मुक़र्रर था उसके पास जाकर पढ़ते इसी बिना पर उनमें से अक्सर क़ारी कहलाते थे, दावते इस्लाम के लिये कहीं भेजना होता तो यह लोग भेजे जातो थे, ग़ज़वए मऊना में इन्ही में से सत्तर आदमी इस्लाम सिखाने के लिये भेजे गए थे।[2]

ग़ज़वए बद्र

कुरैश ने हिज्रत के साथ ही मदीना पर हमला की तैयारियां शुरू कर दी थीं, अब्दुल्लाह बिन उबैय को उन्होंने ख़त लिख भेजा था कि या मुहम्मद (सल्ल0) को क़त्ल कर दो, या हम आकर तुम्हारा भी फ़ैसला कर देते हैं।[3] कुरैश की छोटी छोटी टुकड़ियां मदीना की तरफ़ गश्त लगाती रहती थीं, कुर्ज़ फ़ेहरी मदीना की चरागाहों तक आकर ग़ारतगरी करता था, हमला के लिये सबसे ज़रूरी चीज़

(1) सुनन बैहक़ी 9-304, मुस्नद अहमद 1-79, 106

(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारा, बाब सुबूतुल जन्ना लिश्शहीद, सही बुख़ारी में भी इसका ज़िक्र है।

(3) सुनन अबी दाऊद 2-67, बाब ख़बरुन्नज़ीर